CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीः

वीर बाला

अथवा

अपूर्व नारी रत्न

(अत्युत्तम उपन्यास)

कुंवर प्रतिपाल सिंह

लिखित

अपितु त्वयाद्य न समग्रजितः पृथिताग्रणीर्मम
पतिर्यदहम्। वपुरर्द्धमस्य न जिता मति-
मन्नपि मां विजित्य कुरु शिष्यमिमम्॥

(मण्डन सहधर्मिणी — भारती)

All rights reserved.

प्रथम बार १००० | इलाहाबाद यूनियन प्रेस | मूल्य प्रति पुस्तक ।।।)

-पुस्तक मिलने का पता-

कुंवर परबत सिंह मटीरंज, इलाहाबाद

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका ।

"लक्ष्मी" पत्र के सम्पादक, छत्रपुर निवासी बाबू भगवान दीन सेकन्ड मास्टर मेरे विद्या गुरु हैं; यों तो आप कई एक भाषाओं के पंडित हैं, पर इन सब की अपेक्षा निज मातृभाषा "हिन्दी" से आप को विशेष रुचि है, आप हिन्दी के केवल सुलेखक अथवा सुकवि ही नहीं हैं वरन आप में यह भी एक अपूर्व गुण है कि आप सुलेखकों व सुकवियों के बनाने वाले भी हैं। आप का कथन-कथन ही नहीं वरन प्रतिज्ञा-है कि "हम दस वर्ष के अन्दर बुन्देलखंड ऐसे पश्चात्पद प्रान्त में भी अधिक नहीं तो एक दर्जन सुलेखक अवश्य तैयार कर देंगे", और पांच वर्ष के भीतर ही भीतर आप की यह सद्प्रतिज्ञा यहां तक फलीभूत हुई है, कि छत्रपुर तथा उसके निकटवर्ती स्थानों में कितने ही सज्जन सुलेखक नहीं तो लेखक अवश्यमेव हो गये हैं। मुझ अल्प बुद्धि को भी इन्हीं उदार महानुभाव ने अपना कर साहित्य सम्बंधी शिक्षा का कृपा भाजन बनाया और साहित्य क्षेत्र में अवतीर्ण होने के लिये आग्रहीत व उत्साहित किया है। अस्तु, गुरु आज्ञा शिरोधार्य्य कर मैंने भी कमर कसी और विचार करने लगा कि सुविस्तृत साहित्य क्षेत्र के किस कोने में मैं प्रथम सुगमता पूर्वक

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काम कर सक्ता हूं। आरंभ में काव्य मुझे कठिन दीख पड़ा, धर्म्म विषयक लेखों के लिये मैंने अपने को तैयार न पाया, शिक्षाप्रद गंभीर निबन्धों के लिये मेरी अपरिपक्व और अप्रौढ़ लेखनी में अभी प्रभाव कहां है, अतः श्री गणेश करने के लिये उपन्यास ही का परिष्कृत खलियान सरल, स्वच्छ व निज मस्तिष्कानुकूल बोध कर उसी में कूद पड़ा॥

समाज के वर्त्तमान् नेता व सभ्यता के तत्व वेत्ताओं का यह निर्धारित मत है कि "पुरुष समाज की अपेक्षा भारत का अबला समाज बहुत पीछे है और जब तक स्त्री पुरुष के समाज रूपी दोनों पल्ले बराबर न हो जांय भारत का उद्धार होना दुष्कर है"। बस इसी सिद्धांत को मनोनीत करते हुये मैंने यह "बीर बाला" नामक उपन्यास स्त्री समाज के लिये आदर्श स्वरूप रचा है और आशा करता हूं कि जैसे एक तुच्छातितुच्छ जल बिन्दु प्रशान्त महासागर में गिरते समय नहीं मालूम होता कि उस अपार जल राशि में उसने क्या वृद्धि की पर प्रकृति पक्ष में वह कुछ न कुछ वृद्धि अवश्य करता है, उसी भांति सिद्धहस्त सुविद्वानों के अगणित अपूर्व उपन्यास होते हुये भी मेरा यह छोटा उपन्यास, उपन्यास प्रेमियों के हृदय पर ज्ञान व अज्ञान रूप से कुछ न कुछ प्रभाव अवश्यमेव डालेगा॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर हां, इस के साथ २ यह भी सूचना देता हूं कि "बीर बाला" को हाथ में लेते ही आप बहुत ऊंची आशायें न कर बैठिये, कारण कि यह मेरा पहिला ही प्रयत्न है, और यह पहिला ही अवसर है कि मैं पुस्तक द्वारा अपने बिचारों व हृदयस्थ भावों को "पठिलक" के समक्ष रखता हूं। इस बिषय में मेरी स्थिति कसरत करने वाले ठीक उन बच्चों के समान है जो कि सरासर देखते जाते हैं कि "अखाड़े में बड़े २ जोड़ों की ज़ोर आजमाई हो रही है" तिसपर भी अपनी बालकीय उमंग में लंगोट कस दो चार दंड बैठक लगा उसी अखाड़े के एक कोने में उछलने कूदने व कुलाचें लगाने लगते हैं; संभव है कि सस्मत दर्शक समूह को इनकी उछल कूद में मज़ा न आता हो, पर उन दर्शकों में दो चार हृदयवान् वात्सल्य प्रिय दर्शक ऐसे भी होते हैं जिनको इनकी पेंचहीन पकड़धकड़ व उछल कूदही अपार आनंददायी होती है। पाठक! क्या मैं आप को ऐसाही हृदयवान् व वात्सल्य प्रिय पाठक समझने में भूल करता हूं?

प्रायः पुस्तकों की भूमिका में धन्यबाद देने की एक प्रथा सी चल गई है परन्तु मैं केवल इसी प्रथापालन हेतु अपने अन्तरंग मित्र बाबू चतुरभुज सहाय जी

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्म्मा, राज्य छत्रपुर, को धन्यबाद नहीं देता हूं वरन यह धन्यबाद मेरे हृदय के अंतरान्तर भाग से आपही आप निकला पड़ता है, कारण कि उपरोक्त सद्व्यक्ति ने अपना अमूल्य समय व्यय करके इस "बीर बाला" का संशोधन ही नहीं वरन परिशोधन किया है और अपनी मैत्रिक कृपा का अचिंतितपूर्व परिचय दिया है ॥

मेरे हृदय को सन्तोष न होगा यदि मैं अपने परम मित्र बाबू मनोहर लाल जी बी० ए० को धन्यबाद देना भूल जाऊं क्यों कि "बीर बाला" की रचना में आप ने भी समय समय पर अपनी सुसम्मति दी है ॥

प्रयाग
१४ जुलाई, १९०७

कुंवर प्रतिपाल सिंह,
पहरा ।

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

❀ बीरबाला ❀

अथवा

अपूर्व नारी रत्न

(उपन्यास)

❀ प्रथम परिच्छेद ❀

॥ भयङ्कर समाचार ॥

"कौन है ?" किसी अपरिचित पुरुष को अपनी ओर आते देख, एक बिशाल महल के द्वार पर टहलते हुये संत्री ने अपनी चाल रोक कर्कश स्वर में यह आवाज़ दी। लगभग एक पहर रात गई है, शरद की चांदनी अपनी सम्पूर्ण कलाओं से जगत् को प्रसन्न कर रही है, परन्तु कहीं २ दो एक बादल के टुकड़े उपद्रवियों की नाईं इस सुख मय दृष्य में बाधा देने के अभिप्राय से इधर उधर भागते फिरते हैं। यद्यपि नगर में अभी पूर्ण सन्नाटा नहीं हुवा और बहुधा मनुष्य इधर से उधर जाते हुये दिखाई देते हैं, तथापि राजाज्ञानुसार महल के पास से गुज़रने वालों पर महल रक्षकों की आवाज़ें पड़ने लगी हैं जैसा कि द्वार-पाल की कार्य्यवाही से ऊपर प्रगट हो चुका है॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वारपाल का उपरोक्त प्रश्न सुनते ही एक व्यक्ति उसके निकट पहुंच गया और बोला "मेरा नाम रामनाथ है"

द्वारपाल--(कड़ी आवाज़ से) कौन रामनाथ ? मैं तुम को नहीं पहिचानता, तुम्हारा मकान कहां है और तुम यहां आये किस नियत से हो ?

रामनाथ--कुमार जी के लिये बीरपुर से मैं एक पत्र लाया हूं, और एक ऐसा ही आवश्यकीय काम है कि ऐसे समय में यहां आना पड़ा; अस्तु, आप इसी समय मेरे आने की सूचना कुमार को दीजिये ॥

यह सुनते ही द्वारपाल ने बगल की दीवार में लगा हुआ लोहे का एक मुट्ठा घुमाया, जिस से तत्काल एक युवा द्वार खोल अन्दर से आ गया, और रामनाथ से मिल तथा उसका अभीष्ट समझ तुरन्त ही उसको अपने साथ भीतर ले गया। अपने नवीन साथी के संग थोड़ी दूर चलने पर एक कमरे में पहुंच रामनाथ क्या देखता है कि उस कमरे की दीवारों पर अतीव मनोहर चित्रकारी की हुई है; पूर्व की दीवार पर कौरवों पांडवों के जनम से लेकर पांडवों के हिम पर्वत गमन तक, बाल क्रीड़ा, द्यूत क्रीड़ा, द्रोपदी स्वयम्बर, यज्ञ, बनवास, युद्ध आदि

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महाभारत की मुख्य २ घटनाओं को चित्रित कर प्रत्यक्षवत् कर दिखाया है; उसी के सामने पश्चिमी दीवार पर रामायण के मुख्य २ दृष्य दिखाये गये हैं; उत्तर की ओर दीवार पर अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्र सुसज्जित करके टांगे गये हैं; और दक्षिण की दीवार ऋषि, मुनि, प्राचीन व नवीन महात्माओं व विद्वानों की पाषाण प्रतिमाओं से अपनी अपूर्व शोभा दर्शा रही है। फ़र्श पर एक स्वच्छ कोमल रूईदार गद्दा, जिस पर अत्यन्त परिष्कृत रंग बिरंगे गलीचे यथा स्थान बिछे हैं, बिछा है। कमरे की दक्षिण ओर स्फटिक की एक सुन्दर मेज़, जिस पर सुगंधित पुष्पों का एक बड़ा गुलदस्ता अपनी महक फैला रहा है, बिछी है; उसके इर्द गिर्द मख़मली गद्दी चढ़ीं गंगा जमनी काम की चार कुर्सियां रक्खीं हैं जो बहुत ही भली मालूम देतीं हैं; उत्तर की ओर ठीक बीचों बीच, रेशमी आवरण चढ़ा हुवा, सुनहले पावों का एक अत्यंत सुन्दर मशकद्दोही पलंग लगा है; पलंग पर एक युवक, जिनका सुन्दर मुख और प्रशस्त ललाट उनके गौरव को भली भांति प्रगट कर रहे हैं, लेटे हैं। पलंग से कुछ हट कर, किन्तु समीप ही, एक गोल मेज़ जिस पर हरी मख़मल का आवरण अपनी निराली छटा दिखा रहा है, रखी है; और उसके तीन तरफ़ तीन कुर्सियां बिछीं हैं, जिन में से

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो पर तो दो पुरुष बैठे हैं, एक खाली है ॥

इन दोनों के सहित युवक के हाथ में भी ताश (Playing Card) की गड्डियां हैं, जिस से अनुमान होता है कि अभी यह मंडली इसी में अपना जी बहला रही थी ॥

छत में कांच के पांच झाड़, जिन में हज़ार २ बत्ती से कम नहीं हैं, लटकते हुये यहां की शोभा को और भी अधिक बढ़ा रहे हैं, यद्यपि इन पांचों में से केवल बीच वाले झाड़ की बीस ही बत्तियां प्रज्वलित हैं तथापि यहां की सब सामग्री स्पष्ट दिखायी दे रही है; इससे आप समझ सक्ते हैं कि जब पाचों झाड़ों की पांच हज़ार बत्तियों पर आग पड़ती होगी तो कितनी तेज़ और बिकट रोशनी वहां होती होगी। अस्तु;

यह सब सामग्री देखने से साफ़ जान पड़ता है कि यहां बीरों, महात्माओं तथा विद्वानों का बड़ा मान है, न कि रंडी भड़ुओं का; यहां शस्त्रों ने स्थान पाया है न कि पिशवाजों ने और यहां स्वातंत्र्य तथा आत्म गौरव की पूर्ण स्थिति है, न कि दासत्व अथवा स्वार्थ की ॥

पाठक! आप बीर, महात्माओं का नाम सुन चौंक तो नहीं गये? अथवा इस कमरे में शस्त्र देख कुछ भय-

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भीत तो नहीं हुये ? यदि ऐसाही हो तो इसमें आप का क्या दोष है, यह तो समय का प्रभाव है। हमें भी आप के जब जाने का भय है इसलिये इस पचड़े को यहीं छोड़ आगे बढ़ते हैं ॥

कमरे में बैठकर ताश खेलने वाले तीनों व्यक्ति उत्सुक लोचनों से द्वार की ओर देख रहे हैं कि देखें इस समय कौन नवीन समाचार मिलता है ॥

पहरेवाले सिपाही के बुलाने पर जो युवा बाहर गया था उसका नाम ब्रजकिशोर है। अतएव उसी के साथ रामनाथ ने कमरे में प्रवेश कर अति शीघ्र कमरे की उपरोक्त सजावट निहार पलंग पर लेटे हुये युवक को सादर झुक कर प्रणाम किया और संकेत पाकर वहीं फ़र्श पर बैठ गया। मेज़ के पास जो तीसरी कुर्सी खाली पड़ी थी उस पर बैठकर ब्रजकिशोर ने कहा, "यह बीर-पुराधीश महाराज रुद्र प्रताप सिंह जी के पत्रवाहक हैं। उन्हीं के कुमार एवं आप के मित्र कुमार बलबीर सिंह का पत्र आप के नाम लाये हैं। नाम इनका रामनाथ है"। इतना कह उसने वह पत्र रामनाथ से लेकर युवक के पास पलंग पर रख दिया। यह सुन और अपने मित्र का पत्र देख युवक को अतीव हर्ष प्राप्त हुआ इस हेतु बड़े चाव

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से उन्हों ने रामनाथ से पूंछा "कहो हमारे मित्र कुशल से तो हैं न ? वह तो हमारी ओर से कुछ ऐसे बेसुध से हो रहे हैं मानो कोई जान पहिचान ही नहो; आज कितने दिनों के पश्चात् उनका यह पत्र दृष्टिगोचर हुआ है" ॥

यह सुन अत्यन्त विनीत भाव से रामनाथ ने हाथ जोड़ कहा "महाराज, वह तो अपनी मित्र मण्डली में नित्य आप की गाढ़ मैत्री पर घंटों चर्चा किया करते हैं और सदैव आप से मिलने को उत्सुक रहा करते हैं, परन्तु कई एक कारण आ पड़ने से इधर कई दिन से वह अपनी इच्छा पूर्ण न कर सके और आज भी एक अतीव संकटावस्था उपस्थित होने के कारण वह स्वयं न आ सके और मुझे ही आप के पास भेजा है। अस्तु; पत्र देख कर आप उनके दुःख का अनुमान स्वयं कर लेंगे" ॥

अपने मित्र पर संकट का नाम सुन युवक का मन खिन्न हो उठा और उनका हाथ तुरंत पत्र पर पहुंचा, उन्होंने उसे तत्काल खोल कर पढ़ा। वह पत्र हम आप के अवलोकनार्थ नीचे ज्यों का त्यों देते हैं :—

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री सकल गुण निधान बीरवर परम मित्र कुमार सूर्य प्रताप सिंह जी,—प्रभु से सदा आप की प्रसन्नता का प्रार्थी हूं, यहां परमेश्वर की दया से सब भांति कुशल है। अनेक दिनों से आप का कोई समाचार नहीं मिला सो कृपा पूर्वक शीघ्र निज प्रसन्नता से सूचित कीजिये। मेरे आज इस पत्र के भेजने का मुख्य कारण यह है कि मित्रवर गजेन्द्र सिंह, जिन को आप जानते ही हैं, बड़ी बिपत्ति में फंसे जा रहे हैं और वह बिपत्तिस्थान आप की राजधानी से निकट ही पड़ता है। समय थोड़ा और फ़ासला अधिक होने के कारण मैं यहां से सहायता नहीं भेज सक्ता, इस हेतु आप को असमय कष्ट देना पड़ा। दृढ़ आशा है कि आप उन्हैं मेरे ही समान समझ उनकी रक्षा करेंगे। आप के समझने के लिये इतना लिख देना और आवश्यक है कि वह एक काम के लिये चन्द्रनगर से लालगढ़ को जो आप के निकट ही है, रवाना हो गये हैं। और उनके चले जाने के थोड़ी ही देर उपरान्त मेरे एक सेवक ने यह खबर मुझे दी—"मैं शंकरगढ़ के जंगल में शिकार खेल रहा था कि एक झाड़ी में से कुछ खुसखुसाहट की आवाज़ आई, मैं छिप कर सुनने लगा, वहां कोई आठ आदमी सलाह कर रहे थे 'आज गजेन्द्र सिंह लालगढ़ जायंगे, अच्छा हो कि

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्हैं शंकरगढ़ से आगे बढ़कर जंगल ही में मार लिया जावै, वह वहां कोई १० बजे रात को पहुंचेंगे, इस से पहिले हम सब को तैयार होकर वहां पहुंच जाना चाहिये' इतना कह कर वह वहां से चले गये"—यही सेवक के कथन का सार है। यह सुनते ही मुझे बड़ी चिन्ता हुई और सवार वा सिपाही उनके पास दौड़ाये किन्तु वह इस से पहिले ही रवाना हो गये थे; निदान हताश हो कर सवारों ने यही खबर मुझे दी और यह जान कर मेरी चिन्ता का पार न रहा। अब यह भी नहीं जानता कि वह गये किस रास्ते से हैं। बस तो अब आप से यही प्रार्थना है कि उनकी रक्षा का उचित प्रबन्ध कीजिये नहीं तो बड़ी भारी विपत्ति की आशंका है। अधिक क्या लिखूं॥

स्थान बीरपुर }
कुंआर सुदी १४ }

आप का—
बल बीर सिंह

यह पत्र पढ़तेही युवक कुमार सूर्य प्रताप सिंह का मुख बीरोचित तेज से चमचमा उठा; मित्र की व्यग्रता का प्रभाव उनके गंभीर हृदय में प्रवेश कर गया और खल-बली मचा दी; और मित्र के मित्र की सहायता का बि-

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बार तड़ितवत् उनके चित्त को मसोसने लगा। क्यों न हो,

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी।
तिन्हैं विलोकत पातक भारी॥

सज्जन सत्य बीरों का जो धर्म है उसी को कुमार ने निबाहा। उन्हों ने तुरन्त ही निश्चय कर लिया कि इस समय अब क्या करना उचित है। सोच समझ कर उन्हों ने अपने तीन सखाओं में से एक से कहा "शेषधर, तुम जाव और रामनाथ के ठहरने का प्रबन्ध कर शीघ्र वापिस आओ"॥

यह सुनते ही शेषधर रामनाथ को अपने साथ ले बाहर चले गये॥

तब कुमार ने ब्रज किशोर से कहा "हमारी राय यह है कि इस मामले को तुम अपने हाथ में लो, देखो, अभी ठीक साढ़े नौ बजे हैं, यदि चीठी में लिखे अनुसार गजेन्द्र सिंह उस जंगल में पहुंच गये और कुचक्री भी अपने बिचार के पक्के निकले तो बात कठिन है। यद्यपि समय थोड़ा है फिर भी दृढ़ता से काम लेना चाहिये। अच्छा, तो फिर तुम कुछ सवारों को साथ ले तुरन्त

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उधर चले जाव, अब देर करना ठीक नहीं"। कुमार की यह आज्ञा सुन ब्रज किशोर खुशी से उठ खड़ा हुआ और अपने अश्व को संभाल तेजी से उस जंगल को रवाना हुआ ॥

उसके जाने के कुछ क्षण उपरान्त कुमार ने उपस्थित युवा राधे लाल से कहा "तुम भी ब्रज किशोर के पीछे गुप्त रूप से जाओ और समय आने पर उसकी सहायता करो क्योंकि जिस उमंग से भर कर ब्रज किशोर गया है उस से हम अनुमान करते हैं कि वह किसी को अपने साथ न लेकर अकेला ही गया होगा इसलिये ऐसी अवस्था में तुम्हारा उसके पीछे जाना अति उत्तम होगा" ॥

यह सुन राधे लाल ने कहा, "यह आप ने खूब सोचा वह ऐसे ही साहसी हैं और आप की आज्ञा पालन करने के लिये तो वह कुछ उन्मत्त से हो जाते हैं जैसा कि अभी उनकी चाल से विदित हुआ, अस्तु उनके पीछे अब मेरा जाना ठीक ही है" इतना कह कर राधे लाल भी वहां से चला गया ॥

इतने में शेषधर राम नाथ के ठहरने का प्रबन्ध कर कुमार के पास आया किन्तु वहां ब्रज किशोर व राधे

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाल को न देख कर बहुत विस्मित हुआ परन्तु बोला कुछ नहीं ॥

इसी भांति थोड़ी देर लों सन्नाटा रहा और कुमार न मालूम क्या २ अपने दिल में सोचते रहे। कोने में टंगी हुई क्लाक (Clock) ने "टनटन" करके दस बजा दिये, यह सुन कुमार चौंक उठे और शेषधर से बोले "समझ में नहीं आता कि यह कुचक्री कौन हैं और क्यों गजेन्द्र सिंह की जान के गाहक हो रहे हैं, उस दिन आखेट खेलते समय भी देखा था कि सुनसान जंगल में अकेले गजेन्द्र सिंह पर पांच आदमी वार कर रहे थे, परन्तु क्यों शेषधर! अकेला गजेन्द्र ही कैसी बीरता से उन पाचों का मान मार रहा था; हां यदि कुछ और बेर लौं हम लोग वहां न पहुंचते तो कदाचित् गजेन्द्र के बैरियों पर आ बनती। ओह, कैसा धीर बीर आदमी है। हम समझते हैं कदाचित् वही लोग इस कुचक्र के कर्ता होंगे परन्तु यह विदित नहीं कि वह हैं कौन, नहीं तो उन्हें जड़ से उखाड़ कर बहा देते। खैर, अब तो सबेरे तक व्रज किशोर व राधे लाल के लौटने की संभावना है। आगे क्या करना होगा सो बिना उनके आये निश्चित नहीं किया जा सक्ता। दस बज गये अब हम आराम करने जाते हैं; तुम भी अपने घर जाव" ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह कह कर कुमार उठ खड़े हुये और अपने शयनागार की ओर पधारे। शेषधर ने भी अपने घर की राह नापी ॥

दूसरा परिच्छेद

॥ तुम सावधान रहना ॥

प्रभात की शीतल वायु धीर भाव से बहती हुई शरीर को स्पर्श कर चित्त को प्रसन्न कर रही है, चिड़ियों ने अपने २ घोसले छोड़ कर प्रभात के गीत गाना आरंभ कर दिये हैं, पथिक गण ठंढे में रास्ता तय करने का मनसूबा बांध अपने पड़ाव से चल पड़े हैं, पूर्व दिशा सूर्य के स्वागतार्थ सुहावने और रंग बिरंगे वस्त्र धारण किये उमंग से भरी निश्चल खड़ी हुई है, चारों ओर सुहावना दृष्य देख प्रत्येक मनुष्य का चित्त प्रसन्न हो रहा है, कार्य्यार्थी पुरुष इस सुअवसर से लाभ उठाने के अर्थ ईश्वर को धन्यवाद देते हुये अपने घर से बाहर निकल इधर उधर जंगल बाटिकाओं में प्राकृतिक आनंद ले रहे हैं, किन्तु आलसी अपनी खाट पर लेटे

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुन्दर शीतल वायु के सुख में मक्खियों को बाधा देने के कारण कोसते और फिर २ अपने शरीर को वस्त्रों में लपेटते हुये अपने निराले ही स्वभाव का परिचय दे रहे हैं ॥

ऐसे ही समय एक युवा अपनी वाटिकास्थित अट्टालिका की छत पर न जाने किस चिन्ता में मस्तक झुकाये बैठा है, इन सब दृश्यों की ओर वह किंचित भूक्षेप नहीं करता, कभी तो उसकी चंभुरी बंध जाती है और कभी हर्ष से उसका माथा चमचमाने लगता है, इतना सब कुछ होने पर भी वह कुछ सुस्त देख पड़ता है। शरीर उसका गठीला और बलिष्ट तथा मुख तेज मय है और वीरता उसके अंग २ से झलक रही है किन्तु वह किसी चिन्ता के कारण अवसन्न हो रहा है। अहा, थोड़ी देर में वह अपने विचारों में ऐसा तन्मय हो गया कि उसको अपने आस पास की कुछ भी खबर न रही, क्योंकि देखो, अभी हाल ही में एक कुमारी जिसकी आयु लग भग १४ या १५ वर्ष की होगी, नीचे से आकर उसके पीछे खड़ी होकर कई क्षण से उसकी यह दशा देख रही है परन्तु उसको इसकी कुछ भी खबर नहीं ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमारी नख सिख से बनी सर्वाङ्ग सुन्दरी बाला है; उसके अंग प्रत्यङ्ग ऐसे सुन्दर और सुडौल बने हैं मानो विधना ने उन्हें निज हाथों से सम्हाला हो, लावण्यता उसके शरीर से चुई पड़ती है; सारांश यह कि वह हर तरह से हंसमुख, प्रसन्न बदना, चतुर और सुन्दर शिरोमणि जंचती है। यह सब कुछ होने पर भी इस समय का उसका यह भेष साफ प्रगट कर रहा है कि वर्तमान् में उसकी स्थिति अच्छी नहीं है और वह "धूल भरा रत्न" की नाईं हो रही है॥

कुछ काल तक तो बालिका योंही चुपचाप खड़ी उपरोक्त युवा की हालत पर विचार करती रही, फिर इक दम से उसने कहा "भैया! क्या कर रहे हो? देखो, सूर्य निकल आया है और अभी लों तुम ने 'दातून मुखारी' तक नहीं की, क्या तुम को याद नहीं है कि आज बड़े सबेरे ही चाचा जी तुम से मिलने को कहते थे?"

युवक यह सुन मानो नींद से जागा, चौंक कर बोला "इन्दु, तुम कहां? बहिन क्या सच मुच इतनी देर हो गई? (ऊपर निहार कर) अहा॥ अच्छा, चलो मैं शीघ्र ही आता हूं"। इतना सुन बालिका तो चली गई किन्तु युवा को उसी पूर्ववत् चिन्ता ने आकर फिर दबा लिया,

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसी अवस्था में उसके मुख से जो वाक्य निकले वह इस प्रकार हैं :—

"दीन दयाल ! मुझे एक मात्र आप ही का भरोसा है; माता पिता बाल्य काल ही में आप के भरोसे छोड़ परलोक सिधारे, यह आपही की अदृष्य कृपा है जो चाचा जी ने पाल पोस कर इतना बड़ा किया, अब तक हम भाई बहिन पर उनका बर्ताव सन्तान के समान बना रहा, किन्तु इधर कुछ दिनों से मुझ से वह कुछ रूठे से रहा करते हैं, क्यों अनायास उनका मन ऐसा फिर गया सो मेरी समझ में नहीं आता, और सब से प्रबल बात तो यह है कि वह "इन्दु" के ब्याह की फिकर क्यों नहीं करते, यदि कहा जाय कि अभी वह इस योग्य नहीं तो अब वह वयस्क है, अपने धर्मानुसार हमें चाहिये कि उसे किसी सुपात्र के हाथ सौंप दें, किन्तु मैं देखता हूं मेरे चाचा साहब इस ओर से बड़े बेसुध हो रहे हैं क्योंकि मैं जब कभी इस प्रसंग को उनके समक्ष छेड़ता हूं तो वह योंही बातों में मुझे टरका दिया करते हैं परन्तु आज तो मैं स्पष्ट उत्तर पाये बिना उनको न छोड़ूंगा" ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यही उस युवा के विचार हैं। अस्तु; अपने मन को कुछ ढाढ़स दे और दृढ़ संकल्प कर यह कहता हुआ "अरे अब तो धूप तेज़ हो गई" वह नीचे उतरा और शीघ्र ही शौचादि से निवृत हो कर जैसे वह कपड़े पहिन रहा था कि एक आदमी ने बाहर से यह आवाज़ दी "कुंअरजी! चलिये, चाचा साहब आप को बुलाते हैं" यह सुन शीघ्रता से कपड़ा पहिन वह अपने कमरे से बाहर हुआ और उसी बगीचे के अन्दर बनी एक हवेली की ओर बड़े वेग से चला गया। हवेली के सामने मैदान में एक व्यक्ति टहल रहा था, उसके निकट पहुंच कर उसने बड़े अदब से उसे अभिवादन किया "चाचा जी प्रणाम" जिसका उसने भी उचित उत्तर देते हुये कहा "आज तुम्हें एक ज़रूरी काम के लिये यहां से कहीं बाहर जाना है, अस्तु, इधर आव तो कहूं"॥

युवक—जो आज्ञा, जहां आप कहैं मैं वहां जाने को तैयार हूं परन्तु चाची जी से भी बिदा ले आऊं न?

"हां अच्छी बात है जब तक तुम वहां से आव तब तक मैं (इशारा करके) इन आसामियों से भी निपट लूं"

पाठकों को जानना चाहिये कि मैदान में जो व्यक्ति टहल रहा था वह युवक का चाचा था॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह उत्तर पा युवक तो हवेली के अंदर चला गया और चाचा नाम धारी व्यक्ति पास ही बैठे हुये ४, ५, आसामियों की ओर झुक पड़ा ॥

युवक हवेली में पहुंच अपनी चाची को सादर प्रणाम कर व उनका आशीर्वाद पा वहीं चौक में बिछी हुई एक चौकी पर बैठ गया ॥

कुमारी इन्दुमती जिस ने प्रातः काल युवक को सचेत किया था यहीं पर घर का काम काज कर रही थी और उसी के पास ही और भी दो छोटी २ बालिकायें अपने ऊट पटांग खेल में मस्त थीं। चाची एक पीढ़ा डारे उनका यह सब कौतुक देख रहीं थी । जब युवा उसके पास पहुंचा उसको आशीर्बाद दे इन्दु से वह बोली "बेटी ! इनके लिये जलपान को कुछ ला दो" ॥

इस पर युवक ने कहा "मैं समय पर भोजन करूंगा अभी जल पान की कुछ इच्छा नहीं है" ॥

चाची–मेरे कहने का हेतु यह है कि आज तुम्हें कहीं बाहर जाना है न मालूम कब तक वहां से लौटो इस कारण कुछ खा लो तो अच्छा है ॥

युवक–जैसी आप की इच्छा, अस्तु चाचा जी को भी बुलवा लीजिये ताकि वह भी कुछ भोजन कर लें ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाची–नहीं वह अभी न आयंगे क्योंकि वह थोड़ी देर में जीमने को कह गये हैं ॥

इतने में इन्दु एक थाली में मेवा मिठाई फलादि ले आई और उसे युवक के आगे रख कर चली गई। अभी खाने का समय नहीं हुआ था इस से युवक धीरे २ खाता हुआ अपनी यात्रा विषय "कहां जाना होगा और वहां क्या काम करना होगा इत्यादि" पर बिचार कर रहा था और कभी कभी चाची के मुख की ओर सहज भांति निहार लिया करता था। उसने देखा कि इस थोड़े से समय में ही उनके मुख पर कई एक भिन्न भाव लक्षित हुये तथा उनकी दोनों आखें भी कुछ अश्रुमय बोध हुईं। चाची का यह अपूर्व भाव देख युवक को बड़ा आश्चर्य्य हुआ और अपने उत्कंठित मन के वेग को न संभार कर वह तुरन्त हीं बोल उठा "चाची आज आप के मुख पर मैं यह कैसे बिषाद चिन्ह देख रहा हूं, यदि मैं इसके जानने का अधिकारी होऊं तो कृपा कर यह भेद मुझे बताइये" ॥

जब किसी मनुष्य को कोई शोक अथवा चिन्ता होती है तो वह घंटों उस पर बिचार करता हुआ स्वयं शोक मयी मूर्ति बन उसी का अनुभव किया करता है परन्तु यदि कहीं बीच में उसे कोई छेड़ दे अथवा पूछ बैठे कि आप

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को क्या रंज है तो स्वाभाविक ही उस का वह रंज द्विगणित हो जाता है और उस समय उस मनुष्य की कुछ विचित्रही दशा हो जाती है, सोही दशा युवक की चाची की हुई अर्थात ज्योंही उसने पूछा "चाची आप के मुख पर यह विषाद चिन्ह कैसे" त्योंहीं उनका धीर चला गया, वह संभल न सकी और मेघ झर समान झरझर कर उनकी आंखों से आंसुओं की झरी लग गई मानो किसी नदी में जल रुक रहा था और इक दम से उसका बांध फूट पड़ा; अबला का हृदय खलबला उठा और वह किसी हृदय वेदना के कारण अत्यन्त शोकाकुल हुई ॥

यह देख युवक बहुत घबराया, भोजन की थाली दूर हटा शीघ्र हाथ मुह धो पास पहुंच रुमाल से उस के आंसू पोंछ दिये और हाथ जोड़ बड़े आग्रह से उस से पूछा "क्या मैं आप का यह दुःख नहीं जान सकता हूं ? बतलाइये तो क्यों आप की यह दशा हो रही है ?"

युवक की व्यग्रता व स्नेह को देख बड़े कष्ट से अपने रुंधे हुये गले से एक लंबी स्वांस ले उसने कहा "आह, बेटा मैं 'भई गति सांप छछून्दर केरी' की कहावत के सामान हो रही हूं, यदि कहती हूं तो भी ठीक नहीं और बिना कहे जी नहीं मानता; अब मैं करूं तो क्या

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करूं, परन्तु जहां तक अपनी बुद्धि को मैं ने ज़ोर दिया तो यही बात निश्चय हुई कि उसका कह देना ही ठीक है इस हेतु कहती हूं कि आज जिस यात्रा पर तुम जाने वाले हो वह बड़ी ही भयंकर है" ॥

युवक–बनी रहै, इसकी मुझे क्या चिन्ता, जब मेरे पूज्य वर पितृव्य वहां जाने की मुझे आज्ञा देते हैं तो चाहै उसमें मेरी हानि भी क्यों न हो उस का प्रतिपालन करना ही मेरा परम धर्म है ॥

चाची–मेरी इच्छा यह कदापि नहीं है कि तुम उनकी आज्ञा को उल्लंघन करो वरन मेरा अभिप्राय तो यह है कि तुम किसी आने वाली विपत्ति से सचेत हो जाओ ॥

युवक–आप कृपा कर वह बात जो मुझे विपत्ति में डाल सक्ती है बतावें ॥

चाची–इस के प्रथम तुम मुझे यह बताव कि उस से रुष्ट हो तुम उन [पति] का कुछ अनिष्ट तो न करोगे ?

युवक–नहीं २ चाची ! तुम यह क्या विचार अपने मन में लाती हो, भला जिन चाचा ने पिता के समान प्रतिपोस कर मुझे इतना बड़ा किया क्या मैं उन्हीं

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हानि पहुंचाऊंगा ? कदापि नहीं ॥

चाची—हां, मुझे तुम्हारा पूर्ण विश्वास है किन्तु योंहीं सावधान किया है। अच्छा सुनो, कदाचित् तुम यह समझते हो कि उन (पति) को इन्दु के व्याह की फिकर नहीं है सो तुम्हारा यह विचार मिथ्या है, उन को इस बात की बड़ी ही फिकर है किन्तु दो एक कारण ऐसे आ पड़े हैं कि इच्छा रहते हुये भी कुछ नहीं हो सका, यह तो तुम जानते ही हो कि उनका स्वभाव किस प्रकार का है सो उन्हों ने अपने उसी स्वभाव के अनुसार ही बहुत कुछ कर्ज़ बढ़ा रक्खा है, अतएव औरों को तो वह जैसे तैसे टाल रहे हैं परन्तु एक ज़मीन्दार से जिसके पचास हज़ार रुपये हैं बड़ा कड़ा मामला अटका है और यही एक भेद की बात है जो तुम को नहीं मालूम होगी सो बतलाती हूं कि वह साफ़ कहता है कि हमारा सब रुपया एक दम से अभी चुकता कर देव या नहीं तो अपनी भतीजी इन्दुमती का व्याह मेरे साथ कर देव तो मैं वह सब रुपया तुम्हें माफ़ कर दूंगा। वैसे तो इन्दु का ब्याह उसके साथ कर देने में कोई हानि नहीं थी क्योंकि वह तो कहीं न कहीं होवै ही गा परन्तु अटकाव इस बात का है कि उसकी चाल चलन ठीक नहीं और इसके

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतरिक्त जाति पांति में भी हम लोगों से वह छोटा है। बैर, ब्याह और प्रीति तो अपने बराबर वाले से ही की जाती है; यही सब बातें विचारते हुये वह (पति) इस सम्बन्ध में राज़ी नहीं होते, परन्तु फिर रुपया लावें कहां से ? अब मैंने गुप्त ढंग से यह सुना है कि रुपया अदा न हो सकने के कारण वह अब उसके साथ इन्दु का ब्याह कर देने को राज़ी हो गये हैं, सो सब प्रबन्ध होने पर भी अभी तक यह काम हो नहीं पाया है कारण इसका यह है कि तुम इस बात का होना स्पष्ट अस्वीकार करते हो ॥

युवक–आप यह तो बताइये कि वह किस गांव का ज़मींन्दार है ॥

चाची–वही कृष्णगढ़ के राजा माधव सिंह, क्या तुम उन्हें नहीं जानते ?

युवक–हां हां ! उसे तो मैं भली भांति जानता हूं वह तो बड़ा ही लम्पट, धूर्त, कुकर्मी, व स्वार्थी मनुष्य है अपने जीते जी मैं अपनी बहिन कदापि उसे नहीं दे सकता, पशु भी सुपात्र के हाथ सौंपा जाता है फिर तो भला यह मनुष्यों का सौदा है ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाची–इसी कारण तो वह अब दूसरे ढंग पर काम करने को बिबस किये गये हैं और वही भयंकर ढंग मैं तुम से कहने वाली हूं॥

युवक–हां तो अब वह बता दीजिये क्योंकि बाहर चाचा साहब मेरी राह देखते होंगे और अब मुझे उनके पास पहुंचना ज़रूरी है॥

चाची–तुम से छिप कर ब्याह की बात पक्की होते ही यह बात भी तै हुई कि गजेन्द्र सिंह इस काम में बाधक हैं इस कारण इनको किसी भांति खपा कर रास्ता साफ़ करना चाहिये ताकि फिर कोई कंटक न रह जावे और निश्चिन्तता से यह काम समाप्त हो। सो बेटा कहते नहीं बनता तुम्हारे चाचा भी चंचला के चक्र में फंस गये हैं। आज जहां तुम जाने वाले हो वहीं कहीं रास्ते में माधव सिंह ने अपने सिपाहियों को लगा रक्खा है कि वहां पहुंचते ही वह तत्काल तुम्हारा बध कर डालें। वह मेरे पति हैं सो ठीक परन्तु तुम भी तो मेरे प्राण सम प्रिय पुत्र हो, यह बात कहने से यद्यपि मेरी पति भक्ति में बट्टा लगता है तद्यपि पुत्रस्नेह की प्रेरणा से उस धर्म पर ध्यान न दे कर मैंने तुम से यह

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भेद कह देना सर्वोत्तम समझती हूं अस्तु; तुम इस बात को अपने मन में धारण किये हुये सतर्क उस राह से जाना, चाहे इस लोक में मेरी हंसाई हो और परमेश्वर के यहां भी मुझे इस पति विरोध का दण्ड भोगना पड़े परन्तु वात्सल्य प्रेम के वशी भूत हो मैं वह भेद तुम से नहीं छिपा सकी। बस अब मैं तुम को हर्ष से विदा दे कर विधाता से यही प्रार्थना करती हूं कि तुम कुशल से लौट कर यहां आ जाव ॥

जब तक चाची यह सब कहती रही पाषाण मूर्ति बना हुआ युवक यह भयंकर सम्वाद सुनता रहा और ज्यों हीं कि उस की बात समाप्त हुई वह बोला "यह भेद मुझे बतला कर आप ने बहुत ही अच्छा किया, आप निश्चिन्त रहैं चाचा जी का अनिष्ट मैं कभी भी न बिचारूंगा" ॥

इतना कह कर उस ने उसे प्रणाम कर उस के चरणों को स्पर्श किया और अपने चाचा के पास गया। चाचा बड़ी देर से उसकी बाट जोह रहा था, अस्तु, उसने उसे देख कर थोड़ी देर लों कुछ बात चीत की जिस पर वह युवा यह कहता हुआ "जो आज्ञा, सायंकाल को मैं

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वहां चला जाऊंगा" अपनी अट्टालिका की ओर चला गया ॥

इस युवक का नाम गजेन्द्र सिंह है और इस के चाचा जिन्हों ने इन्हें बुला कर परामर्श कर कुछ आज्ञा दी थी, चौधरी बिहारी सिंह के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह विशुद्ध चौहान बंशी राजपूत हैं, यह उच्च बंशीय होने के कारण बड़े माननीय हैं और इसी से यह अपनी जातीय पंचायत के मुखिया एवं "चौधरी" हैं ॥

यह बड़े चलते पुरजे और कुटिल प्रकृति के मनुष्य हैं, स्वार्थ साधन इनके जीवन का लक्ष्य है इस कारण कोई कैसी ही अनुचित बात क्यों न हो तुरन्त उसे कर बैठते हैं, इनकी ज़मीन्दारी बहुत बड़ी नहीं केवल दस हज़ार वार्षिक आय की है, अपना घर भरने का इन्हें बड़ा शौक है विना प्रयोजन ही रुपया उधार ले लेते हैं फिर देने के नाम ठनठन गोपाल। "मूंड़ चाहै फूट जावै परन्तु पैसा न टूटै" इस कहावत को आप प्रत्यक्षवत् सिद्ध कर रहे हैं। सन्तान के नाम आप के यहां केवल दो बेटियां हैं जो अंदर आंगन में इन्दु के पास खेल रहीं थीं॥

चौधरी साहब दो भाई थे, बड़े का नाम मान सिंह था और छोटे सो यही धर्मावतार हैं, अस्तु, दोनों

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्र नगर गांव में जो बीरपुर राज्य के अंतरगत है, आधे २ के ज़मीन्दार थे। आज तेरह वर्ष का समय व्यतीत हुआ मानसिंह अपनी दो सन्तान—गजेन्द्र सिंह व इन्दुमती—को छोड़ सपत्नीक स्वर्ग को सिधारे। इन अबोध बालकों को बिहारी सिंह व उनकी स्त्री ने पाला अतएव वे दोनों यही हैं जिन का नाम और वृतान्त ऊपर लिखा गया है॥

गजेन्द्र सिंह बड़े सीधे, सच्चे, बीर, धीर, साहसी, दयावान, शील और सज्जन व्यक्ति हैं; यह जब दश वर्ष के हुये तभी कुमार बल बीर सिंह के पास "बीरपुर" नामक गांव में भेज दिये गये थे और सत्रह वर्ष की अवस्था तक वहीं विद्याध्ययन करते रहे, जब भली भांति विद्या लाभ कर चुके तब घर आये। घर आ कर उन्हों ने अपनी बहिन को भी शिक्षा दी और समय तथा जाति धर्मानुसार शस्त्र विद्या भी उसे सिखाई। उनकी बहिन इन्दुमती बड़ी चतुर और तीव्र बुद्धि बालिका है बस कारण वह थोड़ी सी शिक्षा में ही बहुत सुयोग्य और सुशीला बन गई। गजेन्द्र सिंह सात वर्ष तक बीरपुर में रहे इस हेतु बल बीर सिंह से उनकी गहरी मित्रता हो गई॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्णगढ़ के ज़मीन्दार राजा माधव सिंह जाति के छोटे और अपने स्वभाव के बड़े खोटे हैं। हाल में इन्हों ने बिहारी सिंह को पचास हज़ार रुपया ऋण में दिये हैं इस हेतु उन का पूर्णआंतक इन पर छा गया है। अब वह चाहते हैं कि इन्दुमती का व्याह हमारे साथ हो जावै तो इस उच्च वंश के सम्बन्ध से हमारी खुटाई का कलंक मिट जावै। यद्यपि इन्हैं इतने रुपया की कुछ परवाह नहीं तथापि अपना अभीष्ट साधनार्थ आप तकाज़ा करने से नहीं चूकते और स्पष्टतया व्याह कर देने के लिये आग्रह करते हैं। बिहारी सिंह तो पचास हज़ार के पीछे कभी के यह सम्बन्ध कर चुके होते परन्तु गजेन्द्र सिंह इस में बाधक हो रहे हैं यह ख्याल आ कर बीच में उन को रोक देता है परन्तु फिर भी वह कोई नई सी विधि निकालने का यत्न कर रहे हैं ॥

बिहारी सिंह व माधव सिंह दोनों एक दूसरे के अनुकूल हैं अर्थात् दोनों की परस्पर इच्छा है कि रुपया चौधरी साहब के घर रहै और इन्दु राजा साहब के घर आवै। अब राजा साहब की प्रेरणा से दोनों स्वार्थियों ने यह निश्चित किया है कि गजेन्द्र सिंह को मार कर रास्ता साफ़ करना चाहिये। गजेन्द्र सिंह के न रहने से

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौधरी साहब को यह एक और भी लाभ है कि उनके भाग की ज़मीन्दारी भी इनके हस्त गत होगी सो सहर्ष अपनी सम्मति उन्हों ने दे दी है, परन्तु यह द्विगुणित लाभ की आकांक्षा रहने पर भी चौधरी साहब अपने भीरु स्वभाव के कारण स्वयं यह भयंकर काम नहीं कर सक्के इस हेतु माधव सिंह ही इस काम के लिये ठीक हुये हैं । इसी मंत्रणानुसार आज सबेरे चौधरी साहब ने गजेन्द्र सिंह को किसी काम से लालगढ़ को जो कृष्णगढ़ के इलाके में है जाने की आज्ञा दी है; रास्ते में शंकरगढ़ व लाल गढ़ का बड़ा भयानक वन पड़ता है, इसी में माधव सिंह ने गजेन्द्र सिंह पर आक्रमण करने को अपने सेवक लगा रक्खे हैं। अतएव यह सब कपट का हाल अपनी चाची से सुन लेने पर भी अपने चाचा की आज्ञा पालन करने के लिये निर्भय हो केवल ईश्वर के भरोसे बीर गजेन्द्र सिंह लाल गढ़ की ओर रवाना हुये ॥

बल बीर सिंह का निज सेवक द्वारा गजेन्द्र सिंह को मार डालने का षड्यंत्र सुनने व शंकर गढ़ के राज-कुमार सूर्य्य प्रताप को पत्र लिखने तथा अपने मित्र की सहायता करने आदि का वृतान्त प्रथम परिच्छेद में आप देख ही चुके हैं। परन्तु बल बीर सिंह अभी इस

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बात से निपट अनभिज्ञ हैं कि इस हत्या कांड के रच-यिता श्रीमान् राजा माधव सिंह तथा मान्यवर चौधरी साहब ही हैं ॥

तीसरा परिच्छेद

॥ मित्र मिलन ॥

कार्तिक शुक्ला १४ को रात्रि के चतुर्थ प्रहर की चांदनी संसार में चांदना कर रही है मानो सारी पृथ्वी में सफ़ेद बिछावन बिछ रहा है; चन्द्र देव को देख २ कमोदनी फूले अंग नहीं समाती, किन्तु चकोर की गति इससे निराली है, वह समझ गया है कि यह दृश्य अब बड़ी बेरलों नहीं रहैगा इस से नैराश्य दृष्टि से उस (चन्द्र) की ओर निहार रहा है; बन से फल फूलों की मृदु महक आ २ कर मन को प्रफुल्लित कर रही है; प्रकृति का यह तमाशा बड़ी बहार दिखा रहा है और परमेश्वर की बिचित्र रचना का अनुभव करा रहा है। भला उस पर-मेश्वर की रचना जिसे बड़े २ मुनीश्वर भी समझने में असमर्थ हैं आप को इस छोटे से कागज़ पर लिख कर हम कैसे बता सकते हैं इस हेतु केवल इतनाही कहते हैं कि समय मनोहर और सुहावना है ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसे समय आठ दश अश्वारोही वीरपुर से पश्चिम की ओर पहाड़ी मैदान के रास्ते प्रकृति का यह सब दृष्य देखते हुये आनन्द से चले जा रहे हैं। पोशाक सबों की अच्छी और घोड़े चाल में बड़े तेज़ हैं, भरपूर लगाम खिची रहने पर भी आगे बढ़ने को दम दम मचा रहे हैं, उन के मोटे और सुन्दर शरीर पर 'जीने' कसी हुई बड़ी ही शोभा दे रही हैं। सब के आगे जो युवा है उस में औरों से सब प्रकार की भिन्नता है; पोशाक उसकी निहायत भड़कीली, शिर पर जयपुरी पगड़ी, गले में हीरों की माला, कमर में मोती टकी कमर पेटी और उसी में लटकती हुई एक तलवार, जिस की मूठ जड़ाऊ है, सुशोभित हैं; शरीर उनका बलिष्ट और सुन्दर, चेहरा अत्यन्त मनोहर और प्रफुल्लित और आयु उनकी लगभग २१ वर्ष की है। इस सब से स्पष्ट ज्ञात होता है कि यह कहीं के राजकुमार हैं। उनके संगी साथी भी उन्ही के 'हम उमर' हैं, उनका ढंग देखते हुये यह उनके मुसाहब किम्वा मित्र जान पड़ते हैं॥

निदान वे सब इसी भांति प्राकृतिक दृष्य का आनंद लेते हुये चले जाते थे कि इतने में भगवान भास्कर ने पूर्व ओर से निकल चन्द्र देव को परास्त कर संसार रूपी

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रणभूमि पर अपना अधिकार किया और विजित व्यक्ति की सम्पत्ति पर अपना तेज दर्शाने लगे। यह देख बढ़ते हुये सूर्य ताप से बचने को उन अश्वारोहियों ने अपने घोड़ों की लगाम ढीली कर ऐड़ का इशारा दिया जिस से वे हवा को चीरते हुये बड़े बेग से दौड़े और पलक मारते ही उन्होंने उन्हैं शंकर गढ़ नगर में धर दिया॥

यहां हम पाठकों को बताते हैं कि यही बीरपुर के राजकुमार बल बीर सिंह हैं जिनका पत्र लेकर रामनाथ शंकर गढ़ आया था। अस्तु, कुमार अपने साथियों सहित राज भवन के दरवाज़े पर जा पहुंचे, जिन्हैं देख आदर के हेतु सब उपस्थित जन उठ खड़े हुये। एक सेवक इससे पहिले ही उनके आगमन की सूचना देने के लिये भीतर दौड़ गया था जिससे कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह ने तुरन्त आकर दरवाज़े पर ही इन का स्वागत किया और कुशल प्रश्न पूछते हुये दोनों कुमार उसी कमरे की ओर, जिस की बहार रामनाथ के साथ आप देख चुके हैं, पधारे। बीरपुर के अश्वारोही भी बिश्रामार्थ डेरे पर गये॥

कुमार बलबीर सिंह के पिता का नाम महाराज रुद्र-प्रताप सिंह है। बीरपुर राज्य, जिसकी वार्षिक आय पचहत्तर हज़ार के लग भग है, इनके अधिकार में है।

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीरपुर की सीमा शंकर गढ़ से बिलकुल सटी हुई है इस कारण दोनों कुमार बहुधा एक दूसरे के यहां आया जाया करते हैं और दोनों में गहरी मित्रता है। राज्य के स्वामी महाराज रुद्र प्रताप सिंह हैं और अभी कुमार बलबीर सिंह युवराज की पदवी से भूषित हैं। अस्तु,

कमरे में पहुंच कर और सावधानी से बैठने के अनन्तर बल बीर सिंह ने बड़े आग्रह से पूछा "मैं समझता हूं रामनाथ ठीक समय पर आप के पास पहुंचा होगा, कहिये, फिर इस के बाद क्या हुआ ?" ॥

यह सुन सूर्य्य प्रताप सिंह बोले "ठीक साढ़े नौ बजे मैंने आप का पत्र पाया जिसे पढ़ कर चित्त बहुत ही असमंजस में पड़ा किन्तु मैंने समय पर ध्यान दे तुरन्त ही बृजकिशोर व राधे लाल दोनों को उस ओर भेजा, परन्तु अब तक उन में से एक भी नहीं लौटा। हां, आप यह तो बताइये कि वह हैं कौन जो इस भांति उनकी जान के ग्राहक हो रहे हैं" ॥

बलबीर सिंह-मैं तो स्वयं ही आप से यह प्रश्न करने वाला था कि कदाचित् आप कुछ जानते हों।

सूर्य्य प्रता०-तो क्या मेरे समान आप भी उन दुष्टों से

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिचित नहीं है !! खैर, वृजकिशोर आदि के आने पर कुछ न कुछ अवश्य विदित होगा; चलिये अब तो भोजन करें, समय हो गया ॥

यह सुन बलबीर सिंह उठ खड़े हुये और दोनों ने स्नान पूजादि से निश्चिंत हो एक साथ एकही थाल में भोजन किया। सूर्य्य प्रताप सिंह की माता बलबीर-सिंह को देख बहुत प्रसन्न हुईं और जब तक वह भोजन करते रहे वे उनके समीप ही बैठीं अनेक वार्तालाप करतीं रहीं। दोनों कुमार भोजन कर फिर उसी कमरे में आये और वहीं पलंगों पर लेट कर आराम करने लगे। शेष-धर भी आ पहुंचा और चित्त विनोदार्थ इधर उधर की बहुत सी बातें होने लगीं ॥

दिन के दो पहर बीत गये, कोई एक बजने का समय है कि एक मुसलमान वीर भेष से सुसज्जित धड़ाम से कमरे में आ पहुंचा, जिसे देख कुछ घबड़ा कर किन्तु कड़ी आवाज़ से शेष धर ने कहा "तू कौन है ? और बिना आज्ञा अन्दर क्यों चला आया ?" ॥

यवन बोला "मैं बग़ैर पूछे नहीं आया, मेरे आने का सबब यह है कि मैं एक बहुत ज़रूरी अम्र की इत्तला

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(सूर्य्य प्रताप सिंह की ओर इंगित करके) आप से करना चाहता हूं" ॥

शेष धर–तेरी इत्तला सुनने का यह समय नहीं हैं वह फिर किसी समय सुन ली जायगी, पहिले तू बाहर चल कर मुझे यह तो बता दे कि तुझे यहां तक किस सिपाही ने आने दिया है" । इन दोनों की बातचीत सुन बलबीर सिंह बिस्मित हो उनका मुंह ताकते हुये रह गये, परन्तु सूर्य्य प्रताप सिंह ने हंस कर उस यवन से कहा "हां तुम कहो किस ज़रूरी काम की इत्तला मुझ से करना चाहते हो" । यह सुन शेषधर अकचका कर रह गया और यवन ने इस प्रकार कहना आरंभ किया :–

"मैं अपने मालिक के हुक्म से एक ज़रूरी काम को जा रहा था कि आप के गांव शंकर गढ़ से कुछ दूर चल कर एक पुरखार जंगल में करीब तीस सिपाहियों को एक सवार पर हमला करते हुये देखा, गो वक्त तंग और आका के काम की जल्दी होने के बाइस मेरा वहां ठहरना मुनासिब न था, लेकिन फिर भी उस में कुछ दिल-चस्पी होने के सबब मैं इसका ख़याल न कर एक पेड़ की ओट में छिप कर उनका जंग देखने लगा; अहा !! मैं आप से क्या अर्ज़ करूं, वह बहादुर सवार अकेलाही कैसी

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चालाकी और फुर्ती से उन तीस बत्तीस बदमाशों की ज़र्ब बचाता हुआ' अपनी तलवार से उनकी ख़बर लेता था, इसी तरह सिर्फ़ पाव घंटे में उसने बीस आदमियों को मार कर गिरा दिया और उन में से दश ही बाकी बचे। हालां कि उस बहादुर को मदद की कुछ पर्वाह नहीं थी, लेकिन एक दूसरा सवार उसकी इमदाद को आ ही पहुंचा, और उसने उन बचे हुये दसों को भी उन्हीं बीस का रास्ता दिखाया। मगर अफ़सोस, अभी वह दोनों अपनी शम शीरों को रूमाल से साफ़ ही कर रहे थे कि पचास साठ सवारों ने इक दम से आकर उनको चारों तरफ़ से घेर लिया, गो पांच सात उन में से भी दोज़ख़ रसीद हुये; मगर चूंकि यह दोनों बहादुर पेश्तर की लड़ाई से बहुत सुस्त हो गये थे और अब इन सवारों से भिड़ कर उन दोनों के घोड़े भी सुस्त हो गये इस सबब लाचारी दरजे पर वह गिरफ़्तार कर लिये गये। उन दोनों को ख़ाली घोड़ों पर कस कर वह सब के सब एक तरफ़ को राही हुये। इन दोनों की दिलेराना तबीअत ने मेरे दिल पर गहरा असर कर दिया और उनको मैं दिल से चाहने लगा इसलिये जब वह उन्हें गिरफ़्तार कर रवाना हुये मैं भी अपना काम छोड़ उनके पीछे, जब

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तक कि वे एक क़िले में दाख़िल न हो गये, चला गया। यहां आकर यह सब बातें आप से मैं ने इस ग़रज से अरज़ की कि आप के ज़ेरसाया ही ऐसे २ जुल्म हो जाते हैं और आप उनकी कुछ ख़बर तक नहीं लेते। चुनांचे यह काम ख़तम कर अब मैं अपने आक़ा के पास उस काम की इत्तला करने जाता हूं जिस के लिये उस ने मुझे भेजा था" ॥

इतना कह कर वह मुस्लमान चलने को उद्यत हुआ, किन्तु सूर्य प्रताप सिंह ने कहा "तुम वहां तक भटकने क्यों जाते हो, यहीं ठहरो, मैं तुम्हारे आक़ा को यहीं बुलवाये देता हूं" ॥

यह सुन वह यवन यह कहता हुआ "मैं अपने आक़ा को पा गया" सूर्य्य प्रताप सिंह के चरणों पर लोट गया, और उसके वहां से उठने पर बलबीर सिंह व शेष धर ने देखा कि जिस को अभी तक वह यवन समझे हुये थे, वह, यवन नही बरन, राघे लाल है। यह कौतुक देख बीर-पुराधीश के कुमार तो खिलखिला कर हंस पड़े, किन्तु शेषधर अत्यन्त लज्जित हुआ और कड़ी बातें कहने का अपराध क्षमा कराने लगा, जिस पर राघे लाल ने कहा "नहीं शेषधर! मैंने तुम से कुछ बुरा नहीं माना बल्कि

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुम्हारी इस कार्य्यवाही से मैं प्रसन्न हुआ हूं क्योंकि यदि मेरे बदले में कोई अन्य पुरुष होता तो तुम्हारा कहना कुछ अनुचित नहीं था, साथ ही भूल तुम से यह हुई कि तुम ने अपने साथी को नहीं पहिचाना" ॥

शेषधर—मैं तो अभी तक तुम्हें मुसलमान ही समझ कर तुम से झगड़ने का समय ढूंढ रहा था, केवल कुमार की डांट सुन कर चुप रह गया ॥

कुमार से बिदा होने पर राधे लाल ने मुसलमानी कपड़े पहिन लिये थे और साथ ही एक बनावटी लम्बी डाढ़ी भी लगा ली थी। जब वह कुमार के चरणों पर गिरा इस सफ़ाई से उस ने अपने बनावटी भेष को बदल लिया कि तत्काल ही राधे लाल बन गया ॥

निदान, राधे लाल के प्रगट होने पर सूर्य्य प्रताप सिंह ने कहा "तुम्हारा यह चातुर्य्य देख हम बहुत प्रसन्न हुये, किन्तु अब बताव, फिर उस के आगे क्या हुआ?" ॥

कुमार का उपरोक्त प्रश्न सुन राधे लाल ने कहा "मैंने उन दोनों सवारों को देख पहिचान ही लिया था कि वे गजेन्द्र सिंह व बृजकिशोर हैं किन्तु हमला करने वालों का पता लगाने के लिये मैं उन के पीछे चला;

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस समय मेरे बनावटी भेष ने मुझे बहुत काम दिया। चलते २ सब ने कृष्ण गढ़ में प्रवेश किया और सीधे क़िले में, जहां राजा माधव सिंह अपने कुछ चापलूस मुसाहबों के साथ एक तकिया के सहारे बैठे थे, जा पहुंचे। जब हम लोग वहां पहुंचे दिन निकल आया था। गजेन्द्र सिंह को देख कर माधव सिंह बहुत प्रसन्न हुये और उन्हैं एक जगह कैद करने का हुक्म दिया, वृजकिशोर भी उन्हीं के साथ रक्खे गये। इसके उपरान्त सब को पारतोषिक प्रदान किया गया और सब सवार छुट्टी पा नगर में आये। उन के साथ मैं भी क़िले से बाहर निकल आया और इधर की राह ली। मेरे बगल में जो सवार जा रहा था उससे मुझे मालूम हुआ कि राजा माधव सिंह ने चौधरी बिहारी सिंह को पचास हज़ार रुपया उधार दिया है और इस के बदले में वे उनकी भतीजी अर्थात् गजेन्द्र सिंह की बहिन इन्दु को चाहते हैं, रुपया लौटाने में असमर्थ होने के कारण चौधरी जी तो किसी भांत राजी हो गये किन्तु गजेन्द्र सिंह ने इस का कड़ा विरोध किया, बस इसी हेतु वह कैद किये गये हैं"॥

जब तक राधे लाल यह वृत्तान्त कहता रहा, बड़े सन्नाटे में बैठे हुये सब उसे सुनते रहे। उसकी बात

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समाप्त होने पर बलबीर सिंह लाल २ नेत्र कर बोले "मैं तो बिहारी सिंह को बहुत भला आदमी जानता था परन्तु वह तो 'विष भरे कनक घट' जैसा निकला, और उस पिशाची प्रकृति माधव सिंह को मैं क्या कहूं, उस की सुकीर्ति तो संसार में स्वयं ही फैल रही है। अस्तु; अब मैं इसी समय जाकर उसको इस ढिठाई का मज़ा चखाता हूं"। ऐसा कह कर वह चलने को उद्यत हुये कि सूर्य्य प्रताप सिंह ने उनका हाथ पकड़ बैठाल कर कहा "आप अधीर न हूजिये, मैं भी तो आप के साथ चलता हूं, परन्तु मेरी समझ में पहिले पिता जी से आज्ञा ले लेनी चाहिये क्योंकि बिना उन से पूंछे ऐसा कार्य करना ठीक नहीं"। इस को बलबीर सिंह ने भी माना और दोनों महाराज के पास पहुंचे। सूर्य्य प्रताप सिंह के पिता राजा जगत सिंह बलबीर सिंह को देख बहुत प्रसन्न हुये और सब को सादर बैठाया। सूर्य्य प्रताप सिंह ने माधव सिंह, बिहारी सिंह तथा गजेन्द्र सिंह का समस्त वृत्तान्त आदि से अंत तक अपने पिता को सुनाया और कहा "अब आगे जैसी श्रीमान् की आज्ञा हो किया जावै"॥

राजा जगत सिंह बड़े ही धर्मात्मा और सच्चरित्र

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनुष्य थे, वह इस अन्याय और कन्या विक्रय की कथा को सुन बहुत मर्माहत हुये और बोले "अवश्य ही इस में दोनों को दण्ड देना चाहिये, परन्तु जहां तक हो सकै व्यर्थ रार बढ़ाना भी ठीक नहीं, इसलिये पहिले माधव सिंह के पास दूत भेज कर गजेन्द्र सिंह व वृजकिशोर को छोड़ देने व उनको इस अन्याय कर्म के त्यागने का प्रस्ताव करना चाहिये, यदि मान गये तो अच्छा ही है, नहीं फिर युद्ध करके तो उन्हैं छुड़ाना ही होगा। अस्तु; केशरी सिंह को बुलाव कि वह इसी समय कृष्ण गढ़ को चले जावैं" ॥

इसके अनन्तर केशरी सिंह आये और राजा साहब ने उन्हैं खूब समझा बुझा कर, सौ सवारों के साथ उसी समय, रातो रात, कृष्ण गढ़ को रवाना किया ॥

इस समय सूर्यास्त होने को थोड़ाही विलम्ब था, इस हेतु राजा साहब सन्ध्या का समय निकट जान सन्ध्या-बन्दनार्थ वहां से उठे और इधर दोनों कुमार भी घोड़ों पर चढ़ वायु सेवनार्थ चल दिये ॥

चौथा परिच्छेद

॥ कृष्णगढ़ दुर्ग ॥

कृष्ण गढ़ दुर्ग बड़े मार्के का बना हुआ है इस का

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घेरा कोई दो कोस का है, एक पहाड़ी के लम्बे सिल-सिले में सब से ऊंची पहाड़ी पर बैठ कर यह अपने विपत्तियों को कुछ भी नहीं समझता, फाटक इसका उत्तर की ओर है, और कृष्णा गढ़ नगर यहां से पाव कोस की दूरी पर बसा हुआ है; पश्चिम की ओर क़िले के नीचे जो एक कोस का मैदान पड़ गया है कैसा सुहावना मालूम होता है॥

क़िले की बाहरी परिकार बीस गज़ ऊंची तथा सात गज चौड़ी मज़बूत पत्थर की बनी हुई है, जिस पर सौ सौ गज़ के फ़ासले से ऊंचे २ बुर्ज़ बने हैं, परिकार के ऊपर एक दीवार और भी है, जिस में गोला गोली आदि छोड़ने के लिये रंध्र भी रक्खे गये हैं। इस के अतिरिक्त इस के चारों ओर चौड़ी और गहरी खाई भी बनाई गई है जिस से वहां होकर किसी की गति नितान्त असम्भव है; केवल फाटक की ओर एक रास्ता है, जो पुल बांध कर बनाया गया है, उस पर बड़ा बिकट पहरा रहता है। सारांश यह कि सदर फाटक को छोड़ और कहीं से किसी का क़िले के अन्दर जाना या निकलना बड़ा ही कठिन है, बिना आज्ञा फाटक से भी कोई आ जा नहीं सक्ता॥

क़िले के अन्दर लम्बा चौड़ा मैदान है, जिस में एक

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुन्दर पुष्प वाटिका लगी है उसके बीचों बीच एक बारह-दरी है; राजा साहब का दरबार बहुधा इसी में हुआ करता है। राज भवन पश्चिम की ओर, कचहरी कार्य्यालय उत्तर की ओर, हयशाला पशु शालादि पूर्व की ओर तथा सैनिकों की लैन दक्षिण की ओर हैं॥

क़िले के सब बुर्ज़ों पर भी सिपाहियों के डेरे हैं, जहां वह हमेशा बड़ी मुस्तैदी से डटे रहते हैं; तात्पर्य्य यह कि यह दुर्ग ऐसा सुदृढ़ और सुरक्षित है कि सहसा किसी का उस पर विजय पा जाना अत्यन्त दुरूह है। किन्तु नगर की अवस्था इस से विपरीत है, उसकी गिरी हुई विशाल इमारतें बतला रही हैं कि किसी समय वह बहुत ही रमणीक होगा, परन्तु अब तो वह दीन हीन जनों की नाईं अपने दिन टेर कर रहा है। ज्ञात होता है यह सब इन्हीं धर्मात्मा राजा साहब के सुप्रबन्ध का फल है॥

राजा माधव सिंह नाटे क़द के मोटे ताज़े पैंतीस वर्ष के व्यक्ति हैं। राजा की पदवी परम्परा से इन के घराने में चली आती है, इस कारण अत्यन्त अयोग्य होने पर भी आप उसे धारण किये हुये हैं; देखना चाहिये

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आप की यह 'ढोल की पोल' कब तक चलती है। पिता आप के बड़ेही धर्मात्मा थे, प्रजा उनके समय में अत्यन्त सुखी थी, परन्तु आप में कई दोष ऐसे आ पड़े हैं जिस से सर्व साधारण की दृष्टि से आप उतर गये हैं। तमाशबीनी, जुंआबाजी, शराबख़ोरी, लूट खसोट, प्रजा को व्यर्थ कष्ट दे रुपया ऐंठना इत्यादि दुर्व्यसनों का आप को ऐसा चसका पड़ गया है कि जिस से आप घृणा के पात्र हो रहे हैं और इस राज्य में बस कर सुखी कोई भी नहीं हैं। ऐसे व्यक्ति की बाहर कितनी कीर्ति हो सकती है सो तो आप जानते ही हैं। और भी इनका महात्म्य सुनिये कि युवावस्था में आप ने एक हुसैनी नाम्नी लखनऊ की वेश्या को रख लिया था, यद्यपि वह अब कृष्ण गढ़ का राज्य छोड़ कर "यमगढ़" (Hell) का राज्य करने चली गई है, परन्तु उपरोक्त गुणावली विद्यमान रहते हुये कोई भी क्षत्रिय अपनी कन्या श्रीमान् को नहीं देना चाहता॥

इस अवस्था तक पहुंचने पर यद्यपि कभी २ आप अपने "शुभ गुणों" की ओर लक्ष कर अकेले में पश्चाताप कर लेते हैं परन्तु उन्हैं त्यागते नहीं। आप के हृदय में किसी उच्च वंशीय कन्या से व्याह करने की गहरी लालसा

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग रही है, इस हेतु चारों ओर सर पटक कर आप हैरान हुये, पर मनोर्थ सिद्ध नहीं हुआ। चौधरी बिहारी सिंह के स्वभाव से आप भली भांत परिचित हैं, इसी कारण आप ने पहिले उन्हें पचास हज़ार रुपया ऋण दे कर पीछे इन्दुमती से व्याह करने का प्रस्ताव किया है। बात घूमते फिरते आप के अनुकूल ही हुई अर्थात् चौधरी जी रुपये मार खाने की प्रबल आकांक्षा से व्याह करने को राजी हो गये हैं, परन्तु एक अटकाव पड़ गया कि कन्या का भाई इस सम्बन्ध में सहमत नहीं होता, इसी कारण आप व चौधरी जी ने अपना २ स्वार्थ साधने के अभिप्राय से गजेन्द्र सिंह को मार या आजन्म क़ैद कर अपना रास्ता साफ़ करना चाहा है। दोनों के परामर्शानुसार ही चौधरी जी ने गजेन्द्र सिंह को लाल गढ़ की ओर भेजा और आप के सेवकों ने रास्ते में आक्रमण कर उनको अवरुद्ध कर लिया है॥

राज्य का काम राजा माधव सिंह स्वयं कभी नहीं देखते, वह मंत्री द्वारा ही चलता रहता है। आप तो सदा अपने मुसाहिबों के साथ, जिन का राज्य प्रबन्ध से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, कभी किसी प्रजा को कोई झूठा अपराध लगा उससे रुपया लेने, कभी किसी उन्नति करते

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुये किसी व्यक्ति को अवनति के गढ़े में ढकेलने, कभी किसी की सुन्दर बहू बेटी को पकड़ने इत्यादिक न्याय विरुद्ध विषयों पर अहर्निशि सलाह किया करते हैं ॥

हा ॥ कैसे शोक का विषय है कि उस दीन दयाल परमात्मा ने जिस व्यक्ति को आदमी जैसे सुयोग्य जीवों का अधिपति बनाया और धन शक्ति से भली भांत परिपूर्ण कर हज़ारों लाखों जनों पर अधिकार प्रदान कर उनके भरण पोषण व रक्षा का भार उसको दिया, वही ऐसा कुत्सित वर्ताव करै; और धर्म नीति को तिलांजुलि दे अधर्म व विषयों में लिप्त हो राज्य सिंहासन पर बैठ कर प्रजा की पुकार सुन उसका यथोचित् संतोष न कर अन्यायी बनै; उस को महा प्रतापी रावण तथा महा ऐश्वर्य्यशाली दुर्योधनादि की जो गति हुई उसे स्मर्ण करना चाहिये; ऐसे कार्य्यों से वह केवल अपनी ही हानि नहीं करता वरन ईश्वरीय नियम के सर्वथा विरुद्ध वर्त्तता है; स्वर्गीय न्यायालय में उस को अपने कृत्यों का उचित उत्तर देना पड़ैगा और उस में समर्थ न होने पर किसी रौरव सरीखे भारी नरक में पड़ कर केवल यंत्रणा ही नहीं भोगना पड़ैगी, वरन वहां बड़े २ कीड़े उस के अंगुष्ट प्रमान शरीर को काट २ कर अहर्निशि व्याकुल करते रहैंगे;

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस की प्रजा की 'आह' सर्वदा उस पर पड़ेगी और वहां वही उस के विरुद्ध साक्षी रूप होगी। अस्तु; राजा माधव सिंह सब को छोड़ एक काम अवश्य अपने हाथ में लिये हुये हैं अर्थात् सैनिकों का निरीक्षण वा उन्हें रखना तथा निकालना; सो यह एक कारण वश कि आप को अपने मन माने मन्तव्यों को पूरा करने में सेना से पूरी पूरी सहायता मिलती है ॥

पहर भर दिन चढ़ा होगा, राजा माधव सिंह अपने कुटिल मुसाहिबों के साथ गप्पैं उड़ाने में लगे हैं कि चोबदार ने मंत्री के आने की सूचना दी। आज्ञा पा मंत्री आया और सादर प्रणाम कर बैठ गया। मंत्री का आगमन सुन सब मुसाहब इधर उधर छिप रहे, केवल काले खां नामक एक व्यक्ति वहां रह गया ॥

मंत्री ने विनय से कहा "शंकर गढ़ाधीश के यहां से सर्दार केशरी सिंह एक पत्र लाये हैं"। इस पर राजा साहब बोले "तो लाइये, और पढ़ कर मुझे सुनाइये, देखें क्या बात वे उस में लिखते हैं" ॥

मंत्री—मेरी समझ में एक प्रतिष्ठित सर्दार के हाथ से पत्र लेकर इस भांत एकान्त में सुन लेना ठीक नहीं

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जंचता क्योंकि ऐसा करने से यहां के राज्य दर्बार की निन्दा होगी, इसलिये 'बारहदरी' में दर्बार का सब 'इन्तज़ाम मैं कर आया हूं अब केवल हुज़ूर के पधारने की ही देर है॥

राजा०–किन्तु इस समय तो वहां जाने से मेरा बड़ा नुक़सान होगा पर आप के आग्रह से चलता हूं। खैर, आप यह तो बताइये कि वहां समय तो कुछ ज़्यादा नहीं लगेगा।

मंत्री–नहीं श्रीमान्, कुछ भी ज़्यादा नहीं॥

निदान दर्बारी पोशाक पहिन राजा माधव सिंह मंत्री के साथ जा कर बारहदरी में एक सिंहासन पर जा बिराजे; वहां उन के सर्दारगण प्रथम ही से आ बैठे थे, अस्तु, उन के आते ही सब ने उन्हें अभिवादन किया और फिर अपनी २ जगह बैठ गये। थोड़ी देर के पश्चात् मंत्री ने सर्दार केशरी सिंह को बुलावाया, जहां उन्हों ने बड़ी आन बान के साथ पहुंच कर एक पत्र राजा साहब के सामने तख़्त पर रख दिया॥

राजा माधव सिंह ने केशरी सिंह को बैठने के लिये कहा और पत्र अपने हाथ से उठा कर मंत्री के हवाले कर

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पढ़ने के लिये इशारा किया। मंत्री ने उसे पढ़ कर सब को सुनाया। उस का सार यह है-"कुंवर गजेन्द्र सिंह व हमारे मंत्री पुत्र वृजकिशोर को आप ने अकारण ही कैद कर रक्खा है, कृपा पूर्वक उन्हें सर्दार केशरी सिंह के साथ भेज दीजिये। हम सब एक ही प्रान्त के राजा हैं इस हेतु सब को मिलकर शांति पूर्वक रहना चाहिये"॥

पत्र का आशय समझ राजा माधव सिंह ने कहा "शंकरगढ़ाधिपति हमारे शत्रु नहीं हैं, फिर व्यर्थ दूसरे के पीछे क्यों नई शत्रुता पैदा करते हैं? गजेन्द्र सिंह से हमारा ऐसा ही मामला आ पड़ा है जिस से वह यहां रोक लिया गया; और दूसरा आदमी, जो अब मालूम हुआ कि तुम्हारे दीवान का बेटा है, उस की सहायता करता हुआ पकड़ा गया है, इस हेतु वह भी गजेन्द्र सिंह के समान अपराधी है; दोनों को बिना सज़ा दिये हम नहीं छोड़ सकते। फिर अपराधियों की सहायतार्थ तुम क्यों विरोध करते हो? यदि तुम्हारा कोई अपराधी हो तो उसे क्या तुम यों हीं छोड़ दोगे, अस्तु तुम्हारा इस मामले में पड़ना अनुचित है"॥

केशरी सिंह-आप को भली भांत विदित है कि गजेन्द्र सिंह जी से हम लोगों का कैसा सम्बन्ध है; आप

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन का अपराध बताइये, उन के अपराधी सिद्ध होने पर हमारे महाराज आप से कुछ न पूछेंगे; किन्तु केवल आप के मन गढ़ंत अपराध से कोई दण्डनीय नहीं हो सकता, कोरे वादा विवाद से हम उन की सहायता से रुकने वाले नहीं हैं, इसलिये या तो आप उन्हैं हमारे हवाले कर दें या उन का अपराध बता दें तो बहुत अच्छा हो ॥

राजा०-हम उस का अपराध इस समय प्रकट नहीं कर सकते। राजाओं के बहुधा ऐसे अपराधी हुआ करते हैं जिन का अपराध गुप्त ही रख कर मन माना दण्ड दिया जाता है; गजेन्द्र सिंह हमारा ऐसा ही अपराधी है, और वृजकिशोर उस का सहायक होने से उसी के समान हुआ; अतएव दोनो को उचित दण्ड दिया जायगा। तुच्छ मनुष्यों के पीछे शक्तिवान् राजा महाराजाओं की मित्रता खंडन होना ठीक नहीं ॥

केशरी सिंह-जो आज्ञा आप देते हैं वह जाकर मैं महाराज से निश्चय ही निवेदन करूंगा, किन्तु एक प्रतिष्ठित पुरुष को इस भांत मन माना अपराध लगा कर क़ैद कर रखना न्याय के सर्वथा प्रतिकूल है; ऐसा अंधेर हमारे यहां नहीं है इस कारण ऐसा अन्याय होने देना भी हम सहन नहीं कर सकते। मेरे ख्याल से हमारे मित्रवर

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गजेन्द्र सिंह व सेनापति कुमार वृजकिशोर को इस प्रकार क़ैद कर आप हमारा घोर अपमान करने पर उतारू हुए हैं, अतएव इस विषय पर फिर विचार कर उत्तर दीजिये ॥

राजा०–हमारा स्पष्ट उत्तर यही है कि वह दोनों हमारे अपराधी हैं बिना पूर्ण दण्ड पाये उन का छूटना कठिन है ॥

राजा माधव सिंह के इस प्रकार कहने से दर्बार में एक प्रकार सन्नाटा छा गया और सब सिर नीचे किये रह गये, मंत्री भी कठपुतली बन गया, परन्तु कोई बोला कुछ नहीं। केशरी सिंह ने यह सब ताड़ कर कहा "आप का यह उत्तर ठीक नहीं हुआ, फिर सुनिये कि हमारे पक्ष के माननीय पुरुषों को निरा पराध ही दुःख देने की ठान आप ने हमारा कठोर अपमान करने का संकल्प किया है, यह आप की भारी अनीति है, इस का फल अच्छा नहीं होगा" ॥

राजा०–जैसा तुम कहते हो वैसाही सही, अब, जैसा तुम्हें जान पड़े सो करना।

केशरी०–मनुष्य का धर्म है कि भूले हुए को मार्ग पर लावै सो जहां लों मुझ से बना मैं आप से कह चुका, अस्तु मैं अब बिदा होता हूं ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसा कह कर क्रोध से भरे हुये केशरी सिंह वहां से बाहर चले गये। माधव सिंह को तो वहां बैठना अप्रिय था ही, तुरन्त उठ कर वे राजभवन की ओर चले गये, और इधर मंत्री आदि भी इस विवाद का परिणाम बिचारते दर्बार से चल दिये। मंत्री ने केशरी सिंह के पास जा कर बिश्रामार्थ ठहरने का आग्रह किया किन्तु उन्हों ने बहुत कुछ कृतज्ञता प्रगट करते हुये कहा "सेवक वृति में बिश्राम कहां ?" यह यथार्थ उत्तर पा मंत्री चुप रह गया, और केशरी सिंह ने निज अश्वारोहियों के साथ शंकर गढ़ का रास्ता लिया॥

पाचवां परिच्छेद

॥ बालिका पर दो विपत्ति ॥

"परमेश्वर की संसार रूपी रंग भूमि के दृष्य कुछ समझ में नहीं आते, अभी कुछ और है और क्षण उपरान्त देखते २ कुछ और हो जाता है। मनुष्य स्वभाव भी उस की विचित्र सृष्टि का एक स्पष्टी कारण है, वह इस समय सच्चे मन से किसी के साथ भलाई करने का संकल्प करता है, तो थोड़ी ही देर पश्चात् उस का घोर शत्रु बन

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाता है। जो कल रोता था, आज हंसता है, जिसे अभी घंटे भर पहिले हंसते देखा था, वही अब कपाट पर हाथ धरे गहरी चिन्ता में अवसन्न हो रहा है। क्षण २ नवीन चमत्कार दिखाई देते हैं। एक विचित्र बात यह भी है कि मेरा सगा भाई और मैं ही न जानूं कि आज पांच दिन से कहां है, तिस पर भी तुर्रा यह कि मेरे पिता तुल्य चाचा पूछने पर कुछ उत्तर नहीं देते, और न कुछ पता लगाने का भी कोई प्रबंध किये मालूम होते हैं। चाचा ने क्यों ऐसी रुखाई धारण की है, समझ नहीं पड़ता। क्या उनके हृदय में किसी कपट भाव का संचार हुआ है? बिचारने की बात है कि मेरे चाचा और मुद्दत से निकाली हुई उस वैतनिक दासी में कितना अंतर है, कि वह सगे होकर भी मेरी कुछ सांत्वना नहीं करते और वह जीर्ण बुढ़िया होने पर भी भैया का पता लगाने गई है। दासी तो ऐसी सहानुभूति प्रगट करै और आत्मीय तनक न कसकें। आहा !! बिधाता तेरी रंग भूमि के एक समान पात्रों के हृदय में ऐसी बिभिन्नता क्यों ?"—ये उपरोक्त बातें चौधरी बिहारी सिंह की अंग-नाई में बैठी हुई इंदुमती बहुत धीमी और ठिठकती हुई आवाज़ में कह गई। वह हाथ में सुई तागा लिये एक सलूका बना रही है, परन्तु काम ठीक २ न होने के

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारण साफ़ प्रगट हो रहा है कि उपरोक्त विचार एक दूसरे के उपरान्त आकर इसके चित्त को चंचल कर रहे हैं। इससे कुछ दूर हट कर बिहारी सिंह की दोनों बेटियां, कमला और चंचला, अपनी २ गुड़ियों का शृंगार बनाये हुये उन के साथ खेल में लगीं हैं। तीनों अपनी २ 'धुनि' में ऐसी मस्त हैं कि एक दूसरे की सुधि नहीं रखतीं॥

इतने में कमला सहसा अपना खेल छोड़ इन्दु के पास आई और कंधे पर हाथ धर के बोली "जीजी! देखो, मेरी गुड़ियां अब व्याहने योग्य हुईं, यदि मैं जल्द ही उन का व्याह न करूंगी तो लोग मुझे नाम धरेंगे, सो तुम मुझे कोई उत्तम 'बर' ढूंढ़ दो तो मैं उससे सम्बंध कर उन से निश्चिंत हो जाऊं"। नहीं मालूम कमला की इन बातों में क्या शक्ति थी कि जिस से इन्दुमती बड़ी मर्माहत हुई कि रोकने की हज़ार चेष्टा करने पर भी उस की आँखों से दो बूंद आंसू निकल ही पड़े और वह पसीने २ हो गई॥

पाठक वर्ग! अभी हम और आप उसके अश्रु विसर्जन का कारण नहीं समझ सकते, किन्तु आगे चल कर कहीं न कहीं वह आप ही प्रगट हो जावेगा। अस्तु; किसी तरह संभल कर आंसू पोंछ और अपने उमड़ते हुये हृदय को

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज़ोर से दबा इन्दुमती ने कहा "हां, बहिन! बात तो तुम ने अच्छी विचारी सो, अब यदि चंचला की गुड़ियों से तुम इन का व्याह कर देव तो बहुत अच्छा हो" ॥

कमला–इसी लिये न कि वे जानी मानी और सुन्दर हैं ?

इन्दुमती–हां बहिन! यही मेरे कहने का अभिप्राय था॥

यहीं तक बात होने पाई थी कि चंचला यह समस्त बातों सुन दौड़ी हुई इन्दु के पास आई और बोली "जीजी! यह तुम ने अच्छी सलाह कमला को दी क्योंकि मुझे भी अपनी गुड़ियों के व्याह करने की चिंता थी, अब मेरे 'बर' और इनकी गुड़ियां 'कन्या' रूप हुईं" ॥

इस पर सब खिलखिला कर हँस पड़ीं और कमला और चंचला अपनी २ गुड़ियों को ले जाकर फिर खेल में प्रवृत हुईं, इधर इन्दु भी किसी घोर चिन्ता में माथा झुका कर रह गई ॥

इन्दुमती अभी थोड़ी ही देर इस दशा में रही थी कि–"इन्दुमती क्या करती हो ?" सहसा इस आवाज़ ने आकर उस को चौंका दिया। अकचका कर उस ने शिर उठा देखा तो एक सुन्दर युवा को द्वार पर खड़ा पाया,

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विस्मित और प्रसन्न हो कर उस ने कहा "ऐं ॥ कब से आप यहां खड़े हुये हैं ? मैं तो अपने काम में ऐसी उलझी हुई थी कि मुझे आप का आना तक मालूम नहीं हुआ; कहिये कुशल तो हैं ?" ॥

युवा–हां, मैं तो अच्छा हूं; किन्तु क्यों इन्दु ! आज तुम्हारा मुख कैसा मलिन हो रहा है ? क्या तुम्हें कोई दुःख है ? ॥

इन्दु–नहीं, मुझे तो कोई दुःख नहीं पर हां एक बात ऐसी है जिसके कारण मेरा जी किसी काम में नहीं लगता और दिन रात चिन्ता लगी रहती है; बात यह है कि आज पूरे पांच रोज़ से भैया का कुछ पता नहीं है, मैं नहीं जानती वह कहां चले गये, मैं यहां किसी से इस बिषय में कुछ पूछती हूं तो कोई ठीक उत्तर नहीं पाती ॥

युवा–चौधरी जी तुम्हें कुछ भी नहीं बताते ? ॥

इन्दु–नहीं, वह तो दोनों यह पूंछते ही इधर उधर करने लगते हैं इस हेतु मैं और भी अधीर हो रही हूं ॥

युवा–वह दोनों इस समय हैं कहां ? और कब तक यहां आवेंगे ? ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन्दु-वह दोनों ऊपर हैं और यहां अभी बड़ी देर लों न आयेंगे ॥

युवा-अच्छा सुनो अब मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम्हारे चाचा बड़े कुटिल हैं, गजेन्द्र सिंह जो कई दिन से नहीं आये सो यह सब इन्हीं की करतूत है, मुझे कहते बड़ी लज्जा आती है कि तुम्हारे चाचा पचास हज़ार रुपये के लोभ में आकर कृष्णगढ़ के राजा माधव सिंह से तुम्हारा ब्याह करना चाहते हैं, गजेन्द्र सिंह इस सम्बन्ध के विरुद्ध हैं, बस इसी कारण वह उक्त राजा के यहां क़ैद कर लिये गये हैं और राजा साहब व चौधरी साहब की इच्छा है कि जब तक तुम्हारा ब्याह उस के साथ न हो जावे वह वहीं बंदी रहें; परन्तु यथार्थ में क्या होगा सो अभी भविष्य की गोद में है ॥

इस समाचार से अबला के हृदय पर कठिन आघात पहुंचा। किन्तु इन्दुमती आज कल की कन्या और बालिकाओं की नाईं हौआ और भूत आदि से डरने वाली बालिका नहीं, वह बीर पिता की सन्तान, बीर भाई की भगनी, बीर हृदय बालिका थी, इस हेतु बीरोचित तेज से उस की रग रग का खून खौल उठा, नेत्र लाल हो

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गये और होंठ फड़कने लगे। यह भाव भी उसने चतुरता से तुरंत छिपा लिया और कहा "धिक्कार है मेरे चाचा को जिस ने अपने ही आश्रित के साथ ऐसा विश्वासघात किया और धिक्कार है मेरे जीवन और शरीर को कि मेरे हेतु भैया को क़ैद का कष्ट भोगना पड़ा और मैं सुख से घर में बैठी हूं, मेरे इस जीने से तो मर जाना कई हज़ार गुणा अच्छा है" ॥

यह सुन युवा बोला "अभी मेरी बात पूरी तो सुन लेव फिर जो चाहे सो कहना। तो हां, कुमार सूर्य्य प्रताप-सिंह ने, जिन को तुम भली भांत जानती हो, किसी भांत इस सब भेद का पता लगाया और एक सर्दार को माधव सिंह के पास भेज कर गजेन्द्र सिंह को छोड़ देने के लिये कहा, किन्तु वह तो महा दुर्बुद्धि और हठी है, उसने उन को नहीं छोड़ा, अतएव अब लड़ कर बल पूर्वक छुड़ाने की योजना हो रही है और दोही एक रोज़ में लड़ाई शुरू हो जाना संभव है। अस्तु; यही समाचार तुम्हें देने मैं यहां आया हूं, अब तुम किसी बात की चिन्ता न करना, परमेश्वर ने चाहा तो शीघ्र ही गजेन्द्र-सिंह तुम से मिलेंगे" ॥

इन्दुमती—भैया के बिना तो मुझे कुछ भी अच्छा नहीं

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लगता और यह घर शून्य सा दिखाई देता है किन्तु अब मैं आप के कहने से धैर्य रक्खूगी ॥

युवा-हां, ऐसा ही करना चाहिये, अच्छा तो अब मैं जाता हूं ॥

ऐसा कह कर वह युवा बाहर चला गया और इधर बालिका को फिर अकेला पा उस के हृदय पर एक नई चिन्ता ने आ कर भयंकर वेग से आक्रमण किया ॥

जो युवा इस भांत चौधरी बिहारी सिंह की हवेली में इन्दुमती से बात चीत कर चले गये थे वह बलबीर-सिंह हैं ॥

छठवां परिच्छेद

॥ अपमान सहन नहीं होता ॥

शङ्करगढ़ नरेश राजा जगत सिंह का दर्बार आज बड़े समारोह के साथ लगा हुआ है; सिंहासन के दाहिनी ओर जड़ाऊ कुर्सियों पर कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह तथा कुंअर बलबीर सिंह बैठे हुये हैं; सिंहासन के दहिनी व बाईं ओर समस्त सर्दार व मंत्रीगण अपने २ स्थान पर बीरा-सन जमाये हैं। केशरी सिंह ने कृष्णगढ़ से लौट कर राजा

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माधव सिंह का उत्तर सुनाया, इस के पश्चात् 'अब क्या किया जाय' यही विषय आज के दर्बार का मुख्य प्रस्ताव है। अतएव सर्दारों की ओर देख राजा साहब ने कहा "राजा माधव सिंह ने हमारे पत्र का जो उत्तर दिया उस का मर्म तो आप लोगों पर भली भांत प्रगट हो ही गया है। किन्तु इसके पहिले का कुछ हाल आप को ज्ञात न होगा जिसे हम बताते हैं कि-हमारे अन्तरङ्ग मित्र ठाकुर मान सिंह के पुत्र 'गजेन्द्र सिंह' किसी कार्य्य वश लालगढ़ की ओर जा रहे थे, राजा माधव सिंह ने निरापराध ही अपने सवार भेज रास्ते में घायल कर उनहैं पकड़ लिया। समय की संकीर्णता होने के कारण स्वयं आने में असमर्थ हो कर बलबीर सिंह ने यह ख़बर यहां भेजी, और यहां से उनकी सहायता को बृजकिशोर भेजा गया। वे दोनों बड़ी बहादुरी से लड़े और बहुतों को मारा, परन्तु और विपक्षी सहायता आ जाने से अन्त में वे दोनों बन्दी हुये। इसी के लिये केशरी सिंह वहां भेजे गये थे परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ, अब बिना लड़ाई छिड़े उनका वहां से छूटना नितान्त असम्भव है, इसलिये तय्यारी कर शीघ्र वहां जाना चाहिये जिस में वह उन का कहीं कुछ और अनिष्ट न कर बैठे" ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस पर सब सर्दारों ने कहा "श्रीमान् की आज्ञा हमारे शिर और आंखों पर है"। यह सुन फिर राजा साहब बोले "हमारी कदापि यह इच्छा नहीं रहती है कि किसी से विरोध हो किन्तु माधव सिंह ने अकारण ही इन दोनों को पकड़ कर अपने यहां अटका रक्खा है, इस के अतिरिक्त हमारे मांगने पर उन्हें न देकर हमारा 'अपमान' भी करते हैं" ॥

एक सर्दार, जिस का नाम कुशलपाल सिंह था और जो अभी तक सब बातें सन्नाटे में बैठा हुआ सुन रहा था, अपने स्वामी के मुख से 'अपमान' शब्द सुन कर तमक उठा और खड़े हो तथा खड्ग को चमका कर बड़े आवेश से बोला "अवश्य ही यह बात अब यहां तक बढ़ गई है कि हम लोगों का हृदय इस अपमान का बदला लिये बिना मान नहीं सक्ता, जो कुछ बादा विबाद माधव सिंह के दर्बार में हुआ उस से इस दर्बार का घोर अपमान होता है जिसे हम लोग कभी सहन नहीं कर सकते अतएव सहर्ष युद्ध के लिये तय्यार हैं। आज्ञा दीजिये, अभी शत्रु के गर्व को दूर कर उस के दुर्ग को धूल में मिला दोनों आदमियों को छुड़ा लावैं" ॥

यह वाक्य सबों के हृदय में तीर के समान पैठ गये

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और बीरों की तलवारें म्यान में खनखना उठीं, सब ने एक साथ चिल्ला कर कहा "हां, हां, शीघ्र आज्ञा मिले" ॥

यह सुन राजा जगत सिंह बहुत प्रसन्न हुये और कहा "हम को पूरा विश्वास है कि आप लोगों की सहायता से शीघ्र ही शत्रु दमन हो कर निरापराधी जन व्यर्थ की यातना से मुक्त होंगे, अतएव अब सेना और युद्ध सामग्री शीघ्र दुरुस्त कर यहां से प्रस्थान करना चाहिये" ॥

इसके अनन्तर महाराज ने सेनापति रिपुदमन सिंह से कहा "आप सेना को तैयार रखिये, सायंकाल के समय हम उस का निरीक्षण करेंगे"। सेनापति ने यह आज्ञा शिरोधार्य की। इस के पश्चात् थोड़ी देर तक और भी आवश्यक विषयों पर विचार होता रहा और फिर दर्बार बरख़ास्त हुआ। सब जन अपने २ घर को सिधारे॥

कोई दो घण्टा दिन रहे राजा जगत सिंह कुमार सहित घोड़ों पर चढ़ कर नगर के बाहर, जहां सब सेना खड़ी थी, देखने को गये और उस को सब भांत दुरुस्त पा कर सेनापति की सराहना की और कहा "अय मेरे सर्दार और सैनिक गण! आप ही इस राज्य रूपी चक्र को यथार्थ संचालित करने के मुख्य यंत्र हो, बिना आप

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की सम्मति और उत्साह के कोई कार्य्य हस्तगत करना मानो किसी यंत्र के कल पुरजे निकाल कर उसे ठीक २ चलाने का व्यर्थ प्रयत्न करता है। असल में इस राज्य की बागडोर तुम्हारे ही हाथ में है। जब हमें किसी कुमार्गी को उस के कुकर्म का दण्ड देना होता है वह तुम्हारे बिना कहां हो सक्ता ? निदान इस समय राजा माधव सिंह से काम आ पड़ा है, जिन्हों ने हमारे दो माननीय पुरुषों को निरापराध ही बन्दी कर रक्खा है, और पूछने पर उनका अपराध नहीं बताते, अर्थात् उनका कोई अपराध है ही नहीं। तो फिर क्या उन्हें इस आपत्ति से मुक्त करना और माधव सिंह को इस अनुचित कार्य के लिये दण्ड देना आप का कर्त्तव्य नहीं है ? अवश्य है। तिस पर भी देखो हमने उक्त राजा को यह अनीति और हठ छोड़ देने के लिये समझाया परन्तु उन्हों ने उसे अस्वीकार कर हमारा बड़ा अपमान किया, क्या आप लोग अपने राज्य का अपमान चुपचाप सह सकते हैं ? कदापि नहीं। बस यही सब विचार कर दृढ़ चित्त से लड़ने के लिये तय्यार हो, क्योंकि संसार की समस्त परिपाटियां आप ही के द्वारा प्रचलित होती हैं, न्याय, शांति आदि देश की बिभूतियों के आप ही लोग रक्षक हैं, राजकीय

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कल के पुरजे आप ही लोग हैं इस कारण यह काम भी अब आप लोगों को सौंपा जाता है। पूर्ण आशा है कि आप लोग इसे करके ही निश्चिंत होंगे और राज्य का मान रख अपनी अनादि कीर्ति को चिरस्थायी करेंगे" ॥

उत्साह और बीर रस से सराबोर अपने स्वामी के यह बचन सुन कर समस्त सैनिक युद्ध लालसा से मस्त हो शत्रु तथा अपने प्राणों को तुच्छ समझने लगे, और धनुष बाण, तलवार, बर्च्छे, गुर्ज इत्यादि दृढ़ता से हाथों में थामें हुये एक साथ बोल उठे "हम इसी समय बैरी का गर्व गारने के लिये तय्यार हैं" ॥

इस पर राजा साहब ने कहा "हम ने ऐसा ही जान और ऐसा ही आप लोगों को समझ यह काम अपने माथे ले रक्खा है। अस्तु; सेनापति जी! राह के लिये जिस चीज़ की आश्यकता हो, वह आजही प्रस्तुत हो जावै, क्योंकि कल सवेरे ही यहां से कूंच हो जाना है"। इतना कह कर राजा जगत सिंह व कुमार महल को सिधारे और इधर फौज में जिस वस्तु की कमी थी उस का प्रबन्ध होने उगा ॥

कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह ने इस लड़ाई में जाने की आज्ञा प्रथम ही राजा साहब से ले ली थी, इस कारण

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्हों ने दो घड़ी रात रहे उठ कर, शौच आदि से निवृत हो, पूजा पाठ कर, वस्त्र धार, अस्त्र शस्त्रों से सज, प्रथम अपने पिता, तदुपरांत अपनी माता के पास जा कर प्रणाम किया। माता ने पुत्र का यह बीर भेष देख कर हर्ष से गद गद हो छाती से लगा लिया और बड़े लाड़ के साथ पीठ पर हाथ फेर तथा माथे में टीका लगा कर प्रसन्नता से बिदा किया॥

कुमार द्वार पर आ समस्त सैन्य को तय्यार खड़ी देख बहुत प्रसन्न हुये तथा तुरन्त एक सुसज्जित तत्तव तुषार पर सवार हो, अपने कुल देवताओं को नमस्कार कर अग्रसर हुये। उन के बगल में कई सर्दारों सहित सेनापति रिपु-दमन सिंह व पीछे सब सैनिक गण "जय दुर्गा, जय भवानी" कहते हुये जाने लगे॥

राजा जगत सिंह इस समय महल के सब से ऊंचे हिस्से पर से यह सब दृष्य देख कर फूले अङ्ग नहीं समाते थे॥

बीरपुर नगर के राज कुमार बलबीर सिंह, जो अपने पिता से आज्ञा व सेना लेने चले गये थे, मार्ग में कुमार से आ मिले और फिर दोनों मित्र साथ ही साथ उत्साह से भरे हुये बड़े उमंग से कृष्णगढ़ की ओर जाने लगे॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सातवां परिच्छेद

चापलूस मुसाहब ।

आइये पाठक ! हमारे साथ कृष्णगढ़ चल कर ज़रा राजा माधव सिंह के किले में पधारिये और देखिये कि आज वह अपने राज महल के एक निहायत ही सजे कमरे में अपने दो चार मुसाहिबों के साथ बैठे कैसे गूढ़ विषय पर सलाह कर रहे हैं ॥

सलाह किस बात की है सो वह भी सुनिये—गजेन्द्र सिंह, जो उनके काम में कांटे के समान थे, क़ैद कर लिये गये, अब इन्दुमती के साथ खुशी २ शादी होगी, कोई रोकने वाला नहीं, बरसों से जिस काम की फ़िक्र थी, वह सहज ही में हो गया, किन्तु अब उस के लिये दो लाख रुपये की आवश्यकता है, एक लाख तो बर की ओर से ख़र्च होगा, और बिहारी सिंह ने कहला भेजा है कि व्याह के लिये इन के पास रुपया नहीं, सो एक लाख उन को देना है। सुन्दर और उच्च वंशीय कन्या के साथ व्याह होने की खुशी में दो लाख रुपया ख़र्च करने का आपने पक्का विचार कर लिया है। राज्य कोष में, यद्यपि

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रुपया है, परन्तु वह आप खर्च नहीं करना चाहते, और यही चाहते हैं कि इतना रुपया कहीं बाहर से आ जावै तो बड़ा ही अच्छा हो। बस; इसी विषय पर राजा साहब ने यों बात शुरू की "क्यों जी कौन सा आदमी है जिस से हम इतना रुपया ले सकते हैं?"। इस पर उन का मुह लगा काले खां मुसाहब बोला "हुजूर! मेरी दानिश्त में तो इस के लिये वही जानकी मल्ल सेठ ठीक जचता है क्योंकि आज कल इस शहर में उस की सानी कोई माल-दार नहीं है" ॥

माधव०-हां कहा तो तुम ने ठीक है, परन्तु कैसे इतना रुपया उस से लिया जावै ? ॥

काले खां—ओह यह तो एक बिलकुल ज़रा सी बात है ॥

माधव०-भला बताव तो सही ॥

काले खां-मेरे यहां एक निहायत हसीन "ज़हूरन" नाम की ख़ादमा है, वह जा कर रास्ते में उसे छेड़े, बस उसी मौके पर ज़िनाकारी के इल्जाम पर वह फ़ौरन हिरासत में ले लिया जाय; फिर हुजूर देखें, रुपया आने में कितनी देर लगती है ॥

माधव सिंह यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुये और बोले "तुम तो बड़े चतुर मनुष्य हो !!!" ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काले खां—यह मेरी खुश किस्मती है कि हुजूर मेरी राय को पसन्द फ़रमाते हैं वरना मैं तो किसी लायक नहीं ॥

ऐसे २ चतुर और प्रवीण तथा राजनीतिज्ञ मुसाहब जब राज्य में जमा हों तब वह क्यों न उन्नति शाली हो कर अपनी यशो ज्योत फैलाने में समर्थ हो ॥ अस्तु;

इतनी बात होते होते कोई पहर भर रात बीत गई, तब ब्यालू का समय निकट जान माधव सिंह अन्तः पुर में चले गये और काले खां आदि वहां अकेले रह गये। एकान्त देख लाल खां नामक एक मुसाहब बोला "खां-साहब! अब तो आप के जुल्म हद्द दरज़े को पहुंच गये, ख्याल रक्खो, इस तरह अपनी रियाया को तङ्ग करने का अजाब सिर्फ़ उन्हीं पर नहीं होगा बल्कि उन्हीं के साथ २ आप भी दोज़ख़ में गिराये जांयगे" ॥

यार महम्मद—हां बात तो येांही है, फिर इस की कुछ हद्द भी तो होनी चाहिये, ओफ़ कुछ ठिकाना, आप एक दम 'दो लाख' उस से ऐंठना चाहते हैं ॥

काले खां—अजी तुम लोग कुछ भी नहीं समझते, क्या ऐसे २ बेवकूफ़ सर्दार हमेशा थोड़े ही मिला करते हैं, ऐसे

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मौक़े पर अगर पैदा कर लेंगे तो हमारे बाल बच्चों के काम आवेगा, दोज़ख़ में कौन जाने क्या होता है ॥

लाल खां—आप तो भई बला के आदमी हैं, अजी-जनाब ! दोज़ख़ बराबर तक़लीफ़ और कहीं भी नहीं है ॥

काले खां—खैर होगी, मैं इसकी परवाह नहीं करता ॥

लाल खां—हां आप इस की क्यों परवाह करने लगे, मगर भाई मैं इस के ख़िलाफ़ हूं, बेचारे गरीब आदमी, जो खुद ही मेहनत कर पैदा करते और राजा ही को वाल-दैन मान उस के ज़ेर साया रहते हैं, उन को इस तरह झूठी तुहमत लगा के लूटना निहायत ही बेजा है, अफ़-सोस, ऐसे राजा की सुहबत से हम लोग भी ज़रूर दोज़ख़ रसीद होंगे, खां साहब ! ऐसी मुसाहबी से मैं बाज़ आया, यह आप ही को मुबारक हो ॥

काले खां—अख़्खा, अब तो आप शरह के बिलकुल पावन्द हो गये ॥

यहां तक बात होने पाई थी कि राजा माधव सिंह आकर फिर गद्दी पर आसीन हुये और उन्हों ने काले खां से कहा "अनवर खां से कहो कि गुलाब जान के साथ फ़ौरन यहां आवै, और रोशनी यहां की और बढ़ाई जा कर दुगुनी कर दी जावै" ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आज्ञा होते ही शीघ्र रोशनी बढ़ा दी गई और एक चोबदार अनवर खां की ओर दौड़ गया। अभी वह लोग नहीं आये थे कि दूसरे चोबदार ने मंत्री के आने की इत्तला की॥

जिस पर माधव सिंह ने कहा "क्या कोई बड़ा ज़रूरी काम है जिस से इस समय ही मिलने की आवश्यकता है?" जिस पर चोबदार ने कहा "हां श्रीमान्, वह कुछ ऐसा ही ज़रूरी काम बतलाते हैं"॥

यह सुन काले खां बीच ही में बोल उठा "यह दीवान हमेशा ही इसी तरह रंग में भङ्ग किया करता है"। किन्तु माधव सिंह ने इस पर कुछ लक्ष नहीं किया और चोबदार से मंत्री के आने को कहा॥

मंत्री ने शीघ्र ही आ कर उन्हें अभिवादन किया और कहा "मैं एक बहुत ही ज़रूरी काम के लिये इस समय महाराज के पास आया हूं"॥

माधव सिंह—कहिये, कुशल तो है?

मंत्री—कुशल कहां!!! श्रीमान्! इसी भय मुझे यह खबर लगी है कि शंकर गढ़ के राज कुमार सूर्य्य प्रताप-सिंह बड़ी भारी सेना लिये आक्रमण करते हुये चले आ

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहे हैं, यहां से अठारह कोस पर जो देवपुर नामक गांव है उस पर उन्हों ने अपना अधिकार कर लिया, वहां का क़िलेदार भीम सिंह लड़ कर मारा गया। यह समाचार वहां के एक सवार ने आकर मुझे दिया है, अब जैसी आज्ञा हो किया जावै॥

माधव सिंह–ऐं !!! उन्हों ने तो बड़ी जल्दी से काम लिया, मुझे ऐसा विश्वास नहीं था कि गजेन्द्र सिंह के लिये वह इतना उपद्रव करेंगे नहीं तो मैं उन्हैं यहां तक आने का श्रम भी नहीं उठाने देता, परन्तु अब भी कोई हर्ज नहीं है। अच्छा, सेनापति को इसी समय बुलवाओ॥

मंत्री–(नम्र भाव से) समय आ पड़ने से मैं एक प्रार्थना करता हूं, आशा है आप उसे स्वीकार करेंगे–यह समय सुन्दर ठाट या वाक्चतुरता दिखलाने का नहीं है वरन शरीर पर शस्त्राघात सहन कर लहू से उसे रंगने का है, सो प्रसङ्ग वश यह कह देना मैं उचित समझता हूं कि यह काम लाल बहादुर से होने का नहीं इस हेतु अपने पुराने सेनापति दल थंभन सिंह को बुलवाइये तो कदाचित् वह विजय लक्ष्मी को प्रसन्न कर सकें॥

माधव०–ओह !! अब मैं विचारता हूं तो ज्ञात होता है कि मैंने बड़ी २ गलतियां की हैं; चापलूसों में फंस कर

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मैंने अपने हितेच्छुकों और शुभ चिन्तकों का बड़ा अपमान किया, अब परमेश्वर किसी भांति इस बला को टाले तो सब को मान सहित बुला कर यथा स्थान नियत करूं। दल थंभन सिंह अपमानित हो कर फिर कैसे यहां आवैगा?

मंत्री-आप इस के लिये कोई चिन्ता न कीजिये, दल-थम्भन सिंह बहुत ही उत्तम प्रकृति के जीव हैं, आप के सादर बुलाने पर वह सब पिछली बातें भूल कर बड़ी प्रसन्नता से ऐसे समय में साथ देने यहां चले आयेंगे॥

यह सुन कर माधव सिंह ने काले खां आदि की तरफ़ देखा कि इन में से किसी एक को वहां भेजें, परन्तु वह तो सब के सब मंत्री के आने और आक्रमण की बात सुनते ही काफूर हो गये थे, यह देख राजा साहब को क्रोध उत्पन्न हुआ, परन्तु वह समय क्रोध प्रकाश करने का नहीं था इस हेतु उसे हृदय ही में दबा ड्योढ़ी पर के एक चोबदार को पुराने सेनापति के घर भेजा॥

चोबदार के मुंह राजा की बुलाहट व चढ़ाई का हाल सुन सेनापति दल थम्भन सिंह ने शीघ्र कपड़े पहिने और महल में आकर राजा के आगे मस्तक झुकाया॥

क्या अब भी हमारे पाठक नहीं समझ सकते कि चापलूस और नवीन अधिकारियों से पुराने नमक खार अधिका-

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रियों में कितना अंतर है, वह तो केवल "राजा की हां में हां मिलाना और रुपया ऐंठना" अपना कर्त्तव्य समझते हैं, काम पड़ने पर पीठ दिखाते उन्हें तनक लज्जा नहीं आती, और अपने ही नगर के पुराने अधिकारी कैसे ही अपमानित, पीड़ित व त्रासित क्यों न हों यह समय पर अपने मान अपमान की किंचित परवाह नहीं करते और शीघ्र सब बातें भूल कर अपने स्वामी के दुःख में सहायक होते हैं। यह बात निरा सत्य है कि "घुटना जब झुकेंगे तब पेट की ओर", परन्तु समयानुसार हमें खेद के साथ लिखना पड़ता है कि हमारे बिरले ही पाठक हमारे मर्म को समझ कर उस के अनुकूल चलने का प्रयत्न करेंगे। समझ लो कि देश के दुर्भाग्य का यह भी एक मुख्य कारण है॥

निदान दल थम्भन सिंह को देख कर माधव सिंह बहुत प्रसन्न हुये और आदर के साथ उसे बैठाल कर व एक उत्तम कपड़े का सिरोपाया उसे प्रदान कर आदि से अन्त तक समस्त वृत्तान्त उसे सुनाया, जिसे सुन उसे आंतरिक दुःख हुआ, किन्तु अपने को सम्हाल कर उस ने कहा "आप के मुख से यह बचन सुनने से मुझे बड़ा क्लेश होता है, मैं घर बैठा २ भी आप की शुभ चिन्तना

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करता रहा हूं किन्तु आप का इस में कुछ दोष नहीं यह सब मेरे ही दुर्भाग्य का फल है कि इतने दिनों तक मैं आप की सेवा से वंचित रहा"। यह सुन मंत्री बोले "इस समय अब इस की आवश्यकता नहीं है, समय बहुत थोड़ा है, अस्तु चलिये और सेना का निरीक्षण कीजिये"॥

"तो यहां मुझे किस बात की देर है" ऐसा कह कर सेना पति उठ खड़ा हुआ और तीनों जन एक बड़े बुर्ज में पहुंचे और 'तुरही' बजवा कर सैन्य को इकट्ठा होने की की सूचना दी॥

'तुरही' का शब्द सुनतेही सेना टीड़ी दल की नांईं अपने २ अस्त्र शस्त्रों सहित आ कर बुर्ज के सामने क़िले के मैदान में खड़ी हुई, उस की दशा देख कर दल थम्भन सिंह ने अत्यन्त शोक प्रकाश करते हुये कहा "मेरे थोड़े ही दिनों के न रहने से इस सेना में बहुत कुछ अन्तर हो गया और यह कदापि शत्रु का सामना करने योग्य नहीं इस कारण मेरी समझ में कुछ और सिपाही भरती कर लिये जावैं तो अच्छा हो, यद्यपि वे आकर तुरंत ही युद्ध-पटु नहीं हो सकते परन्तु फिर भी कुछ सहारा देंगे"॥

माधव सिंह—मैंने तुम्हारे विना कहे प्रथम ही खेम-

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिंह को इस काम पर भेज दिया है, आशा है सवेरे वह बहुत कुछ मनुष्य बटोर कर लौटेगा ॥

इस बात चीत के अनन्तर क़िले के मुख्य २ स्थानों और बुर्जों पर सेना नियत की गई और उन्हें बहुत सावधान रहने का हुक्म दिया गया और शस्त्रादि की जिस के पास जो कमी थी वह शस्त्रालय से पूरी कर दी गई। इतने में चन्द्र देव ने भगवान भास्कर को अपना काम सौंप विदा मांगी ॥

वह समस्त रात क़िले वालों को जागते ही बीती, सवेरा होने पर सब लोग अपने नित्त क्रियार्थ वहां से बिदा हुये और अति शीघ्र ही शौच आदि से छुट्टी ले तुरन्त क़िले में दाख़िल हुये। तब "दर्बार आम" लगने की आज्ञा हुई। देखते २ 'दर्बार मंडप' आदमियों से ठसाठस भर गया ॥

राजा माधव सिंह की आज्ञानुसार मंत्री ने सब दर्बारियों के समक्ष दल थम्भन सिंह को फिर से सेनापति किये जाने की कड़ी आवाज़ में घोषणा की, समस्त सैनिक अपने पुराने नेता को पाकर अत्यन्त हर्षित हुये ॥

इसी समय खेम सिंह बहुत से सिपाहियों को ले कर

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आ पहुंचा, अस्तु उन की जांच कर और उन्हें हथियार दे कर युद्ध शिक्षक के पास भेज दिया गया ॥

अभी दर्बार लगाही था कि एक चोबदार ने अर्ज़ की "हुज़ूर, सैन्य में भरती होने की इच्छा से एक घुड़ सवार द्वार पर खड़ा हुआ है, उस के लिये क्या आज्ञा है" यह सुन माधव सिंह ने सेनापति को इशारा किया, उन्हों ने इस का तात्पर्य्य समझ चोबदार से उसे (सवार को) अन्दर भेजने को कहा ॥

सब ने देखा कि एक सुन्दर युवा समस्त हथियारों को अपने अङ्ग पर लगाये बड़ी आन बान से आ कर वहां खड़ा हो गया। उसने बड़े अदब के साथ झुक कर राजा साहब को प्रणाम किया। राजा साहब उस के ठाट को देख प्रसन्न हुए और हंस कर उस का प्रणाम स्वीकार किया ॥

सेनापति दल थम्भन सिंह उस का हाल जानने को बड़े उत्सुक हो रहे थे इस कारण शीघ्र ही किन्तु कड़ी आवाज़ में बोले "क्यों जी तुम कहां के रहने वाले हो?" ॥

सवार—महाशय, मानपुर में मेरा घर है ॥

सेनापति—और नाम ? ॥

सवार—मुझ को नवल सिंह कहते हैं ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेनापति–तुम्हारी जाति क्या है और तुम क्यों नौकरी करना चाहते हो ?

सवार–मैं चौहान वंशी क्षत्रिय हूं, अतएव क्षत्रियों का धर्म है कि यदि कोई जीविका न हो तो सिपाहियों में अपना नाम लिखावै ॥

सेनापति–तुमने कहां २ अभी तक नौकरी की है ?

सवार–कहीं भी नहीं, अभी मैं सीधा घर से ही चला आता हूं ॥

सेनापति–किसी अन्य राज्य में न जाकर यहीं क्योंं पहिले पहिल नौकरी करने को तुम आये ? ॥

सवार–आप के यहां सेन्य भरती का हाल सुन के ॥

सेनापति–आज कल बैरी हमारे राज्य पर चढ़ा हुआ है, ऐसी अवस्था में कैसे हम जान सकते हैं कि तुम उस के कोई भेदिया नहीं हो ?॥

सवार–यह तो जब मैं यहां रहूंगा तब आप भली भांति जान लेंगे, अभी क्या प्रमाण दूं ॥

सेनापति–अच्छा तुमने शस्त्र तो बहुत बांध रक्खे हैं इनका उपयोग करना भी जानते हो ?

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सवार--यह तो लड़ाई छिड़ने पर आप बखूबी जान लेंगे, अथवा अभी परीक्षा कर लीजिये ॥

समस्त दर्बारी गण, इस नवीन सवार की वाक्चतुरता देख बहुत प्रसन्न हुये ॥ अस्तु;

दल थम्भन सिंह ने निज अनुभव से उस के गुण परख और उसे बीर जान पांच सौ सवारों का अध्यक्ष उसे बनाया किन्तु कुछ बैरी पक्ष का होने की शंका से और कुछ उस की गुणावली पर मोहित हो अपने अधीनस्थ ही रहने का हुक्म दिया ॥

यह काम होने के अनन्तर राजा साहब की आज्ञा से उप सेनापति राय सिंह पांच हज़ार फ़ौज़ के साथ बैरी की गति रोकने के लिये सीमा पर भेजे गये ॥

दिन इस समय लगभग दो पहर के बीत गया था और रात भर किसी ने विश्राम भी नहीं कर पाया था, इस कारण राजा माधव सिंह ने दर्बार बरखास्त होने की आज्ञा दी ॥

आठवां परिच्छेद

॥ इस तीर से बचना ॥

कृष्णगढ़ दुर्ग की रक्षा बड़ी सावधानी से हो रही है,

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और शङ्करगढ़ाधिपति की सेना जो बड़े वेग से आगे बढ़ रही है उस का प्रतीकार करने के लिये अनेकानेक प्रबन्ध किये जा रहे हैं। उप सेनापति राय सिंह के यहां से यह खबर—"शत्रु बड़े उत्साह से आगे बढ़ रहा है, यद्यपि वह अभी पन्द्रह कोस ही आगे बढ़ा है परन्तु इतने ही में पांच गांव उसने अपने हाथ में कर लिये हैं" आई है जिस से क़िले में बड़ी घबड़ाहट फैल रही है॥

सेनापति दल धम्भन सिंह ने यह बिचार कर कि 'बैरी की दश हज़ार सेना का सामना राय सिंह पांच हज़ार सेना से कदापि नहीं कर सकते' आठ हज़ार सिपाही और उन के पास भेज दिये, और तब समझ लिया कि अब हमारी तेरह हज़ार सेना को भेज कर दश हज़ार विदेशी सेना का इधर निकल आना नितांत असम्भव है॥

परन्तु सूर्य्यप्रताप सिंह बड़े ही चतुर योद्धा हैं, वह हर समय राय सिंह की ख़बर रखते हैं, इस हेतु व्यर्थ ही अपने सिपाहियों को कटाना उचित न जान अन्य रास्ते से आगे बढ़ वे नित्य एक गांव पर अधिकार कर ही लेते हैं और राय सिंह रोज मोरचा जोड़ने तथा व्यर्थ पीछा करने का परिश्रम उठा अपना होंठ चाटता रह जाता है,

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यद्यपि वह कृष्णगढ़ की दक्षिणीय सीमा से पीछा करता हुआ पश्चिमीय सीमा तक आया परन्तु एक दिन भी शत्रु से सामना नहीं हुआ इस से उसे निश्चय हो गया कि "बैरी का अभिप्राय केवल हमारे गांव लूटने का है, राजधानी पर चढ़ाई करने का नहीं" अस्तु इसी प्रकार की चिट्ठी उसने सेनापति को लिखी ॥

सेनापति दल थम्भन सिंह को विश्वास नहीं हुआ कि राय सिंह की राय कहां लों सत्य है परन्तु उन्हों ने तीन हज़ार सेना फिर भी उस के पास भेजी, और कड़ाई के साथ एक पत्र लिखा कि-"तेरह हज़ार सेना के साथ तुम वहां पड़े हुये हो और तुम्हारे किये कुछ भी नहीं होता है, हम रोज सुनते हैं कि बैरी हमारे नित नये गांव को लूट कर कुछ न कुछ आगे बढ़ ही आता है, इस लिये तुम्हारी मदद को तीन हज़ार सिपाही और भी भेजे जाते हैं, याद रक्खो, अब तुम्हारे पास कुल सोलह हज़ार सिपाही हुये, इन सब को मौके २ पर लगा दो, और इस में भी जब तुम्हारी ढील पाई जायगी तो तुम बहुत जल्द उस पद से अलग किये जा कर दूसरा व्यक्ति उस स्थान पर भेजा जायगा" ॥

यह पत्र पा कर राय सिंह के मर्म स्थान पर चोट

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लगी, उस ने बड़े परिश्रम से सेनापति के आदेशानुसार ही काम किया और स्वयं दौड़ २ कर हर एक मोरचे पर जा निरीक्षण करने लगा, वह अपने काम में कृत कार्य्य भी हुआ अर्थात् यह बन्दोबस्त देख कर शङ्करगढ़ की सेना आगे न बढ़ सकी। एक दिन उस ने देखा कि शत्रु के आठ, दस सवार पश्चिम से उत्तर की ओर जा रहे हैं, तुरन्त ही उसने उन को पकड़ा, उन से पूंछने पर ज्ञात हुआ कि उन की सेना उत्तर की ओर चली गई है। यह जान कर उस ने दक्षिण ओर के दो मोरचे तोड़ दिये और उन्हें उत्तर-पश्चिमीय सीमा पर लगा दिया; यहां का फ़ासला राजधानी से बत्तीस कोस था।

राज्य में पूर्ण शान्ति है, अब शत्रु का कहीं पता नहीं लगता, यही सब खबरें सुन २ कर आज कृष्णगढ़ में दर्बार होने की योजना हो रही है, राज्य कर्मचारी बड़े प्रसन्न हो रहे हैं, मुख्य २ सर्दार, सेनापति व मंत्री पुरस्कार व उपाधियां पाने की खुशी में फूले अङ्ग नहीं समाते, सैनिकों के उत्साह का पार नहीं है; सारांश यह कि क़िले में आज जहां देखो तहां आनन्द ही आनन्द दिखायी देता है॥

समय मध्यान्ह का है, दर्बारी लोग अच्छे २ कपड़े पहिने

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आ बैठे हैं, और फ़ौजी अफ़सर अपनी २ तेगा तलवार लिये हुये अलग सीना उठाये बैठे हैं, किन्तु अभी राजा माधव सिंह का आगमन नहीं हुआ, अतएव सब के सब बड़ी उत्कंठा से उस द्वार की ओर देख रहे हैं, जिस में होकर उन्हैं आना है। अपने दरबारियों की उत्कंठा देख राजा साहब शीघ्र दर्बार भवन में पधारे, समस्त जन आदर के हेतु उठ खड़े हुये और झुक कर उन्हैं अभिवादन किया॥

अभी सब लोग खड़े ही हुये थे और माधव सिंह भी सिंहासन पर नहीं बैठने पाये थे कि सहसा क़िले रक्षक सैनिकों में से एक ने पूर्ण वेग से दौड़ते हुये आ कर घबड़ायी हुई आवाज़ में कहा—"क़िले को चारों ओर से शत्रु ने घेर लिया है, यदि उसे रोकने का शीघ्र प्रबन्ध न किया जायगा तो आश्चर्य नहीं कि बहुत जल्द फाटक तोड़ कर यहां तक पहुंच जाय"॥

यह सुनना था कि सब के मुख पर हवाइयां उड़ने लगीं, माधव सिंह का मुंह भी फक्क हो गया; सब को पुरस्कार के स्थान में शत्रु की तलवार व वाणाघात पाने की चिन्ता हुई, उस समय उनके हृदय की जो दशा हुई सो अकथनीय है॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेनापति दल थम्भन सिंह बड़े साहसी पुरुष थे, किन्तु बैरी का यह पराक्रम व कौशल देख वह भी चकित रह गये, पर उन्हों ने शीघ्र अपने को सम्भाल कर कहा "ओफ़ बड़ा धोखा दिया !!! हमें बड़े चतुर शत्रु से काम पड़ा है, देखो बाहर उपद्रव मचा २ के हमारी सब सेना वहां भिजवा दी और अब इधर यह जान कर कि "क़िले में सेना थोड़ी है" इस भांत आ कर हमें घेर लिया, किन्तु हर्ष है कि वह अब हमारे सामने आ गया, अब उस की चतुराई यहां न चलेगी। अस्तु अब बैठने का समय नहीं, शीघ्र यहां से चलना चाहिये" ॥

सब लोग परिकार पर पहुंच देखते क्या हैं कि शत्रु की सेना चारों ओर से क़िले को घेरे हुये है, बहुत से सिपाही खाई को पार कर चुके हैं और एक दूसरे द्वारा क़िले पर चढ़ने का प्रयत्न कर रहे हैं, कोई २ कमन्द लगा कर आधी दीवार चढ़ आये हैं, परन्तु कुशल यह है कि अभी तक ऊपर पहुंचने में कोई पूर्ण कृतकार्य नहीं हुआ ॥

कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह की सेना ने किले की दीवारों पर यह जमाव देख गगन भेदी शब्द से जय २ नाद किया और पलक झपकते बाण मार २ कर क़िले वालों के होश

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिगाड़ दिये। उनका यह साहस देख दल थम्भन सिंह विचलित हुये, परन्तु शीघ्रही सचेत हो बोले "अय बहादुरो! देखते क्या हो, हम लोग क़िले में रक्षित हैं और शत्रु हमारे बिलकुल नीचे खुले मैदान में है, सौभाग्य से हमें यह अवसर मिला है, अतएव अब व्यर्थ समय न खोकर शीघ्र उसका संहार करो" ॥

सेनापति के यह बचन सुन क़िले के सिपाहियों ने बाण, बरछा, और बड़े २ पत्थर बरसाना आरम्भ किये जिस से शंकरगढ़ की सेना अरक्षित स्थान में होने के कारण शत विक्षत होने लगी, यद्यपि ऐसी लड़ाई में उन की अधिक हानि होती थी परन्तु वह विचलित नहीं होते थे, उन की ज्यों २ अधिक सैन्य मारी जाती थी वह त्यों २ अधिक उत्साहित होते थे; युद्ध ने भयंकर रूप धारण किया और फाटक मृतकों से भर गया; परन्तु बीर लोग उस पर से ही चढ़ने का प्रयत्न करते थे और बाणाघात से स्वयं मृतकों का ढेर ऊंचा कर अपने साथियों को चढ़ने के लिये पथ सुगम करने ही में अपने को कृतार्थ मानते थे ॥

युद्ध की भीषणता फाटक पर अधिक थी क्योंकि शत्रु-

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेना उसे ही तोड़ने का उपक्रम कर रही थी, परन्तु इस में कृत कार्य होना कठिन था; हां, यदि वह दक्षिण ओर से आक्रमण करते तो क़िले पर सहज ही में पहुंच सकते क्योंकि पहाड़ी का सिलसिला वहां क़िले की दीवार के बराबर था, किन्तु वह स्थान उन्हें मालूम ही नहीं था ॥ अस्तु;

राजा माधव सिंह, मंत्री, सेनापति व सर्दार नवल सिंह चारों ओर क़िले की दीवारों पर घूम २ कर अपने सैनिकों को उत्साहित करते थे और जो घायल हो जाता था उसे डेरे में पहुंचा कर दूसरा उस की जगह पर तैनात करते थे। इस समय संध्या हो आई थी किन्तु सूर्य्य अभी पूरे अस्त नहीं हुये थे, कि ऐसे ही समय कुमार सूर्य्यप्रताप सिंह व बलवीर सिंह कुछ सेना सहित पूर्व की ओर से आते हुये दिखाई दिये। शंकरगढ़ की सेना अपने स्वामी को देख दूना बल प्रकाश कर लड़ने लगी और क़िले के बहुत कुछ सिपाहियों को घायल कर दिया। यह दृश्य देख माधव सिंह अपने साथियों सहित थर्रा उठे किन्तु फिर भी कड़ा जी कर के बोले "अय बीरो! अब समय आ गया, मारो इन लोगों को" इस वाक्य का निकलना

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

था कि हज़ारों तीर कुमार के योद्धाओं पर जा पड़े, परन्तु वह मैदान से हटे नहीं ॥

सूर्य्य प्रताप सिंह व बलवीर सिंह को देख कर नवल-सिंह की कुछ और ही दशा हो गई, वह एक टक उन्हीं की ओर देखता हुआ रह गया, मुख उस का लाल हो गया और थोड़ी देर के लिये वह "किंकर्तव्य विमूढ़" हो गया, परन्तु किसी ने उस का यह भाव देखा नहीं, उसने शीघ्र अपने को सम्भाल अपने तरकस से एक बाण निकाल तथा उसे बड़ी सावधानी से धनुष पर चढ़ा कर बलबीर सिंह को लक्ष कर बड़ी उत्तेजना से यह कहते हुये उन की ओर छोड़ा "अच्छा मैं देखूं कितना उपद्रव तुम लोग मचाते हो, इस तीर से बचो तो आगे बढ़ना" ॥

सुन्दर परों से सुशोभित बाण धनुष से छोड़ा जा कर वायु में सन २ करता हुआ बलवीर सिंह के सामने जा पड़ा, यदि वह तनिक ऊंचा और हो जाता तो बल-बीर सिंह अवश्य धराशायी होते, किन्तु ईश्वर को यह मंजूर नहीं था ॥

इतनी दूर और किसी का तीर जाना सम्भव नहीं, इस हेतु राजा माधव सिंह नवल सिंह का यह करतब देख बहुत

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रसन्न हुये और बोले "हां नवल सिंह ! अब की बार तो मार लिया" ॥

परन्तु नवल सिंह ने यह बात सुनने के पहिले ही अपना धनुष धरती पर फेंक दिया था; राजा की बात सुन हाथ जोड़ कर कहा "बस, श्रीमान ! आज मैं लक्ष चूक गया. मेरा यह नियम है कि जिस शख्स से मैं निशाना चूक जाऊं उस दिन फिर मैं उसे नहीं छूता, अस्तु अब आज मैं धनुष बाण से नहीं लड़ सकता, परन्तु तलवार से सबों का मूंड़ काटे लिये आता हूं"। ऐसा कह कर वह बाहर जाने को उद्यत हुआ पर माधव सिंह ने उसे रोक कर कहा "नहीं, बाहर जाने की अभी कोई आवश्यकता नहीं है और अब सांझ भी तो हो आई, अस्तु कल देखा जायगा" ॥

सब लोग माधव सिंह व नवल सिंह की बार्ता की ही ओर ध्यान लगाये हुये थे, थोड़ी देर में वह बार्ता समाप्त होने पर क्या देखते हैं कि 'शत्रु की सेना सिमट २ कर पीछे फिर रही है' अभी बहुत विलम्ब न हुआ था कि वहां सिवाय मृतकों के और कुछ न रह गया और देखते २ समस्त सेना पूर्ब की ओर जा कर नज़रों से छिप गई ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह देख सेनापति ने कहा "या तो यह सेना भाग गई या अब कोई नया रंग लावेगी"। इस पर माधव सिंह ने कहा "मेरे विचार में नवल सिंह के बाण ने उन के छक्के छुड़ा दिये, अब उन के लौटने की कोई आशा नहीं" ॥

मंत्री-दुर्ग को अभेद्य समझ कर अब वह साहस हीन हो गये हैं ॥

सेनापति-यह सब कुछ है परन्तु अपना बन्दोबस्त अभी ज्यों का त्यों रहना चाहिये, शत्रु का कोई भरोसा नहीं, न मालूम कब फिर चढ़ आवै" ॥

नवां परिच्छेद

॥ दुर्ग विजय ॥

"हां यह ठीक है और ऐसाही होना चाहिये" ऐसा कहते हुये राजा माधव सिंह अपने महल की ओर सिधारे, और इधर सरदारों ने भी बिश्रामार्थ अपने २ डेरे की शरण ली ॥

शत्रु क़िले का घेरा छोड़ भाग गया इस लिये आज राजा माधव सिंह की प्रसन्नता का पार नहीं है 'अब

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दोही चार दिन में इन्दुमती से व्याह होगा और बहुत जल्द उसे हिये से लगायेंगे' यही बिचार उनके हर्ष को दूना कर रहे हैं। आज अमावश्या है, कोई पहर भर रात गई होगी, आकाश बादलों से आछन्न हो रहा है कि ऐसे ही समय माधव सिंह अपने कुछ सैनिक मुसाहबों के साथ बैठे हुये युद्ध के बारे में चरचा कर रहे हैं; आज की लड़ाई में जिसने जैसा पराक्रम दिखलाया है, कल एक बड़ा भारी दर्बार किया जाकर उस में उसी भांत उस को इनाम दिया जायगा, यही तजवीज़ हो रही है। 'नवल सिंह ने आज बड़ा बिलक्षण काम किया' यही बात सब के मुख से बार २ निकलती है॥

अंत में माधव सिंह ने कहा "नवल सिंह बड़ा बीर मालूम होता है, उस की आज की काररवाई देख मुझे निश्चय हो गया कि सेनापति के अतिरिक्त यदि कोई व्यक्ति मेरे यहां है तो वह यही है"॥

सेनापति—आप के कहने में तनक सन्देह नहीं, वह ऐसा चतुर आदमी है कि मेरे बिना कहे ही उस ने ऐसे २ अच्छे काम किये हैं जिनसे मुझे वह सब से सुयोग्य जान पड़ता है; निसन्देह वह रण और बुद्धि दोनों में किसी को अपने जोड़ का नहीं रखता॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंत्री—महाराज, मैं तो उस के बाण प्रक्षेपन को देख अवाक् रह गया, अब तक मैं ने किसी को इतने दूर बाण से लक्ष भेदने का साहस करते नहीं देखा, मुझे निश्चय है कि केवल उसी के बाण भय से ही आज बैरी ने पीठ दिखाई है ॥

सेनापति—किन्तु मुझे ऐसा जान पड़ता है कि वह (बैरी) अब कोई दूसरी चाल निकालने वाला है क्योंकि उस का केवल एक बाण से डर कर भाग जाना मुझे आश्चर्य्य दिलाता है, अवश्य ही इस में कोई गूढ़नीति होगी; हमारे क़िले में सेना बहुत थोड़ी है, ऐसी अवस्था में राय सिंह को सीमा से बुलवा लेना अच्छा है; दैव न करे कि यदि कुछ गड़ बड़ हो गई तो हानि के साथ २ उपहास भी अधिक होगा ॥

माधव सिंह—हां, शीघ्र किसी को भेज कर राय सिंह को यहां बुलालो, केवल दो सरदारों के साथ कुछ थोड़ी सी सेना वहां रहै, शेष सब सेना अपने साथ लेकर वह चला आवे ॥

सेनापति—जो आज्ञा, विजय सिंह या नवल सिंह दो में से कोई एक को मैं अभी वहां भेजता हूं ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहसा नवल सिंह का नाम निकल आने से फिर उस की प्रशंसा होने लगी, किन्तु बार बार आत्म-प्रशंसा सहन न कर वह वहां से उठ गया ॥

इसी भांत थोड़ी देर तक और बात चीत कर विश्राम का समय निकट जान सेनापति आदि को सचेत रहने को कह कर राजा जी शयन गृह को पधारे । इधर सेनापति ने डेरे पर पहुंच नवल सिंह को पुकारा, पर मालूम हुआ कि वह क़िले पर गश्त कर रहा है । उस की स्वामि-भक्ति तथा कार्य्यदक्षता की मन ही मन बड़ाई कर सेनापति ने एक आदमी उसके बुलाने के लिये भेजा ॥

नवल सिंह क़िले की दीवारों पर घूम कर सिपाहियों को चैतन्य कर रहा था कि उस आदमी ने पहुंच कर सेनापति के पास चलने को कहा, यह सुन वह शीघ्र सेनापति के पास पहुंचा और बोला "कहिये मेरे लिये क्या आज्ञा है ?"

सेनापति–तुम इस समय कहां थे ?

नवल सिंह–जी मैं यहीं क़िले पर चक्कर लगा रहा था, कहिये कुशल तो है ?

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेनापति—तुम इसी समय कुछ सवारों को लेकर राय सिंह के पास चले जाओ, और वहां सीमा संरक्षा के लिये दो सर्दारों के आधीन दो हज़ार सेना को छोड़ बाकी सेना को राय सिंह समेत बहुत जल्द यहां ले आओ, यद्यपि तुम्हारे वहां जाने से यहां की बहुत हानि है परन्तु वह काम भी ऐसा है कि बिना तुम्हारे गये ठीक न होगा इस हेतु तुम्हीं को भेजता हूं, पर रास्ते में विलम्ब न हो क्योंकि शत्रु की ओर से अभी खटका है ॥

नवल सिंह—जो आज्ञा, जैसा आप ने कहा वैसा ही होगा ॥

इतना कह और सेनापति को प्रणाम कर नवल सिंह वहां से चला और सौ (१००) सवारों को बहुत जल्द तैयार होने को कहा। इस अवसर में उस ने फिर एक बार क़िले की दीवार पर चक्कर लगाया और क़िले के रक्षकों को अधिक सावधान रहने की ताक़ीद कर और अपने सवारों को चलने के लिये तय्यार देख यह कहता हुआ कि "बस सब ठीक है, अब चलना चाहिये" वह नीचे उतरा और फाटक पर पहुंच कर उसे खोलने की आज्ञा दी ॥

फाटक खुला और नवल सिंह के साथी सवार बाहर

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निकले। बाहर निकल जाने पर अँधेरे के कारण फिर सवार दिखाई नहीं देते थे, केवल घोड़ों के टापों की आवाज़ सुन पड़ती थी। सब के निकल जाने पर नवल सिंह भी जाने को उद्यत हुआ, किन्तु चलने के पूर्व उस ने बड़ी कड़ी आवाज़ में द्वार रक्षकों से चिल्ला कर कहा "अच्छा अब मैं जाता हूं, ख़बरदार, तुम लोग बहुत होशयार रहना" ॥

रात की निस्तब्धता में दूर २ तक यह आवाज़ क़िले के बाहर और भीतर गूंज गई, यह सुन और नवल सिंह को गया हुआ जान सिपाही गण फाटक बन्द करने लगे। किन्तु फाटक बन्द होने से पहिले ही सैकड़ों हथियारबन्द सिपाही न मालूम कहां से प्रगट हो सहसा क़िले में घुस आये और बिना किसी बात की प्रतीक्षा किये द्वार रक्षकों पर टूट पड़े। क़िले के सिपाही यह अनाचीत विपत्ति देख कर घबड़ा गये और चाहा कि फाटक बन्द कर दें परन्तु उन का मनोर्थ सिद्ध नहीं हुआ। एक सिपाही ने साहस करके फाटक घुसाही दिया और चाहता था कि कुंडा लगा देवे किन्तु वहीं पास में खड़े हुये एक व्यक्ति ने इस सफ़ाई और तेज़ी से तलवार का एक हाथ मारा कि उस की दोनों कलाइयां कट कर दूर

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जा गिरीं, फाटक फिर खुल गया और लोग अन्दर आते गये॥

इस तरह सहसा क़िले में धँस आने वाले यह सब सिपाही कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह के हैं। सांझ समय यह लोग क़िले का घेरा छोड़ कर पास ही एक जँगल में छिप गये थे और रात के समय फाटक खुलने की ख़बर उन्हीं किसी भांति लग गई थी अतएव वह उसी समय की प्रतीक्षा करते रहे और ज्योंही कि फाटक खुला वह धड़ाम से अन्दर पहुंचे, कुमार भी साथ थे॥

जब उपरुल्लिखित ढङ्ग से फाटक का कुण्डा लगाने का प्रयत्न करने वाला सिपाही आहत किया गया तो यह देख सूर्य्य प्रताप सिंह व बलबीर सिंह दोनों उस मारने वाले व्यक्ति के पास पहुंचे और बड़े आग्रह से बोले "महाशय, क्या हम आप का नाम जान सकते हैं?"॥

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया "मेरा नाम चन्द्रभानु है"॥

इस पर सूर्य्य प्रताप सिंह ने कहा "मित्र! मैं आप का अत्यन्त कृतज्ञ हूं, यदि आप इस समय फाटक खुलने की सूचना मुझे न देते तो सम्भव नहीं था कि मैं क़िले में पहुंच सकता, इस समय मैं आप को इस के बदले में क्या दूं?"॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"एक तो आप मुझे मित्र मानते हैं, दूसरे मैं एक मामूली सिपाही हूं, और तीसरे आप राजकुमार हैं, इन्हीं कारणों से मैं आप के मुंह से अपने लिये 'आप' शब्द का प्रयोग ठीक नहीं समझता, इसलिये विनय करता हूं कि आप मुझे 'आप' न कहा कीजिये। अच्छा मैं थोड़ी देर में फिर आता हूं"—यह कहता हुआ चन्द्रभानु एक ओर को तेज़ी के साथ चला गया॥

दोनों कुमार कुछ भी न समझ सके कि चन्द्रभानु कहां चला गया, अतएव उस के जाते ही वह दोनों फिर लड़ाई में प्रवृत हो गये। लड़ाई केवल फाटक पर ही नहीं हुई बल्कि बहुत से सिपाही जो क़िले की दीवारों पर चढ़ गये थे वहां भी उन्हों ने मार काट मचा दी। लड़ाई ने भयङ्कर रूप पकड़ा, तलवारों की चमचमाहट से आंखें झपकने लगी और "मारो मारो" की आवाज़ से कानों के परदे फटने लगे॥

राजा माधव सिंह इस मार काट के शुरू होते ही अपने सेनापति दल थम्भन सिंह को लेकर रणस्थल में आ गये थे। उन्हैं ख़बर लग गई थी कि नवल सिंह के निकलने और फाटक शीघ्र बन्द न किये जाने के कारण

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही शत्रु ने भीतर पहुंच कर यह उपद्रव मचाया है। सेनापति को अत्यन्त पश्चाताप हुआ कि क्यों रात के समय फाटक खोल कर नवल सिंह को निकल जाने की आज्ञा उन्हों ने दी, अस्तु 'अब तो पछताना व्यर्थ है' ऐसा समझ कर दोनों रण सागर में कूद पड़े। उन की सेना, जो कुछ खिन्न और उदास सी लड़ रही थी, अपने स्वामियों को देख बड़े उमंग से बैरी पर लपकी॥

जिस समय यहां यह संग्राम हो रहा था और लोग लोहू से तरबतर हो रहे थे उसी समय एक व्यक्ति कारागार के द्वार पर पहुंचा, जिसे देख कर पहरे वालों ने पूंछा "तुम कौन हो?" परन्तु इस का उस ने कुछ उत्तर नहीं दिया और अपनी जेब से एक चीज़ निकाल कर उन्हें दिखाई जिसे देख वे सब हट गये और बे रोक टोक उसे अन्दर जाने दिया। द्वार को पार कर धड़ धड़ाता हुआ वह गजेन्द्र सिंह व वृजकिशोर के पास पहुंचा और एक तेज़ हथियार से बहुत जल्द दोनों की हथकड़ी बेड़ी काट कर अलग खड़ा हो गया। गजेन्द्र सिंह व वृजकिशोर दोनों कुछ भी निश्चय न कर सके कि क्यों रात के समय अनायास हम लोग छोड़ दिये गये। अन्त में गजेन्द्र सिंह ने अपनी बुद्धि को कुछ ठिकाने कर कहा "आप कौन हैं?"॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह सुन उस व्यक्ति ने उत्तर दिया "मैं देवता हूं" ॥

गजेन्द्र सिंह—हे देवता ! आप ने मुझे क्यों यहां से छुड़ा दिया ? मैं आजन्म यहीं क़ैद रहना चाहता हूं क्योंकि अपने घर जाना अब मुझे स्वीकार नहीं ॥

देवता—आज तुम्हारे छुड़ाये जाने का एक विशेष कारण है कि तुम्हारी बहिन इन्दुमती का ब्याह आज राजा माधव सिंह के साथ होने वाला है, बस उसी के देखने के लिये तुम छोड़े जाते हो, ब्याह हो चुकने पर तुम फिर यहीं क़ैद कर दिये जाओगे ॥

गजेन्द्र सिंह को यह बात सुनने से इतना कष्ट हुआ मानो किसी ने तीर जिगर में मार दिया, शीघ्र वह उठ खड़ा हुआ और लाल २ आंखें निकाल कर बोला "देवता ! माधव सिंह इस समय कहां है ? हे पूज्यवर और दयालु देवता ! बताओ तो वह दुष्ट दूल्हा बना हुआ माधव सिंह कहां है कि मैं शीघ्र वहां जा कर तलवार से उस का टीका कर दूं, अय देवता ! अब तुम बोलते क्यों नहीं हो ?" ॥

जब इस पर गजेन्द्र सिंह को कुछ उत्तर नहीं मिला तब विस्मित हो उसने सारी कोठरी छान डाली परन्तु देवता का पता नहीं चला, केवल एक खटाके की आवाज़

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवश्य आई जिस से उसने जान लिया कि देवता चले गये, किन्तु किस रास्ते, सो किसी ने देखा नहीं। कोठरी ढूंढ़ते समय गजेन्द्र सिंह को दो तलवारें वहां मिलीं, जिन्हें उसने देवता का प्रसाद समझ माथे से लगा लिया और उन में से एक वृजकिशोर को देकर कहा "आओ, तुम भी मेरी बहिन इन्दुमती के व्याह में चल कर मेरा साथ दो"॥

इस पर वृजकिशोर ने कहा "हां हां, चलिये मैं आप के साथ ही तो हूं"॥

इस बात चीत के अनन्तर दोनों कारागार से बाहर आये॥

देखा कि वहां भारी युद्ध हो रहा है; जय नाद सुन उन्हें निश्चय हुआ कि शंकर गढ़ की सेना क़िले में घुस कर लड़ रही है। अंधेरे के कारण वह अपना शत्रु और मित्र कुछ भी न पहिंचान सके और एक ओर से मारना शुरू कर दिया, वृजकिशोर ने भी उन्हीं का अनुकरण किया। इस भांत मारते और काटते वह आगे बढ़ रहे थे कि सहसा गजेन्द्र सिंह की दृष्टि एक आदमी पर पड़ी जो वहीं पास ही में प्रलय मचा रहा था, बड़े हर्ष से उछल कर उस के

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पास पहुंचे और कन्धे पर हाथ धर के पूंछा "भाई बलबीर सिंह ! तुम यहां कैसे ?" ॥

यह सुन बलबीर सिंह ने घूम कर पीछे देखा तो गजेन्द्र सिंह को खड़ा पाया। उसी भांत रक्त से सराबोर दोनों गले मिले और दोनों ने संक्षेप से अपनी २ कथा कही। किन्तु गजेन्द्र सिंह का हाल सुनने पर बलबीर सिंह कुछ भी न जान सके कि वह देवता कौन थे ॥

लड़ाई बड़े वेग से हो रही थी इस हेतु वहां खड़ा रहना निरर्थक जान फिर दोनों अलग २ हो गये। घूमते फिरते गजेन्द्र सिंह राजा माधव सिंह के सामने पहुंचे, उन्हें देख कर उन का मुंह क्रोध से रक्त वर्ण हो गया और माधव सिंह उन्हें देख लज्जित हो चिहुंक कर रह गये। किन्तु गजेन्द्र सिंह ने उन्हें अधिक समय नहीं दिया और शीघ्र ललकार कर कहा "अरे दुष्ट! तू क्यों खड़ा रह गया है? जल्द मुझ पर वार कर नहीं तो फिर पीछे अरमान ही रह जावेगा"। यह बचन सुन जल कर उन्हों ने अपना खड्ग गजेन्द्र सिंह के शिर पर छोड़ा परन्तु उन्हों ने बड़ी फुर्त्ती से उस वार को खाली दे इस सफ़ाई से अपनी तलवार की पीठ उनकी कलाई पर मारी कि उन का केवल हाथ

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही नहीं वरन तमाम शरीर ठनक गया और खड्ग उन के हाथ से छूट कर दूर जा गिरा। बस फिर गजेन्द्र सिंह ने तुरन्त उनको धरती पर पछाड़ दिया और हाथ पैर कस कर एक गठरी की शकल बना वृजकिशोर के हवाले किया और स्वयं आगे बढ़ कर अन्य सिपाहियों पर अपना क्रोध निकालने लगे॥

जिस सिपाही पर सूर्य्यप्रताप सिंह की तलवार पड़ती थी सीने को चीड़ती हुई कमर पर ठहरती थी और फिर तत्काल ही दूसरे की खोपड़ी पर जा चमकती थी। इसी भांत सैकड़ों को यमपुर भेजते हुये वह वहां पहुंचे जहां राधेलाल सेनापति दलथम्भन सिंह की चोट खा घायल पड़ा हुआ तलफ़ रहा था। राधेलाल की यह दशा देख वह बहुत व्यथित हुये और एक टक उस की ओर देखते हुये रह गये। सेनापति ने कुमार को देख बड़े आवेश से एक तीक्ष्ण बर्छा उनकी ओर छोड़ा; सम्भव था कि कुमार उस से आहत हो धराशायी होते, परन्तु उसे बीच ही में एक व्यक्ति ने आकर अपनी ढाल पर रोक लिया; पर वह रुका नहीं और ढाल को वेधता तथा उस के हाथ को घायल करता हुआ एक दूसरे सिपाही के कलेजे में चुभ गया॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ढाल पर बरछे को रोकने वाला व्यक्ति आहत हो धरती पर गिर गया, कुमार ने उस की ओर देखा तो उन के मर्म स्थान पर चोट पहुंची और क्रोध से उनका ख़ून उबलने लगा। उन्हों ने क्या देखा कि जिस चन्द्र भानु ने उन्हें क़िले में धंसने का मार्ग बताया था वही अब उनके लिये अपने शरीर पर चोट लेकर घायल पड़ा कराह रहा है। अपने मित्र की यह दशा देख कुंमार अधीर हो उठे और इस वेग से एक तीर सेनापति के माथे को लक्ष कर मारा कि उस स्वामिभक्त बीर का जीवात्मा तुरन्त शरीर को छोड़ गया॥

सेनापति के मारे जाने के पश्चात् मंत्री वहां आये और कुमार से युद्ध करने लगे, इतने में पीछे से इस आवाज़ ने आकर कुमार को चौंका दिया कि "अब इसे तो मेरे हिस्से में रहने दीजिये"। कुमार ने पीछे फिर कर देखा तो बलबीर सिंह को आते हुये पाया। अस्तु उन्हें देख कर और यह कह कर कि "लीजिये यह अब आपही का हिस्सा है" वह वहां से अलग हो गये। बलबीर सिंह ने उछल कर एक ही वार में मंत्री को मंत्रणा करने के लिये सेनापति की बगल में लिटा दिया। यह सफ़ाई देख कर सूर्य्य प्रताप सिंह बलबीर सिंह से लिपट गये, और तब

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बलबीर सिंह ने किसी देवता द्वारा गजेन्द्र सिंह का लूटना उन्हें सुनाया और साथ ही माधव सिंह के बन्दी होने की कथा भी उन से कही, यह सुन वह बहुत प्रसन्न हुये किन्तु देवता के नाम से वह भी अवाक् रह गये॥

हम जानते हैं, हमारे पाठक अवश्य हम से यह पूंछ बैठें गे कि शंकरगढ़ के सेनापति का नाम रिपुदमन सिंह था परन्तु यहां आ कर उन्हों ने किसी रिपु को दमन नहीं किया; सो बात नहीं है, उन्हों ने एक दो नहीं वरन सैकड़ों रिपुओं को सदा के लिये रणभूमि में सुला दिया॥ अस्तु;

राजा माधव सिंह के पास पन्द्रह हज़ार सेना थी और फिर पांच हज़ार नवीन भरती हुई थी, इस प्रकार कुल बीस हज़ार तो बाहर सीमा पर थी और शेष चार हज़ार क़िले में, जिस में से तीन हज़ार तो मारी गई, और एक हज़ार जीवित बची। जब सेनापति मारे गये और माधव सिंह जीवित क़ैद हुये, यह जान कर उस बची हुई सेना ने भी हथियार डाल दिये और शरण ले ली। कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह दस हज़ार सेना लाये थे, जिस में आठ हज़ार बची, किन्तु दो हज़ार क्या हुई सो तो स्पष्ट ही है॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लड़ाई से निश्चिन्त हो सूर्य्य प्रताप सिंह व बलबीर सिंह घायलों को देखते हुये चन्द्रभानु और देवता पर विचार कर रहे थे कि इतने में एक बलिष्ठ पुरुष यह कहता हुआ कि—"मेरे लिये आप को बड़ा कष्ट उठाना पड़ा" आकर उन के चरणों पर गिर पड़ा। किन्तु सूर्य्य-प्रताप सिंह ने यह कहते हुये उसे अपने दृढ़ भुजों पर रोक लिया कि—"हैं हैं !! भाई गजेन्द्र सिंह ! आप यह क्या करते हैं ? मुझे कुछ भी कष्ट नहीं हुआ वरन् आप से मिल कर मैं अत्यन्त प्रसन्न हो रहा हूं" ॥

इस के अनन्तर कुमार मरे हुओं को जलाने, घायलों को औषधादि देने तथा क़िले के मैदान को परिष्कृत करने की आज्ञा अपने सेनापति को दे कर अपने साथियों सहित उस बारहदरी में पहुंचे जहां माधव सिंह दरबार किया करते थे; वहीं सब ने विश्राम किया ॥

कुमार के चले जाने पर सेनापति रिपुदमन सिंह ने माधव सिंह को वृजकिशोर से ले कर अपने पहरे में किया और चन्द्रभानु को एक कोठरी में पहुंचा कर वैद्य राज्य से उस के घाव पर पट्टी बंधवाई; यद्यपि कुमार ने उसे अपने ही साथ बारहदरी में चलने और वहीं आराम

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने के लिये बहुत आग्रह किया था किन्तु उस ने उन्हें टाल कर अकेली कोठरी में ही रहना पसन्द किया ॥

इस काम से छुट्टी पा सेनापति ने मुरदों को जलवाना और गड़वाना आरम्भ किया और जब ये सब काम तथा क़िले का पूरा प्रबन्ध हो चुका तब उन्हों ने विश्राम लिया ॥

दसवां परिच्छेद

॥ मरहम पट्टी ॥

सबेरे उठ कर कुमार नित्यक्रियादि से निवृत हो बाहर निकले; बलबीर सिंह व गजेन्द्र सिंह भी उन के पास आ पहुंचे और तीनों वहां से चले। अपनी आज्ञानुसार ही सेनापति की कार्यवाही देख कुमार बहुत प्रसन्न हुये; इतने में सेनापति भी वहां आ पहुंचे, जिन्हें देख कुमार ने पूछा "चन्द्रभानु किस कोठरी में है ?" यह सुन सेनापति ने हाथ जोड़ एक ओर का इशारा किया ॥

कुमार उधर ही को चल पड़े और उन के पीछे पीछे सब गये ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक कमरे में पहुंच कर क्या देखते हैं कि चन्द्रभानु एक चारपाई पर अपनी आंखें बंद किये पड़ा है, बहुत सा रुधिर निकल जाने के कारण उस का मुख पीला और शरीर सुस्त सा हो गया है, हाथ में यद्यपि पट्टी चढ़ी है तथापि रक्त की बुन्दे निकल कर चादर को लाल २ कर रही हैं ॥

उस की यह दशा देख कर सब को बड़ा दुःख हुआ, सूर्य्य प्रताप सिंह के तो आंसू ही निकल पड़े। इसी भांति खड़े हुये सब इक टक उस की ओर निहार कर दुःखित हो रहे थे कि इतने में उस ने करवट बदल कर आखें खोलीं और कुमार को देख बल न होने पर भी अपने हाथ को सम्भाल कर वह खाट पर बैठ ही गया और चाहता था कि खड़ा हो जावै किन्तु कुमार ने उस का हाथ पकड़ फिर से वहीं बैठाल उस से कहा "चन्द्रभानु! अब इस समय आदर करने की आवश्यकता नहीं है, हम देखते हैं कि तुम बहुत ही सुस्त हो रहे हो, अतएव बैठे ही बैठे हम से बात चीत करो" ॥

चन्द्रभानु एक साधारण सिपाही था। जब इतने बड़े राज कुमार ने उसका हाथ पकड़ ऐसे बचन उससे कहे तो

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपार आनन्द उसे हुआ; बरछे की चोट के घाव से जो पीड़ा उसे हो रही थी थोड़ी देर के लिये वह उसे भूल गया और अत्यन्त विनीत भाव से नीची गर्दन किये हुये बोला "आप की कितनी कृपा मुझ पर है सो मैं कह कर प्रगट नहीं कर सकता, किन्तु बिनय करता हूं कि मैं एक दीन हीन और तुच्छ सिपाही हूं इसलिये आप ऐसे महापुरुषों के समक्ष पलंग पर बैठे रहना मुझे कदापि शोभा नहीं देता, संकोच से दबा जाता हूं इस हेतु मुझे नीचे बैठ जाने की आज्ञा दीजिये" ॥

यह सुन कुमार बोले "नहीं २ ऐसी दशा में नीचे बैठने से तुम्हैं कष्ट होगा, यहां पद मर्य्यादा की आवश्यकता नहीं और बिशेष कर जब कि हमने तुम से मित्रता भी करली है; अस्तु तुम बैठे रहो" ॥

चन्द्रभानु–यह आप बहुत अनुचित करते हैं, किन्तु आप की आज्ञा शिरोधार्य्य है ॥

इस बात चीत के होते २ सेनापति ने तीन कुर्सियां मँगवा कर वहां रखवा दीं। तीनों कुमार सावधानी से उन पर बैठे और सेनापति वहीं एक कोने में खड़े रहे। इतने में बैद्य राज ने आकर कोठरी में प्रवेश किया और

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रभानु के हाथ की पट्टी खोल उस पर औषधि लगाई। यह जान कर कि घाव गहरा लगा है सब को बहुत दुःख हुआ, किन्तु "यह घाव बहुत शीघ्र अच्छा हो जायगा" कह कर सब को आश्वासन देते हुये वैद्यराज ने उस पर फिर पट्टी बांधी और चले गये॥

तब सूर्य्य प्रताप सिंह ने कहा "चन्द्रभानु! तुम्हें इस दशा में देख कर हमें बड़ा रंज होता है, नहीं जानते कब तक तुम्हारा यह हाथ अच्छा होगा, हमारी पक्ष कर तुम बड़ी विपत्ति में फँस गये। अच्छा यह तो बताओ तुम्हारा घर कहां हैं?"॥

एक लम्बी स्वांस खींच कर चन्द्रभानु ने कहा "आप की जब इतनी कृपा मुझ पर है तो ईश्वरेच्छा से मैं बहुत जल्द अच्छा हो जाऊंगा, किन्तु मेरा मकान पूंछ कर आप क्या करेंगे?"॥

कुमार—क्यों, जब तुम हमारे मित्र हो गये, तो क्या हमें तुम्हारा मकान न पूंछना चाहिये?

चन्द्रभानु—आप के वाक्यों से तो मुझे लज्जित होना पड़ता है॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमार—लज्जित होने से काम न चलेगा और तुम्हें अपना घर बताना ही पड़ेगा, क्योंकि जब तक हम तुम्हारा घर न जान लेंगे यहां से न उठेंगे ॥

चन्द्रभानु-आप एक तनक सी बात के लिये इतना हठ करते हैं तो लीजिये मैं अभी आप को सब हाल बताये देता हूं, मेरा घर इसी गांव में है, मा बाप दोनों बालापन में ही मैं ने खा लिये, मेरा एक भाई और था जो उमर में मुझ से चार पांच साल बड़ा था, हम दोनों भाई अपने काका के पास, जिन्हें हमारा बाप सौंप गया था, अपने दिन काट रहे थे, इतने में मैं नहीं जानता कि क्यों राजा माधव सिंह ने मेरे भाई को पकड़ कर क़ैद कर लिया; मैं ने भाई को छुड़ाने के बिचार से इन की नौकरी कर ली; यद्यपि राजा मुझ को बहुत चाहते थे, पर मेरे हज़ार कहने पर भी उन्हों ने उसे नहीं छोड़ा। यह बात मेरे दिल में खटकती रही, इतने ही में उन से और आप से लड़ाई छिड़ गई, आप का बीर भेष देख कर मैं दंग रह गया और मुझे बिश्वास हो गया कि आप की कृपा से मेरा भाई छूट जायगा, इसी से आप का पक्ष ग्रहण किया और यही कारण है कि फाटक बंद करते हुये देख मैं ने उस सिपाही को घायल कर

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेधड़क अन्दर चले आने को आप का रास्ता साफ़ किया। अब मुझे अधिक खेद और दुःख होता है कि कारागार का द्वार खुलने से क़ैदी तो सब निकल गये परन्तु मेरा भाई जीता है या इस लड़ाई में कहीं मारा गया, सो मैं बिलकुल नहीं जानता" ॥

उस की यह कथा सुन कर कुमार अत्यन्त शोकाकुल हुये और बोले "मित्र! अब तुम कुछ रंज न करो, हम तुम्हारे बड़े भाई को जहां वह होगा खोज निकालेंगे, और इस के अतिरिक्त जितने कुछ तुम्हारे कष्ट होंगे उन सब को समूल नष्ट कर हम आजन्म तुम्हें सुख पहुंचाने में त्रुटि न करेंगे" ॥

चन्द्रभानु-(नीची गर्दन कर) अब यही देखना है कि कहां तक आप अपने बचन का पालन करते हैं ॥

कुमार-हम क्षत्रिय हैं, अपने बचन को सर्वदा निबाहते हैं ॥

चन्द्रभानु-(हंसकर)-हां इसी उदार भाव का अनुभव करके तो मैं ने आप की सेवा अंगीकार की है ॥

इधर तो यह बात चीत हो रही थी और उधर गजेन्द्र सिंह की आंखों से चीधारे आंसू बह रहे थे; यह देख

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रभानु ने कहा "महाशय ! आप रोते क्यों हैं ?"

आंसू पोंछ गजेन्द्र सिंह बोले "ओह चन्द्रभानु ! इस संसार में तुम मेरे ही समान दुःखी हो; यह जो तुम ने सब किस्सा अभी बयान किया ठीक मेरे ही अनुकूल उतरता है, उसी की याद आने से मुझे भी कष्ट होता है" ॥

यह सुन बलबीर सिंह ने कहा "हां, तुम्हारा कहना ठीक है, परन्तु अब तुम को कुछ रंज न करना चाहिये क्योंकि अब तुम सब आपदाओं से मुक्त हो गये और तुम ने बैरी से अपना बदला भी चुका लिया; क्षत्रिय को इस के सिवाय और क्या चाहिये" ॥

गजेन्द्र सिंह—अवश्य ही यह बात मेरे लिये बड़े गौरव और खुशी की है कि मैं ने अपने बैरी को परास्त किया, किन्तु अब मुझे घर जाने की आज्ञा दीजिये क्योंकि बहिन इन्दुमती को देखने के लिये उत्कण्ठा लग रही है, मेरे इतने दिन बाहर रहने से न मालूम वह क्या २ सोचती होगी और क्या उसका हाल होगा क्यों-कि वहां उस को कोई सांत्वना देने वाला तक नहीं है ॥

गजेन्द्र सिंह जब यह बात कह रहे थे चन्द्रभानु अतृप्त लोचनों से उन की ओर देख रहा था और इन्दु-

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मती का नाम सुन कर सूर्य्य प्रताप का तो बुरा हाल हो रहा था जिस का भेद आगे चल कर मालूम होगा ॥

निदान गजेन्द्र सिंह की बात सुन कर बलबीर सिंह ने कहा "तुम इस के लिये कुछ चिन्ता न करो; अभी थोड़े ही दिन हुये कि मैं तुम्हारे घर गया था और संक्षेप में तुम्हारा सब हाल कह कर उस को बहुत कुछ ढांढ़स दे आया था, और घर जाने की बात जो तुम कही सो महाराजाओं (मेरे और कुमार के पिताओं) के आने तक तुम और ठहरे रहो, उन से भेंट कर फिर तुम चले जाना" ॥

अपनी बहिन की कुशल क्षेम सुन कर गजेन्द्र सिंह को बहुत संतोष हुआ ॥

इसी भांति थोड़ी देर और कुछ बात चीत कर तीनों जन वहां से उठे और राधे लाल को बहुत कुछ धैर्य्य देते हुये बारहदरी की ओर पधारे। भोजनों का समय हो गया था इसलिये सब ने मिल कर भोजन किया और आराम करने को अपने २ पलंग पर जा लेटे ॥

कृष्ण गढ़ के उप सेनापति राय सिंह ने अपने राजा का बन्दी होना सुन लिया था इस हेतु दूसरे दिन शाम को ससैन्य आकर उस ने आत्मसमर्पण किया ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्यारहवां परिच्छेद

॥ एक स्त्री के दो प्रेमी ॥

राधे लाल बिलकुल अच्छा हो गया और चन्द्रभानु के हाथ में भी अब पीड़ा नहीं किन्तु शरीर से अधिक रुधिर निकल जाने के कारण वह कमज़ोर बहुत हो गया है इस हेतु बाहर नहीं निकलता और अपनी उसी कोठरी में धीरे २ टहला करता है ॥

कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह एक तो पहिले ही से उस के अहसानों के कारण उस पर बहुत ही कृपालु हो रहे हैं तिस पर इधर प्रति दिन सम्मिलन होते रहने से उस कृपा ने मित्रभाव का गहरा रूप पकड़ा अर्थात् वह उसे मैत्री बश अपने बराबरी का समझने लगे, और वह भी सब मान मर्य्यादा ताक में रख बेधड़क उन से बात करने लगा ॥

एक रोज़ वह अपनी कोठरी में टहल रहा था, कि सहसा उस के मुख से मनोहर ध्वनि में यह गीत निकल पड़ा "अब कब लग तरसाय रखिये जी" उस का यह

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाक्य समाप्त ही हुआ था कि सहसा कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह न मालूम कहां से अकेले वहां आ पहुंचे। उन्होंने चन्द्रभानु का गान सुन लिया और आते ही बोले "हैं हैं !! चन्द्रभानु ! तुम क्या कह रहे हो? अच्छा !! इतने दिन के बाद आज तुम्हारा भेद खुला, बताओ तो सही तुम किस मृग नयनी के रूप जाल में फँस कर तरस रहे हो जिस के लिये तुम्हें धैर्य्य नहीं होता" ॥

कुमार को अचानक आया देख चन्द्रभानु कुछ लज्जित हो धरती की ओर निहारता हुआ रह गया सो इस भांति उन के बचन सुन गर्दन उठा कर बोला "नहीं तो महाराज ! मैं किसी सुन्दरी के मोह जाल में नहीं फँसा हूं, वह तो मैं ने केवल मन बहलाव के लिये गाया है" ॥

कुमार—नहीं, यह बात नहीं है, तुम्हारे उस गीत का यह मतलब नहीं वरन वह किसी प्रेयसी के सम्बन्ध में अवश्य है ॥

यह सुन चन्द्रभानु हंस कर रह गया परन्तु बोला कुछ नहीं। तब फिर कुमार ने कहा "चन्द्रभानु ! हमें उस सुकुमारी का नाम बताओ कि उसे लाकर हम शीघ्र तुम्हारा तरसना मिटावें" ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रभानु–इस प्रश्न के उत्तर देने के पूर्व यदि मेरी ढिठाई क्षमा की जावे तो मैं आप से कुछ विनय करूं ॥

कुमार–हां हां तुम निःसंकोच कह सकते हो, मैत्री में क्षमा से क्या प्रयोजन ॥

चन्द्रभानु–(हाथ जोड़ कर) प्रथम आप यह बताइये कि प्रेमपंथ में आप ने कहा तक अनुभव प्राप्त किया है और अभी तक आप किसी सुन्दरी पर आशक्त हुये हैं या नहीं ? क्योंकि बिना इस बात का अनुभव हुये आप इस प्रकार के दुःख को कदापि नहीं समझ सकते जैसा कि एक उर्दू कवि का बचन है– "जिस ने इस का जख़्म खाया हो उसे मालूम है, तेग़ अबरू की सिफ़त घायल से पूंछा चाहिये" ॥

कुमार–ओफ़, आज तो चन्द्रभानु ! तुम बातचीत में बड़ी लियाक़त दिखा रहे हो !!!

चन्द्रभानु–जी हां, अब आज प्रसंग ही ऐसा आ पड़ा है ॥

कुमार–क्या ख़ूब, तो हां, चंद्रभानु ! हमारे सवाल का जवाब देने के पेश्तर तुम हम से क्या पूछना चाहते हो ? ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्रभानु–यही कि प्रेम सागर में आप कितने नीचे तक धंसे हैं ॥

कुमार–इस प्रश्न का उत्तर बड़ा कठिन है ॥

चंद्रभानु–कैसा ?

कुमार–ऐसा कि संसार में जितने प्राणी हैं सभी प्रेमी हैं, प्रेम चाहे जिस प्रकार का हो परन्तु प्रत्येक जन किसी न किसी को चाहता है और अपने मन में यही समझता है कि मुझ से बढ़ कर प्रेमी और चाहने वाला दुनियां में दूसरा कोई नहीं है; वास्तव में बात ऐसी ही है, क्योंकि प्रेम एक ऐसा पदार्थ है कि जितना भाव उसका मन के भीतर रहता है, उतना शब्दों द्वारा बाहर प्रगट नहीं हो सक्ता; ऐसी अवस्था में अपने प्रेम का अनुभव हम तुम्हें कैसे करा सकते हैं ?

चन्द्रभानु–वह बचनों द्वारा प्रगट नहीं किया जा सक्ता परन्तु मन द्वारा जान लिया जा सकता है अतः मैं ने जान लिया कि आप प्रेम की पूरी 'डिग्री' प्राप्त कर चुके हैं; धन्य है वह नायका जिस ने आप सा गूढ़ प्रेमी पाया है, किन्तु महाराज क्या मैं उस सुकुमारी का नाम जान सक्ता हूं जिस के प्रेम में आप ऐसे चूर हो रहे हैं ?

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस कोमलांगी का नाम बताने में तुम क्या समझ सकोगे अतः हम तुम्हें और प्रकार से उसका परिचय देते हैं॥

ऐसा कह कर कुमार ने एक गोल हाथी दांत के टुकड़े पर बनी हुई एक बहुत ही सुन्दर तसवीर चन्द्रभानु के हाथ पर रख दी, जिसे देखते ही वह भौंचकसा रह गया और ऐसा मालूम हुआ मानो उस के ऊपर बज्र टूट पड़ा हो॥

थोड़ी देर के लिये इस प्रसंग को बन्द कर हम अपने पाठकों को बताते हैं कि उन्हें भली भांत स्मर्ण होगा कि गजेन्द्र सिंह कुमार बलबीर सिंह के यहां विद्याध्ययन के लिये बीरपुर गये थे उसी अवसर में इन्दुमती भी एक बार वहां उनके साथ गई थी; दैवात् कुमार सूर्य्यप्रताप सिंह भी अपने मित्र बलबीर सिंह से मिलने को आ पहुंचे और वहीं इन्दुमती की देखा देखी उन से हुई,सो इन्दु का हाल तो नारायण जाने परंतु कुमार उसे देख कर तन मन से मोहित हो गये और उन्हों ने निश्चय किया कि 'यदि मेरे भाग्य में व्याह होना लिखा है और यदि मेरी धर्म पत्नी कोई होगी, तो वह यही इन्दुमती है'॥

कुमार ने जो यह व्याधि अपने शिर ली इस का भेद उन्हों ने किसी को नहीं बताया। यद्यपि वह वहां चार

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पांच रोज़ रहे परन्तु सिवाय देखने के उन्हैं कभी इन्दुमती से बात चीत करने का अवसर नहीं मिला, किन्तु वह इतने ही को अपना सौभाग्य समझते थे। वहां से आने पर वह उस मुख चन्द्र को निहारे बिना अधीर होने लगे, इस कारण हाथी दांत पर उन्हों ने उसकी प्रति मूर्ति बनवायी और उसे एक सोने की जंज़ीर में पिरोकर गले में पहिन लिया जिस से वह सदैव को गुप्त रूप से उन के हृदय में तथा प्रत्यक्ष रूप से वक्ष स्थल पर आसन जमा बैठी; जिस समय उनका मन व्याकुल हुआ करता तुरन्त उसे देख अपने मन को ढांढ़स दिया करते थे। इस समय चन्द्रभानु के हाथ में जो तसवीर कुमार ने दी थी वह इसी इन्दुमती की थी। अस्तु;।

जब उस तसवीर को लेकर चन्द्रभानु भौंचकसा रह गया और बोला कुछ नहीं तब कुमार ने कहा "क्यों मित्र तुम कैसे रह गये, कुछ बोलो तो सही" ॥

मानो कोई नींद से जगा हो इस भांत अंगड़ाई लेकर चन्द्रभानु ने कहा "क्या कहा महाराज ?"

कुमार—तुम हमारी प्रिया की तसवीर देख कर कैसे विचार में पड़ गये ?

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रभानु–जी कुछ नहीं, मैं यह विचार रहा था कि इस में कारीगर ने क्याही कारीगरी की है कि तसवीर को चाहे जिधर से देखिये यही मालूम होता है कि वह इधर ही को देख रही है ॥

कुमार–हां, यही तो इस में विलक्षणता है ॥

यह सुन चन्द्रभानु फिर शिर झुका कर रह गया, तब कुमार ने कहा "क्यों जी, अब तुम फिर वैसे सुस्त पड़ गये ?" ॥

यह सुन चन्द्रभानु ने शिर उठाया और कुछ तन कर किन्तु नम्रता पूर्वक बोला "आप को स्मर्ण होगा कि आप ने मुझे कुछ देने को कहा था और इस के अतिरिक्त एक दिन आपने यह भी कहा था कि हम तुम्हें हर तरह से आराम पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे" ॥

कुमार–हां यह तो हमें भली भांत स्मर्ण है और हम वैसाही करेंगे ॥

चन्द्रभानु–बस तो उसके लिये आप तय्यार रहिये, अपनी इच्छानुसार मैं आप से अब कुछ मांगने वाला ही हूं ॥

कुमार–उस के लिये तय्यार रहने की क्या ज़रूरत है, तुम जब चाहो तब मांग सकते हो, किन्तु अब बातों में

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न टालो और अपनी प्रियतमा का नाम हमें बताओ क्योंकि हमारा हाल तुम पूछ चुके हो ॥

"नहीं महाराज, मैं आप को बातों में नहीं बहलाता, लीजिये यह मेरी हृदयेश्वरी की तसवीर है जिसे मैं सदैव अपने गले से लगाये रहता हूं"—ऐसा कह कर चंद्रभानु ने अपने कुरते के नीचे से सोने के चौखटे में जड़ी हुई एक निहायत ही खूबसूरत तस्वीर निकाल कर उन के हाथ में दे दी ॥

तसवीर हाथ में लेते ही कुमार एक लम्बी चीख़ मार कर बेहोश हो गये और सम्भव था कि तसवीर हाथ से छूट कर टूट जाती और कुमार भी गिर कर चोट खाते परन्तु चन्द्रभानु ने तुरन्त एक हाथ से उस को बीच ही में ले लिया और दूसरे से कुमार को सम्भाला और शीघ्र सुराही से जल लेकर उनके मुंह पर छिड़कना आरम्भ किया ॥

थोड़ी देर में कुमार चेत में आये और एक बेर आंखें खोल कर फिर बेहोश हो गये। लगातार पानी छिड़कते रहने से वह फिर चैतन्य हुये तब चन्द्रभानु ने कहा "महाराज आप को क्या हो गया है जो आप बेहोश पर बेहोश हो रहे हैं ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमार की उस समय बुरी दशा थी, और उन्हें असह्य वेदना हो रही थी, सो अपने को सम्भाल कर बड़े कष्ट से उन्हों ने कहा "ओफ़ कैसी विपत्ति है" ॥

चन्द्रभानु—कहिये महाराज, कुशल तो है ? ॥

कुमार—अब कुशल कहां, सम्भव है कि अपने वचन निवाहने के लिये मुझे यह शरीर छोड़ना पड़े ॥

चन्द्रभानु—ओफ़, यह आप क्या अपने मुंह से निकाल रहे हैं ? भला सुनूं तो सही इस समय आप को हुआ क्या है ? ॥

कुमार—हुआ क्या है ? चन्द्रभानु ! मैं लुट गया, मेरा सर्वस्व हरण हो गया ॥

चन्द्रभानु—आप कुछ कहैं भी तो बात है क्या ?

कुमार—बात यह है कि जिस सुन्दरी पर तुम मोहित हुये हो, वह मेरी प्रियतमा है ॥

चन्द्रभानु—यह आप कैसे कह सकते हैं ? सम्भव है वह प्रथम मेरी ही प्रियतमा हो गई हो और तब कहीं पीछे आप उस पर आशक्त हुये हों ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमार-यह कौन जाने, कदाचित् तुम्ही ने मेरे पश्चात् उस से प्रीति लगाई हो॥

चन्द्रभानु-ऐसा ही सही, किन्तु महाराज! यदि मैं आप ही से उस की भिक्षा मागूं तो॥

कुमार-यही बात तो पेंच की है, हम तुम्हें जो चाहे सो मांगने को कह चुके हैं, सो यदि तुम इस को मांगते हो, तो उस के देने में..... ॥

चन्द्रभानु-तो उस के देने में क्या आप इनकार कर अपना बचन टालेंगे ?॥

कुमार-हाय तुम ने ऐसा भारी अहसान हमारे साथ किया है कि हम ने तुम्हें बचन दे रक्खा है, हम उस के कारण सर नहीं उठा सक्के॥

चन्द्रभानु-तो अपनी प्रेमिनी का प्रेम भुला कर आप उसे मुझे दे डालना चाहते हैं या नहीं ?॥

कुमार-यही तो गूढ़ प्रश्न है॥

चन्द्रभानु-तो क्या आप मुझे वह सुन्दरी नहीं देना चाहते ?॥

कुमार-इसका उत्तर तो उससे भी अधिक कठिन है॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रभानु-कृपा कर आप मुझे साफ़ २ जवाब दीजिये, क्योंकि एक बात और भी है कि मैं अब भली भांत चङ्गा हो गया हूं, इस हेतु यहां ज्यादे रहना भी नहीं चाहता अन्यत्र जाने का विचार है ॥

कुमार—साफ़ बात तो यह है कि इस बात का जवाब तुम हम से न मांगो और इस के अतिरिक्त यदि तुम राज्य भी मुझ से मांगो तो मैं देने को तय्यार हूं ॥

चन्द्रभानु-(तसवीर की ओर इङ्गित कर के) इस मोहनी के आगे राज्य किस गिनती में है ? आप तो वृथा मुझे राज्य का लोभ देते हैं, साधारण गृहस्थी में जो सुख है वह राज्य में कहां? एक ग़रीब किसान अपनी प्रियतमा को घास के झोपड़े में सुख से पड़ा रह सक्ता है और प्रिया बिहीन महल के सजे हुये कमरे में राजा को भी वह अनिर्बचनीय आनन्द कहां ? महाराज ! मैं उस अमूल्य रत्न को नहीं छोड़ सक्ता ॥

कुमार-हे ईश्वर ! अब तू मुझे अपने यहां ठौर दे, प्रिया त्यागने की बात मैं नहीं सुन सक्ता ॥

चन्द्रभानु-क्या उस के न मिलने से आप अपना शरीर न रक्खेंगे ? ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमार-कदापि नहीं; हाय जिस को इतने दिन हृदय में रक्खा उस प्राण प्यारी को गंवा कर फिर मैं जीवन धारण कर क्या करूंगा ?

चन्द्रभानु-और आप को छोड़ कर यदि वह मुझ से प्रेम करे तो ?

कुमार-तो सिवाय जान दे देने के मेरे पास और उपाय ही क्या है ॥

चन्द्रभानु-तो महाराज ! मुझे इस समय एक युक्ति सूझी है, यदि उस के अनुसार आप काम करें तो सब बखेड़ा दूर हो जावै ॥

कुमार-हां हां, कहो वह बात क्या है ?

चन्द्रभानु-आप खुशी से अपना व्याह उस के साथ कर लीजिये और महीने दो महीने में जब मेरी इच्छा हुआ करै, उस से भेंट करने की आज्ञा मुझे दे दिया कीजिये ॥

यह बात सुनते ही कुमार के नेत्र लाल हो आये और उन का सारा शरीर क्रोध से जल उठा । किन्तु उन्हों ने अपने जोश को सम्हाल कर कहा "चन्द्रभानु ! क्या मित्रों

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के साथ ऐसे ही शब्दों का प्रयोग करना होता है ? यदि इस समय कोई और इस बात को कहता तो मैं अवश्य उस का सर काट कर अलग फेंक देता" ॥

चन्द्रभानु—महाराज ! इस में क्रोध करने की कोई बात नहीं है, जब वह मेरी प्रेमनी है तो आप के वाक्य भी मुझे असहनीय हैं; किन्तु आप मेरे मित्र हैं इसी से कहता हूं कि आप उस से व्याह कर लीजिये, परन्तु ध्यान रखिये 'प्रेम में नियम नहीं' मैं उस को भूल नहीं सकता और उसके पास ज़रूर जाऊंगा, उस समय मेरा आप से जो बने कर लीजियेगा; मैं क्षत्रिय हूं, आप की तरह अपनी प्रतिज्ञा से विचलित होने वाला नहीं ॥

यह बात सुन कर कुमार को बड़ा गुस्सा आया, परन्तु वह चन्द्रभानु के अहसान तथा अपने वाक्यों का स्मर्ण कर रह गये और इस विचार में पड़ गये कि इसे किसी भांति समझा कर इस बात से विचलित करें इतने में बलबीर सिंह वहां आ पहुंचे और बोले "वाह, आप तो आज यहां ऐसे घुस कर बैठे हैं कि भोजनों की भी सुध नहीं ॥

सत्यही उस समय भोजनों का समय हो आया था, इस हेतु दोनों इस कोठरी से निकल कर बाहर चले गये

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और चन्द्रभानु फिर अपनी उसी पूर्ववत् चिन्ता में पड़ कर वहां टहलने लगा ॥

उस दिन कुमार फिर चन्द्रभानु के यहां नहीं जा सके और काम काज से निश्चित् हो कोई डेढ़ पहर रात गये बारहदरी में बलबीर सिंह व गजेन्द्र सिंह सहित अपने २ पलङ्ग पर लेट निद्रा देवी के आवाहन में तत्पर हुए। रोशनी वहां बखूबी हो रही थी और बारहदरी के बाहर दो सिपाही बैठे हुये बड़ी मुस्तैदी के साथ पहरा दे रहे थे, चारो तरफ़ सन्नाटा छाया था कि इतने में उस कोने की ओर से, जिधर गजेन्द्र सिंह पड़े थे, बड़े ज़ोर से इस आवाज़ ने आकर सबों को चौंका दिया "गजेन्द्र सिंह सेा गया या जागता है ?"

यह आवाज़ सुन कर केवल गजेन्द्र सिंह ही नहीं वरन् दोनों कुमार, जो अभी सेाये नहीं थे, उठ कर अपने २ पलङ्ग पर बैठ गये और दोनों सिपाही भी सावधान हो खड़े हो गये कि इतने में फिर आवाज़ आई "क्यों गजेन्द्र सिंह तू ने हमारी बात का कोई जवाब नहीं दिया ?"

यह आवाज़ कहां से आती है यह जानने को सूर्य्य प्रताप सिंह ने एक सिपाही से बारहदरी के इर्द गिर्द

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घूम कर देखने को कहा, परन्तु उसने लौट कर कहा कि "वहां कोई नहीं है"। तब गजेन्द्र सिंह ने कड़ा जी कर उस आवाज़ का उत्तर दिया "नहीं, मैं अभी सोया नहीं वरन् जागता हूं, परन्तु यह तो बताव तुम हो कौन और क्यों इस तरह छिप २ कर बात करते हो ?"

इस पर बड़े ज़ोर से आवाज़ आई "हैं !! क्या तू हमें नहीं पहचानता ?"

गजेन्द्र सिंह—नहीं मैं तुम्हें नहीं पहचानता, सामने आओ तो कदाचित पहचान सकूं ॥

आवाज़—गजेन्द्र सिंह ! तू हम को भूल गया !! क्यों गजेन्द्र सिंह तू अपने छुड़ाने वाले देवता को भूल गया !!!

देवता का नाम सुन कर सब सन्नाटे में आ गये और गजेन्द्र सिंह ने कहा "नहीं देवता जी ! मैं आप को नहीं भूला, कहिये इस समय मेरे लिये क्या आज्ञा है ?"

देवता—इस समय तुझ से हम यह कहने को आये हैं कि तेरी बहिन के प्रथम तीन प्रेमी थे, जिन में से एक तो बन्दी हो गया, अब सूर्य्य प्रताप सिंह और चन्द्रभानु यह दो बचे हैं। सो हम जानना चाहते हैं कि इन दो में से तू किस के साथ उस का ब्याह करना चाहता है ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गजेन्द्र सिंह—हे देवता जी ! कृपा कर आप यह तो बताइये कि मेरी बहिन की आप को इतनी चिंता क्यों है ?

देवता—हम उस पर बहुत खुश हैं क्योंकि वह हमारी हृदय से भक्ति करती है, हम चाहते हैं कि उस के उपयुक्त ही कोई बर उसे मिले ॥

गजेन्द्र सिंह आप के बताने के पूर्व मुझे यह बात विदित नहीं थी; सो चन्द्रभानु तो एक मामूली सिपाही है, उसे मैं अपनी बहिन नहीं दे सकता, किन्तु हां, अगर कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह जी उसे अंगीकार करें तो अवश्य मैं इस काम को कर सक्ता हूं ॥

देवता—नहीं गजेन्द्र सिंह तुम भूलते हो, तुम्हें उस का ब्याह बीर चन्द्रभानु के साथ ही करना चाहिये ॥

यह सुन बलबीर सिंह ने कहा "देवता जी ! आप कहीं चन्द्रभानु ही तो नही हैं जो इस भांति छिप कर और गजेन्द्र सिंह को धोखा देकर अपना मतलब साधना चाहते हैं ?"

देवता—बलबीर सिंह ! तू छली है, तेरा कहना बिलकुल झूठ है, अगर तुझे हमारे कहने का बिश्वास न हो तो स्वयं जाकर चन्द्रभानु को उस की कोठरी में पड़ा

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ देख आ"। यह सुन बलबीर सिंह उधर को दौड़े, किन्तु शीघ्र ही आकर सब से बोले "चन्द्रभानु तो अपनी कोठरी में पड़ा सो रहा है, मैं भीतर घुस कर अच्छी तरह उसे देख आया हूं, यह अवश्य कोई देवता हैं" ॥

किन्तु फिर भी वह देवता से बोले, "अवश्य ही आप का कहना सच्चा है, किन्तु एक बात का उत्तर आप मुझे और दे दीजिये तो मेरी सब शंकायें जाती रहैं कि-जब गजेन्द्र सिंह को माधव सिंह ने पकड़वाने का प्रबंध किया और मैं ने यह खबर सुनी, तो किस व्यक्ति के द्वारा यह समाचार मैं ने कुमार के पास भेजा था ?"

देवता-(बड़े क्रोध से गरज कर) रामनाथ, रामनाथ, रामनाथ; पूंछ अब इसके आगे और क्या पुंछना चाहता है?

यह बात सुन कर सब बड़े आश्चर्य में पड़ गये। तब बलबीर सिंह ने कहा "नहीं, देवता जी! अब मैं आप से कुछ पूछना नहीं चाहता, आप मेरा अपराध क्षमा कीजिये" ॥

कुमार सूर्य्यप्रताप सिंह ने भी देवता की जब यह सत्यता देखी, उन्हें भय हुआ कि कहीं गजेन्द्र सिंह डर कर अपनी बहिन का ब्याह चन्द्रभानु के साथ न कर देवें तो महा

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनर्थ हो इस कारण अधीर हो हाथ जोड़ कर बोले "हे पूज्यवर देवता जी ! कुमारी इन्दुमती के साथ जो मेरा प्रेम है वह अभी तक किसी को मालूम न था और सम्भव था कि बहुत दिनों तक इस का भेद प्रगट न होता परन्तु आप ने अपनी शक्ति से जान कर जब उसे प्रगट ही कर दिया तो मैं भी अब कुछ न छिपा कर अत्यन्त नम्रतापूर्वक आप से विनय करता हूं कि आप चन्द्र-भानु से उस का ब्याह करने का आग्रह न कीजिये क्यों कि मैं हृदय से उसे चाहता हूं, यदि ऐसा हुआ तो मेरा जीना कदापि सम्भव नहीं" ॥

देवता–क्या तू उस को इतना चाहता है !! क्या तू उस के बिना जीवित नहीं रह सकता ?

कुमार–कभी नहीं, कभी नहीं, देवता जी, मेरा ब्याह यदि होगा तो उन्हीं कुमारी इन्दुमती के साथ, अन्यथा नहीं ॥

देवता–हम तेरा प्रेम देख कर बहुत प्रसन्न हुये इस कारण गजेन्द्र सिंह से तेरे ही साथ उसका ब्याह करने की आज्ञा देते हैं । परन्तु चन्द्रभानु भी उसे तुझ से कुछ कम नहीं चाहता, इस कारण तेरे साथ उस का ब्याह

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होने पर भी वह (चन्द्रभानु) कभी २ उस के दर्शनों को मेरी शक्ति द्वारा उस के पास पहुंचा करेगा ॥

देवता का उपरोक्त प्रथम वाक्य सुन कर तो सब को बड़ा हर्ष हुआ परन्तु साथ ही दूसरे वाक्य ने सब को विषन्न कर दिया। घबड़ा कर सूर्य्य प्रताप सिंह ने कहा "देवता जी! यह कैसी अनुचित आज्ञा आप देते हैं, मेरे साथ कुमारी का व्याह होने पर फिर चन्द्रभानु के आने का वहां क्या काम है !!!"

इस पर कोई उत्तर नहीं मिला। कई बार कई बातें कही गईं परन्तु वह वहीं कोठरी में गूंज कर रह गईं और जवाब कुछ न मिला, तब सब ने जाना कि देवता जी चले गये ॥

रात उस समय दो पहर से अधिक बीत गई थी, इस हेतु सब ने सोने की ठहराई, परंतु कुमार को नींद कहां?

बारहवां परिच्छेद

॥ काशीवास ॥

आज कृष्ण गढ़ दुर्ग में फिर फ़ौज़ की तय्यारी हो रही

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है; सब सिपाही अच्छे २ कपड़े पहिन कर हथियारों को अपने २ अंग पर लगा रहे हैं। जब इस भांति सेनापति सहित सब सेना सज कर दुरुस्त हो गई तो सूर्य्य प्रताप-सिंह, बलबीर सिंह व गजेन्द्र सिंह तीनों कुमार बहुत बढ़िया पोशाक पहिन बाहर आये और सब से प्रणाम होने के उपरान्त घोड़ों पर सवार हो कर क़िले से बाहर निकले। उन के पीछे सेनापति रिपुदमन सिंह व सर्दार गण और तिन के पीछे समस्त सैन्य जयनाद करती हुई बड़े उल्लास के साथ चली। समय सांझ का था इस हेतु अस्त होते हुये सूर्य्य की किरणें इस जन समूह पर पड़ कर अजीब चमत्कार दिखा रही थीं और सिपाहियों के रंग बिरंगे कपड़े व शस्त्रों की चमक कुछ न्यारी ही छटा दर्शाती थी॥

निदान इसी भांति क़िले से लगभग एक कोस चल कर एक विस्तृत मैदान में सब सेना खड़ी हुई। इस को खड़े हुये अभी अधिक विलम्ब न हुआ था कि एक ओर से गर्द उड़ती दिखाई दी और देखतेही देखते एक बड़ी भारी सेना सामने आ गई॥

देखिये पाठक! घबड़ाइये नहीं, इन दोनों सेनाओं में युद्ध नहीं होगा वरन् यह कुछ और ही बात है॥ अस्तु;

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब वह सेना अधिक निकट आई उस में से दो व्यक्ति बढ़िया वस्त्र पहिने हाथियों से उतर कर नीचे खड़े हुये। उन्हैं देख कर तीनों कुमारों ने प्रथम ही से अपने घोड़े छोड़ दिये थे, इस हेतु जब दोनों उतर कर नीचे खड़े हुये झपट कर तीनों कुमार बारी २ से उन के चरणों पर गिरे, किन्तु उन्हों ने बीच ही में कुमारों को रोक कर अपने हृदय से लगा लिया॥

अभी आये हुये यह दोनों जन राजा जगत सिंह और राजा रुद्र प्रताप सिंह थे। गजेन्द्र सिंह की रिहाई और माधव सिंह की गिरफ्तारी की सूचना उसी समय ही उन के पास भेज दी गई थी, किन्तु राज्य में कुछ आवश्यकीय काम आ पड़ने से वह अभी तक न आ सके थे, केवल बधाई का पत्र उन्हों ने उस समय भेज दिया था। अब यहां आये हैं॥

निदान इस भांति मिलने और कुशल मङ्गल पूंछने के उपरांत सब जन हाथियों पर चढ़ कर क़िले की ओर पधारे और वहां पहुंच सिपाहियों ने विश्रामार्थ अपनी २ कमर खोली, तथा दोनों राजा, व तीनों कुमार भी आराम करने के हेतु राज भवन में गये॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रात के समय सूर्य्य प्रताप सिंह ने लड़ाई का समस्त वृत्तान्त पिता के आगे कहा, जिसे सुन कर वह बहुत प्रसन्न हुये, और जब चन्द्रभानु की बात उन से कही गई तो वह बहुत ही चकित हुये और उस की बहुत कुछ प्रशंसा करते हुये सवेरे उसे देखने की इच्छा प्रगट की ॥

इस बात चीत के उपरांत सब ने शयन किया। प्रातःकाल उठ कर नित्यक्रिया पाठ पूजादि से छुट्टी पा कर, कोई दो घड़ी दिन चढ़े बारहदरी में, जहां रात ही से दर्बार की बड़ी तय्यारी हो रही थी, सब ने प्रवेश किया। दोनो राजा बराबरी से सिंहासन पर तथा सूर्य्य प्रताप सिंह, बलबीर सिंह और गजेन्द्र सिंह कुर्सियों पर आ विराजे। इस के अनन्तर बड़े २ सर्दार भी अपनी २ आसनों पर आ डटे तथा कुछ सैनिक नङ्गी तलवारें लिये हुये कतार बांध कर इधर उधर पीछे खड़े हो गये ॥

कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह बड़ी तेज़ी और उत्सुकता से चारो ओर देख रहे थे मानो वह किसी की खोज में हों परंतु वह उनकी दृष्टिगत नहीं हुआ, इस हेतु वृजकिशोर को अपने पास बुला कर उस के कान में कुछ कहा जिस से वह तुरन्त एक ओर झपटा चला गया, किन्तु बहुत शीघ्र ही आ कर उसने कुमार के हाथ में एक पत्र दिया

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और कहा "वह अपने डेरे पर नहीं है और उस की खाट पर यह चिट्ठी पड़ी मिली है" ॥

वृजकिशोर चन्द्रभानु को बुलाने गया था और यह पत्र उसी की चारपाई पर मिला था ॥ अस्तु;

बड़ी उत्कण्ठा के साथ उसे खोल कर कुमार ने पढ़ा और पढ़ कर अपने पिता के आगे रख दिया क्यों कि वह पत्र उन्हीं के नाम था। पत्र में इस प्रकार लिखा हुआ था—

श्रीमान्,

कितनी प्रबल उत्कण्ठा मुझे आप के दर्शनों की थी सो इस छोटे से कागज़ पर लिख कर प्रगट नहीं कर सकता, किन्तु एक अत्यन्त आवश्यकीय काम आ पड़ने के कारण मैं विवश हो यहां से जाता हूं। मुझे इतना भी अवकाश नहीं है कि आप श्रीमानों की आज्ञा तो ले सकूं; बड़ी कठिनता से तो यह पत्र लिख पाया है। यद्यपि मैं यहां से स्वयं नहीं जाता हूं तथापि अत्यन्त नम्रता पूर्वक आप से विनय करता हूं कि मेरी यह धृष्टता क्षमा की जावे। विशेष और क्या निवेदन करूं। अंत में एक बिनय और है कि बीरपुराधीश भी मेरे अपराध को तुच्छ समझें॥

दासानुदास,

चन्द्रभानु

शंकरगढ़नरेश राजा जगत सिंह ने ज़ोर से यह

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पत्र पढ़ा जिसे सुन सब ही बड़े विस्मित हुये कि यह बात क्या है !! जो चन्द्रभानु स्वयं नहीं गया तो उसे ले कौन गया !!! और इस से विचित्र बात यह है कि उसे ले जाते हुये किसी ने देखा भी नहीं। उसी समय बहुत से सिपाही उसे खोजने के लिये भेजे गये, जिन्हों ने बहुत दूर २ तक ढूँढ़ने पर उस को कहीं नहीं पाया और लौट कर यही समाचार राजा साहब को सुनाया। जब सब सिपाही लौट कर आ गये और चन्द्रभानु का कोई पता नहीं चला, तब सब ने यही निश्चय किया कि कदाचित् उस को देवता जी ही ले गये हैं॥

देवता का वृत्तान्त जब राजा साहब को सुनाया गया तब प्रथम तो उन्हों ने विश्वास नहीं किया, किन्तु जब तीनों कुमार और दोनों सिपाहियों ने उस रात की घटना का समर्थन किया, तब कहीं उन्हों ने माना, परन्तु फिर भी इस बात से वह अचम्भित बने ही रहे और उन्हों ने चन्द्रभानु की दशा पर अत्यन्त पश्चाताप किया, किन्तु सूर्य्य प्रताप सिंह की असमंजस और दुःख इन सब से कहीं बढ़ कर थे॥

थोड़ी देर तक इसी विषय पर बात चीत होती रही। इस के पश्चात् राजा माधव सिंह बुलाये गये। जब

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वे दर्बार में आये, सब खड़े हो गये और राजा जगत सिंह ने हाथ पकड़ कर अपने बराबर गद्दी पर उन्हें बैठाया। बैठ तो वह गये परन्तु लज्जा से दबे जाते थे ॥

उन का संकुचित भाव देख राजा जगत सिंह ने कहा "आप को अब अधिक ग्लानि न माननी चाहिये। जब दो व्यक्ति आपस में लड़ते हैं, तब उन में से एक पराजित अवश्य होता है, और जय पराजय ईश्वराधीन है, इस में किसी का वश नहीं" ॥

माधव सिंह–जी, अब मुझे इस का कुछ भी खेद नहीं है ॥

जगत सिंह–हां, ऐसा ही होना चाहिये, अच्छा तो कदाचित् आप ने मेरे आने का कारण अभी न समझा होगा ॥

माधव सिंह–बिलकुल नहीं ॥

जगत सिंह–ध्यान से आप इस बात को सुनिये कि आप से और मुझ से कुछ द्वेष नहीं था, किन्तु अकारण ही आप ने मेरे दो स्वजनों को पकड़ कर बन्दी कर लिया जिन्हें छोड़ देने के लिये मैंने आप से प्रार्थना भी की

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किन्तु आप ने कुछ न सुना। मैं आप को दोष नहीं देता, आप ऐसे २ कुटिल और स्वार्थी मुसाहिबों में फँस रहे थे कि उन्हीं ने आप की मत बिगाड़ दी थी, अतएव आप इस के सिवाय और करते ही क्या? सारांश यह कि जब आप ने किसी तरह उन्हें मुक्त नहीं किया तो विवश हो कर मुझे आप से युद्ध ठानना पड़ा; ईश्वर कृपा से अब मेरे स्वजन क्षेम कुशल मेरे पास पहुंच गये। अस्तु, अब आप अपना राज्य लेकर उस का उपभोग कीजिये और आज्ञा दीजिय हम घर जावें॥

माधव सिंह–जो कुछ हो गया अब उसे दुहरा कर आप मुझे अधिक लज्जित न कीजिये, मैं अपने किये का दण्ड भली भांति पा चुका। राज मद, धन मद, योवन मद, यह ऐसे प्रबल हैं कि बड़े २ ज्ञानी और चतुर मनुष्य भी इन के वशीभूत हो महा अनर्थ करने पर उतारू हो जाते हैं। इसलिये मेरा विचार अब यही है कि मैं अब फिर इस जंजाल में न फँसूं॥

जगत सिंह–यद्यपि राजाओं को राज्य भोग के उपरान्त ईश्वरोपासना के लिये कहा गया है, परन्तु वृद्धावस्था में, और यह भी उस दशा में जब राज्य का कोई उत्तराधि-

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारी हो, सो मैं देखता हूं कि इन दोनो में से आप को अभी एक भी नहीं है ॥

माधव सिंह–आप का कहना ठीक है, परन्तु मेरी प्रार्थना यह है कि बुढ़ापे में जब मेरी सब इन्द्रियां शिथिल पड़ जायगीं, मैं क्या ईश्वर का भजन कर सकूंगा !! और फिर जीने का क्या ठिकाना ? क्या आश्चर्य्य है कदाचित् बीच ही में मेरा जीवन समाप्त हो जावे, तो मन की मन ही में रह जावे, और मैं कुछ भी उपाय न कर सकूं। दूसरी बात जो आपने कही उस के लिये मैं बीर कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह जी को बहुत उपयुक्त समझता हूं ॥

महा विषयी और लालची माधवसिंह के मुख से यह ज्ञान भरी बातें सुन कर सब को बड़ा विस्मय हुआ और हँस कर राजा जगत सिंह ने कहा "आप के मन में जो ज्ञान उदय हुआ है, इस से मैं बहुत प्रसन्न हुआ, तथापि मेरा कहना यही है कि अभी कुछ दिन आप और राज्य का सुख भोगिये" ॥

माधव सिंह–अब मुझे राज्य में सुख दिखाई नहीं देता, इसलिये आप मुझे फिर उस में लिप्त होने की सलाह न देकर काशी वास की आज्ञा दीजिये, कि अनी

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तक मैं ने 'जाने अनजाने' जो कुछ पाप किये हैं, उन्हें पाप नाशनी गङ्गा जी में बहा कर और श्री विश्वनाथ जी के दर्शन कर अपनी मोक्ष का उपाय करूं ॥

जगत सिंह-अभी तो मेरी यह राय नहीं थी किन्तु जब आप नहीं मानते हैं तो मेरा क्या वश ? आनन्द से आप काशी को पधारिये ॥

माधव सिंह-आप के मुख से यह बात सुन कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ, अतएव इस के लिये मैं आप को अनेक धन्यवाद देता हूं ॥

जब राजा जगत सिंह ने देखा कि माधव सिंह किसी तरह नहीं मानते और जाने को हठ करते हैं, तब उन्हें जाने की अनुमति दे दी और वहां (काशी) उन के ख़र्च आदि के लिये दो हज़ार मासिक भेजते रहने का प्रबन्ध कर दिया। इस के उपरान्त दर्बार विसर्जन हुआ और सब अपने २ आश्रम को गये ॥

राह का भली भांत प्रबन्ध कर राजा जगत सिंह ने बड़े आदर से माधव सिंह को बिदा किया और सब के साथ नगर के बाहर तक उन्हें पहुंचाने गये और वहां से बड़े विषन्न हो कर लौटे ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूसरे दिन सवेरे किसी विशेष अभिप्राय से गजेन्द्र सिंह ने भी राजाओं के चरण स्पर्शकर तथा अपने मित्र वा कुमार से मिल अपने घर की ओर प्रस्थान किया ॥

तेरहवां परिच्छेद

॥ बूझो तो मैं कौन हूं ॥

सवेरे जब कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह सो कर उठे उन्हों ने अपने पलङ्ग पर एक चिट्ठी पड़ी हुई पाई । बड़े विस्मय में हुये कि हमारे पलङ्ग पर कौन यह पत्र डाल गया और उस के आने की तनक भी आहट हमें नही मिली !!! अपने ही नाम उस चिट्ठी को पाया तो खोल कर पढ़ने लगे । उस में इस प्रकार लिखा हुआ था:—

कुमार,

आप सदैव मुझे "मित्र" कहा करते थे और यह भी कहा करते कि "हम तुम्हें कभी कष्ट न पहुंचावैंगे और जो तुम मागोगे देंगे" । ओफ़, अब लिखते अधिक शोक होता है कि मैंने आप से एक ज़रा सी चीज़ मांगी जिस के लिये आप ने टकासा जवाब दे दिया । मैंने आप के साथ जो कुछ किया

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है क्या उस का यही बदला है ? मित्रता का क्या यही अर्थ है ? इसी प्रकार क्षत्रिय अपने वचन निबाहते हैं ? आप निश्चय जानिये कि आप के उत्तर से मैं ऐसा निराश और ऐसा हताश हुआ हूं कि यहां रहने को अब जी नहीं चाहता, इस हेतु जाता हूं, और सब तज "उसी" की याद में इस शरीर को छोड़ दूंगा; परन्तु आप याद रखिये कि शरीर छोड़ने के पूर्व एक बार मैं अवश्य उस के पास आप के शयनगृह में पहुंचूंगा। अब इस से अधिक और कुछ नहीं कहना है। परन्तु हां, एक बात की सूचना आप को दे देना मैं और उचित समझता हूं कि कल जो पत्र आप ने मेरी कोठरी में पाया था वह असत्य है। एक ऐसा ही कारण है जिस से मैं आप के पूज्य पिता के सन्मुख जाना उचित नहीं समझता हूं, इसी से मैं ने वह पत्र लिख कर कोठरी में डाल दिया था, जिस से सब मुझे गया हुआ समझें। किन्तु वास्तव में तब मैं यहां से गया नहीं था, अब जाता हूं। अब आज से आप एक दिन अपने शयन गृह के अतरिक्त और कहीं मुझे न देखेंगे। किमधिकम् ॥

आप की प्रियतमा का प्रेमी वही,

चन्द्रभानु

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गजेन्द्र सिंह के जाने से पहिले ही कुमार यह पत्र पा चुके थे, किंतु किसी से उन्हों ने इस का ज़िक्र नहीं किया॥

गजेन्द्र सिंह जा कर अपने घर चन्द्र नगर में पहुंचे और अपने चचा तथा चाची और बहिन इन्दुमती से मिल कर बहुत प्रसन्न हुये॥

चौधरी बिहारी सिंह ने यद्यपि लड़ाई आदि का वृत्तान्त पहिले ही सुन लिया था तथापि गजेन्द्र सिंह को सहसा आया देख वह बहुत चकित तथा लज्जित हुये। परन्तु उदार गजेन्द्र सिंह ने इस का कुछ भी ख्याल नहीं किया और उन के साथ पहिले से भी अधिक प्रीति तथा नम्र भाव रक्खा॥

गजेन्द्र सिंह कृष्ण गढ़ दुर्ग में देवता के मुख से अपनी बहिन का कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह पर मोहित होना सुन ही चुके थे और कुमार का आशक्त होना भी वह जान चुके थे। इधर बिहारी सिंह भी माधव सिंह के विरक्त हो जाने तथा पचास हज़ार रुपया बेलाग पचा जाने के कारण शान्त हो गये थे और गजेन्द्र सिंह तथा इन्दुमती से बहुत कुछ प्यार करने लग गये थे, क्योंकि उन का वह संकल्प तो केवल रुपया के लोभ से था सो पूरा हुआ; अतएव जब गजेन्द्र सिंह ने यह वृतान्त उन्हें

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुनाया और कुमार के साथ इन्दु के ब्याहने की इच्छा प्रगट की तो बड़ी प्रसन्नता से उन्हों ने स्वीकार किया और सहर्ष राजा जगत सिंह के पास कृष्ण गढ़ दुर्ग में यह सम्वाद भेजा, क्योंकि अब लों वह वहीं बिद्यमान थे। इधर कुंअर बलबीर सिंह की जुबानी राजा साहब वह देवते वाला वृत्तान्त पहिले ही सुन चुके थे, इसलिये बड़ी प्रसन्नता से उन्हों ने उसे स्वीकार किया, और तुरन्त सब तय्यारी कर बड़ी धूम धाम से जा कर शुभ सायत में कुमार सूर्य्य प्रताप सिंह का ब्याह कुमारी इन्दुमती के साथ कर लाये। बारात लौट कर फिर कृष्ण गढ़ में पहुंच गई॥

बरात की तैयारी और ब्याह के समारोह का बर्णन बिस्तारभय से करना हम उचित नहीं समझते। ब्याह होने पर नवीन दम्पति कितने आनन्दित हुये और किस आमोद से वह मिले इस का उल्लेख करना भी बाहुल्यता मात्र है क्योंकि उसे भुक्त भोगी पाठक सहज ही अनुभव कर सकते हैं और जिन्हें अभी ऐसा अवसर प्राप्त न हुआ हो उन को हम ब्यर्थ ललचाना नहीं चाहते। अस्तु;

ब्याह को हुये चार पांच दिन हो गये, सब जगह आनन्द ही आनन्द हो रहा है, दुःख और शोक कहीं लेशमात्र को नहीं। रात लग भग डेढ़ पहर के बीती होगी सब जगह

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्ण सन्नाटा छाया है। ऐसे ही समय सूर्य्य प्रताप सिंह अपने शयनगृह की ओर पधारे तो वहां जाकर क्या देखते हैं कि कुमारी इन्दुमती के सोने के कमरे के बाहर हाथ में नंगी तलवार लिये हुये महात्मा चन्द्रभानु टहल रहे हैं॥

यह देख कर उन्हों ने सोचा कि चन्द्रभानु बहादुर और अपने बचन का सच्चा है, परन्तु इस के साथ २ छली भी अवश्य है। यह सोच कर बोले "चन्द्रभानु! तुम यहां हमारे अंतः पुर में क्यों घुस आये?"॥

चन्द्रभानु-महाराज! जो मैं कहता हूं, उस को करके भी दिखा देता हूं। मैं ने आप से कहा था कि मैं एक बार अवश्य आप के महल में आऊंगा, अतएव अपने उसी कथनानुसार प्रेम से आकर्षित होकर मैं यहां तक चला आया हूं॥

कुमार-परंतु यह तुम ने अच्छा नहीं किया॥

चन्द्रभानु सो केवल आप के विचार से, प्रेम पंथ में अच्छे और बुरे का ज्ञान नहीं होता॥

कुमार—चन्द्रभानु! तुम ने हमारे साथ अहसान किया है तो क्या इस के लिये कि तुम इस तरह हमारा अपमान

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करो ? याद रखो, हम तुम्हारा यह अपराध क्षमा नहीं कर सक्ते ॥

चान्द्रभानु-तो आप से क्षमा की प्रार्थना ही कौन करता है ? ॥

यह ढिठाई का जवाब सुन कर कुमार को गुस्सा आ गया, परन्तु फिर भी उसे रोक कर वे बोले "अगर तुम अपनी भलाई चाहते हो तो इसी समय यहां से बाहर चले जाओ" ॥

चन्द्रभानु-मैं ऐसा डरपोंक नहीं हूं जो आप के डराने से भाग जाऊं। महाराज ! जब मैं यहां आया हूं तो अपनी प्रेयसी से मिले बिना टलने वाला नहीं ॥

यह सुन कुमार ने क्रोध से अधीर हो कहा "क्या तू अपनी धृष्टता से बाज न आवेगा ? ॥

चन्द्रभानु-(हंस कर) नहीं मैं अपनी प्रतिज्ञा से विचलित नहीं हो सकता ॥

यह सुन कुमार का क्रोध और बढ़ गया। उसी समय उन्हों ने यह भी देखा कि धरती पर रुधिर की बूंदें

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा वहीं पास ही एक कोने में एक स्त्री की लाश पड़ी है, जिस का शिर अलग कटा हुआ पड़ा है। यह देख वह गरज कर बोले "अरे दुष्ट यह किस की लाश है?" ॥

चन्द्रभानु-महाराज! यह स्त्री इस द्वार पर तलवार लिये बैठी थी, कदाचित् पहरे वाली होगी। मेरे आने पर मुझे भीतर जाने से उस ने रोका, बस क्रोध में आ कर मैं ने उस की तलवार छीन ली, और उस का शिर काट कर इस कोने में खिसका दिया। इस से निश्चिन्त होने पर मैं भीतर जाना ही चाहता था कि आप आ पहुंचे ॥

यह सुन कर कुमार क्रोधान्ध हो गये और तमक कर बोले "अरे हत्यारे! क्या तू ने हमारी चम्पा दासी को मार डाला? अरे तू वृथा स्त्री पर हाथ चला कर क्यों पाप का भागी हुआ?"। ऐसा कह कर और अपना खड्ग निकाल कर वह चन्द्रभानु का सर काटने को लपके ॥

चन्द्रभानु ने देखा कि कुमार अधिक क्रोधान्ध हो रहे हैं, अब इनके इस खड्ग से मैं न बचूंगा। बस यह विचार कर वह इस सफ़ाई और तेज़ी के साथ दौड़ कर यह कहता हुआ उन के चरणों पर गिर पड़ा कि-"महाराज! आज तुम्हें क्या हो गया है, तनक बूझो तो सही मैं कौन हूं?" ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमार ठिठक गये और देखा कि प्यारी इन्दुमती चरणों पर पड़ी है। यह देख कर वह बड़े विस्मित हुये और उसे उठा कर बोले "प्रिये! तुम सहसा यहां कैसे आ गईं और (धरती पर पड़ी हुई तलवार और एक लबादा बता कर) देखो यह तलवार और कुरता फेंक कर चन्द्रभानु कहां चला गया?" ॥

इन्दुमती-प्राण वल्लभ! यहां तो कोई नहीं था, आप की आहट पाकर भीतर से दौड़ कर मैं ही आप के पास चली आई हूं ॥

कुमार—नहीं, यह बात नहीं है, चन्द्रभानु अवश्य यहां था। देखो इस तलवार से उस ने चम्पा को भी मार डाला है, अब भयभीत हो वह भाग कर कहीं छिप गया है, परन्तु अब वह कहीं जा नहीं सकता, हम अवश्य उस का शिर काटेंगे ॥

ऐसा कह कर और कमरे के द्वार में पड़ा हुआ रेशमी आवरण हटा कर वह भीतर, जहां उन के लेटने का पलङ्ग बिछ रहा था, पहुंचे और उन के पीछे कुमारी भी गईं। कमरे में किसी को न देख कर वह बड़े अचम्भित हुये और उसी भांत क्रोध में भरे खड़े रह गये। यह देख

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन्दुमती ने कहा "आप बैठिये तो सही, आज बात क्या है जो आप का क्रोध शांत नहीं होता ?" ॥

कुमार हम चन्द्रभानु को ढूंढ़ रहे हैं, बिना उस का प्राण लिये आज हम शांत न होंगे ॥

कुमारी-चन्द्रभानु कौन है ? और क्यों आप उसे तलाश रहे हैं ? ॥

कुमार—(कुछ सोच कर) चन्द्रभानु इकदम यहां से लोप हो गया। आह प्यारी, अब हमें मालूम हुआ कि उस के प्राण बचाने को तुम्हीं ने उसे कहीं छिपा दिया है। अब जल्द बताव वह कहां है ? ऐसी दया ठीक नहीं ॥

कुमारी-मैं तो कह चुकी कि यहां कोई था ही नहीं; फिर मैं ने किसे छिपाया !!!

कुमार-अच्छा, अब तुम भी निछल नहीं हो। जल्द उसे बताओ कि तुम दोनों को साथ ही साथ दण्ड दिया जावे ॥

कुमारी-प्राणेश ! आज आप को क्या हुआ !!! आप का यह रुक्मिणी परिहास मुझे नहीं भाता।

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमार–(सकोप) यह रुक्मिणी परिहास नहीं है, वरन सच्ची बात है ॥

कुमार का यह वाक्य समाप्त होतेही बड़े ज़ोर से "खिल २" हंसने की आवाज़ आई, और साथ ही यह भी किसी ने कहा "हां, हां, यह बात ज़रूर सच्ची है" ॥

यह सुन कुमार ने भीतर बाहर चारों ओर देखा पर कोई दिखाई नहीं दिया। तब उन्हों ने भी पुकार कर कहा "तू कौन है ?" ॥

तब फिर आवाज़ आई "तुम मुझ पर क्यों वृथा क्रोध प्रकाश करते हो, मैं चन्द्रभानु नहीं हूं जो तुम्हें देख कर डर के मारे भाग जाऊंगा। क्या तुम मुझ को इतने जल्द भूल गये !!! कुमार ! मैं वही देवता हूं जो तुम्हें कई बार अपनी परीक्षा दे चुका हूं" ॥

कुमार–(कुछ सहम कर) हां कहिये देवता जी ! चन्द्रभानु यहां कैसे और क्यों आया था और अब वह कहां चला गया है ?

देवता--तुम भली भांति जान गये थे, और मैंने भी तुम से कह दिया था कि कुमारी पर उसका गहरा प्रेम

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। अतएव इन्हीं के पास वह आया था, और अब तुम्हें वह दिखाई नहीं देता तो इन्हीं ने कहीं उसे छिपा दिया होगा॥

कुमार–(कुमारी से) क्यों अब तो तुम्हारा भेद खुल गया न? देखो, देवता जी भी इस की साक्षी देते हैं कि चन्द्रभानु तुम्हारे पास आया था, अब तुम जल्द बताव तुम ने उस को कहां छिपा दिया है?

कुमारी–हृदयेश! मैं चन्द्रभानु को पहिचानती भी नहीं और मैं सत्य कहती हूं कि मेरे पास यहां कोई नहीं आया था॥

कुमार–नहीं, तुम्हारा कहना बिलकुल झूठ है, अब हम तुम्हारी बात नहीं मान सकते। ओफ़! तुमने हमारे कुल को कलङ्कित कर दिया, तुम्हारी जैसी नारी का मुख देखने से भी पाप है। अतएव तुम को इस संसार से अब उठा देना ही अच्छा है॥

ऐसा कह कर वे उन की ओर बढ़े और कुमारी नीची गर्दन कर रह गई कि सहसा किसी ने कहा "ख़बरदार!! कुमारी पर हाथ न चलाना नहीं तो पीछे बहुत पछताना पड़ेगा"॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमार यह सुन रुक गये और बोले "तुम रोकने वाले कौन हो ?"

आवाज़–मैं वही देवता हूं ॥

कुमार–(क्रोध से) देवता जी ? पहिले तुमने वैसा कहा था और अब दण्ड देने से हमें रोकते हो ॥ बड़े प्रपंची मालूम होते हो !!!

देवता–यह सब हाल तुम कुमारी से स्वयं पूंछ लो, हम तो प्रपंची हैं ॥

कुमार–अच्छा, प्रिये ! अब तुम्हीं बताओ कि कहां तक तुम इस में निर्दोष हो । ओफ़ ! हमें इतना क्रोध आ गया कि हम सत्यासत्य का कुछ भी विचार न कर सके !!!

कुमारी–(हाथ जोड़ कर) मेरी इच्छा कदापि नहीं थी कि वह भेद खोला जाय, और कदाचित् मैं जन्म पर्य्यन्त भी उसे न कहती, परन्तु आज आप के आग्रह के कारण विवश हो वह भेद कहना ही पड़ता है ॥

कुमार–अरे, कुछ कहो भी तो, इस भूमिका को रहने दो ॥

"प्राणनाथ! अब मैं चन्द्रभानु का भेद आप को बताती

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हूं, आप चित्त लगा कर सावधानी से सुनिये" ऐसा कह कुमारी ने इस भांत कहना आरम्भ किया :—

"प्यारे ! जब मेरे भाई को घर से गये हुये तीन चार रोज़ हो गये और वह न लौटे तो मैं उन के लिये बड़ी चिन्तित हुई। मैंने उन का हाल जानने के लिये बहुत कुछ प्रयत्न किया परन्तु सब निष्फल हुआ" ॥

कुमार—(झिड़क कर) हम यह नहीं पूंछते, वरन् हम तो चन्द्रभानु का हाल सुनना चाहते हैं ॥

कुमारी—आप सुनते जाइये, आगे चल कर चन्द्रभानु का हाल आप पर स्वयं प्रगट हो जायगा। अच्छा, उसी अवसर में भैया बलबीर सिंह एक दिन मेरे पास आये और राजा माधव सिंह के यहां भाई के क़ैद हो जाने का हाल कहा, और जिस कारण से वह क़ैद किये गये थे, वह भी मुझे बताया। यह सुन कर कितना दुःख मुझे हुआ सो मैं कह नहीं सकती। इस पर उन्हों ने आप के द्वारा जो कार्य्यवाही हुई थी वह सुनाई, और यह भी कहा कि अब लड़ कर उन्हें छुड़ाने का विचार है। प्रान नाथ ! मैं सच कहती हूं कि जब से मैं ने अपने चचा का वह कलुषित विचार सुना तब से मुझे वह और उन का घर काल रूप

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिखाई देने लगा। और क्या आप को याद है कि जब एक दफ़े आप वीरपुर गये थे और मैं अपने भाई के साथ वहीं थी ?

कुमार–हां, हां, यह तो हमें बखूबी याद है, फिर इस के आगे क्या हुआ सो कहो॥

कुमारी–यही हुआ कि आप को देख कर मैं अपना मन खो बैठी॥

कुमार–हम तो तुम्हें देखते ही तुम्हारे हो गये थे। तो निश्चय हुआ कि प्रेमांकुर एक साथ ही दो हृदयों पर उगता है, अकेले एक पर कभी नहीं॥

कुमारी–तीन चार रोज़ तो दर्शन होते रहने से बड़े आनन्द से कटे और फिर जो कुछ हुआ, वह मैं ने ही जाना। जब मैं ने आप का युद्ध में जाना सुना, तो एक तो भाई को छुड़ाने का उपाय करने के बिचार से दूसरे आप के दर्शनों की प्रबल उत्कण्ठा से मैं ने वह काल-स्वरूप घर रात के समय छोड़ दिया और एक पत्र इस ढङ्ग का लिख कर वहीं डाल दिया कि 'मैं एक बहुत ही आवश्यकीय काम से भैया बलबीर सिंह के साथ बीरपुर जाती हूं और जल्द लौट आऊंगी, आप मेरे लिये कुछ चिन्ता न कीजिये'। बलबीर सिंह के मिलने पर कृष्णगढ़

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का रास्ता मैं ने उन से पूंछ लिया था। अतएव वहां से चल कर मैं उस समय कृष्णगढ़ पहुंची जब आप ने उस पर चढ़ाई कर दी थी और वहां नवीन सेना की भरती फुर्ती से हो रही थी। निदान मैं भी वहां सेना में भरती हो गई। मेरी शस्त्र विद्या पर मोहित हो कर माधव सिंह ने पांच सौ सवारों का नायक मुझे बना दिया। दोही चार रोज़ में सेनापति मेरा काम देख कर इतना मुग्ध हो गया कि उस ने मुझे सदैव अपने पास ही रहने को कह दिया। निस दिन उस के पास रहने से और विशेष कर उस की कृपा होने से मुझे इस क़िले की बहुत सी गुप्त बातें मालूम हुईं जिन्हैं माधव सिंह भी नहीं जानते थे। कारण इस का यह है कि यह क़िला माधव सिंह के पिता का बनवाया हुआ है। सेनापति दल थम्भन सिंह पर उन की बड़ी कृपा थी इस से उनके साथ उस ने भी वे सब बातें जान ली थीं। जब माधव सिंह यहां के राजा हुये, इन को नितान्त अयोग्य जान सेनापति ने वे भेद इन्हैं नहीं बताये। परन्तु मेरे ऊपर प्रसन्न हो उसने स्वयं वह सब मुझे बतला व समझा दिये और जिन्हैं मैं आप को भी किसी समय दिखाऊंगी। प्यारे! क्या यह बात भी आप को बताना पड़ेगी कि घर से निकलने पर मैं ने पुरुष का

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भेष बना लिया था और नाम अपना नवल सिंह रक्खा था ॥

चौदहवां परिच्छेद

प्रिये ! तुम धन्य हो ॥

हम अपने पाठकों से विनय पूर्वक अनुरोध करते हैं कि इन्दुमती की कथा से वह अपनी शंकाओं का समाधान करते जायें और साथही इस बात पर भी ध्यान रक्खें कि कुमारी ने कोई बात कुमार से छिपाई तो नहीं। कुमारी यों कहती गई :—

"तो हां, सुनो प्रीतम ! जब आप उस रोज़ इस क़िले के घेरे के समय संध्या को युद्धभूमि में आये तब मैं ऊपर क़िले के खड़ी हुई आप की छबि निरख रही थी, और कुंअर बलबीर सिंह के पास मैं ने जो एक तीर फेंका था और जिस की नोक में इस आशय का पत्र बंधा हुआ था कि—आप इस समय अपनी सेना हटा लीजिये क्योंकि यह किला इस भांत आप किसी तरह नहीं ले सक्के, परन्तु आज रात को किले का फाटक खुलैगा सो आप रात में फाटक के बाहर छिप रहिये; बस जिस समय आप को 'होशयार रहना' की आवाज़ सुनाई दे, आप झट दम

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से क़िले में घुस आइये। मैं परमेश्वर की सौगन्ध कर कहता हूं कि यहां आप के साथ कोई छल न होगा, मैं शत्रुओं के बीच में रहने पर भी आप का मित्र हूं, जिस का भेद आप पर पीछे प्रगट होगा। अगर आप को क़िला विजय करना है तो मेरी बात मानिये, नहीं तो यों हीं क़िले से सर टकराते रहिये-आपने पाया होगा क्योंकि उसी के अनुसार आप ने तुरन्त सेना हटा ली थी" ॥

कुमार—हां ठीक है। तो क्या प्रिये! वह पत्र तुम्हारे ही हाथ का लिखा हुआ था ॥ किन्तु उस में तो नीचे चन्द्रभानु लिखा था, और तुम ने तो अभी अपना नाम नवल सिंह बताया न ॥।

कुमारी-हां स्वामी! मेरा नाम नवल सिंह था जैसा कि मैं ने अभी आप को ऊपर बताया, परन्तु उस पत्र में मैं ने चन्द्रभानु लिख दिया था कि यदि उसे कोई शत्रु भी पाले या देख ले तो वह कुछ समझ न सके ॥

कदाचित् पाठकों को इस बात की शंका हो कि नवल-सिंह को राय सिंह के पास भेजने का परामर्श तो रात के समय दर्बार में हुआ था सो यह आगे की बात उसने सांझ ही को कैसे पत्र में लिख कर वाण द्वारा बलबीर-

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिंह के पास भेजी ? उन्हैं मालूम ही है कि सेनापति और नवल सिंह का अधिक स्नेह था, इस लिये सेना पति ने यह बात उसे पहिले ही बता दी थी ॥

अतएव यह उपरोक्त बात सुन कर कुमार ने चौंक कर कहा "क्या तुम्हीं चन्द्रभानु हो !!! तो प्रिये! तुम्हारी अब सब कार्य्यवाही प्रगट हो गई" ॥

कुमारी—पूरा हाल हो चुकने पर यदि मेरे धड़ पर शिर बना रहै तो मैं ग़नीमत समझूंगी, अभी आप सुनते जाइये। अच्छा, तो यह बहुत उत्तम हुआ कि जो आप ने उस पत्र के अनुसार अपनी सेना हटा ली और फाटक के खुलते ही ठीक समय पर सेना सहित आप आ पहुंचे जहां मैं भी आप को मिली और चन्द्रभानु कह कर अपना परिचय दिया। यहां इतना और समझ लीजिये कि उस समय मैंने अपना नाम बदलने के साथ २ अपनी पोशाक भी बदल डाली थी, जिस से किले वालों ने भी मुझे नहीं पहिचाना। निदान आप से कुछ बात चीत कर मैं सीधी कारागार में पहुंची और भैया गजेन्द्र सिंह तथा वृज किशोर दोनों को वहां से छोड़ दिया ॥

कुमार—किन्तु गजेन्द्र सिंह ने कहा था कि मुझे तो किसी देवता ने छुड़ाया था ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमारी—हां, वह यों हुआ, कि मैं ने यही नाम कह कर अपना परिचय उन्हें दिया था, क्योंकि मैं उन से ज़ाहिर नहीं होना चाहती थी। अस्तु, मैं उन्हें मुक्त कर और दो तलवारें उन के पास डाल कर एक गुप्त मार्ग से तुरन्त चली गई, इस लिये उन्हों ने भी मुझ को देवता समझा। तो अब सुनिये, प्राणाधार! वहां से लौटने पर मैं उस समय आप के पास पहुंची जिस समय सेनापति ने आप पर बर्छा छोड़ा था। आप के प्रेम से उस समय मैं निरा अनभिज्ञ थी, और न यह आशा मुझे थी कि आप मुझे अपनी दासी बनावेंगे। बस, मैं ने निराशा के समुद्र में गोता लगा के बर्छे को इस अभिप्राय से अपने ऊपर लिया कि प्राण छोड़ दूं परन्तु मेरा वह मनोर्थ पूर्ण न हुआ और मैं केवल घायल ही हुई। आप ने मेरे हाथ की भली भांत औषधि कराई, जिस से मैं बहुत शीघ्र अच्छी हो गई। उस रोज जब अपने ही बारे में मैं ने आप से बात चीत की तब मुझे मालूम हुआ कि आप मुझे बरना चाहते हैं, तथापि आप की पूर्ण परीक्षा लेने के अभिप्राय से, अपनी मूर्त्ति दिखा मैं ने स्वयं अपने को अपना प्रेमी बताया। जितनी बारमैं अपने को अपना प्रेमी बताती थी और आप उस का विरोध करते थे

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उतना ही अधिक आनन्द मुझे होता था ॥

कुमार–हां प्रिये ! तनक अब तो हमें वह तसवीर बताव । वाह, क्याही अच्छी बनी है !!!

यह सुन कुमारी ने अपनी पोशाक के नीचे से निकाल कर एक तस्वीर दी, जिसे देख कर वह बड़े विस्मित हुये और बोले "प्यारी ! यह तो हमारी तस्वीर है !!!" इस पर कुमारी ने उसे अपने हाथ में लिया और फिर उन्हें सोंप कर कहा "आप ज़रा ध्यान से इसे देखिये" ॥

अब जो कुमार ने लेकर उसे देखा, तो वह तसवीर कुमारी की निकली । उन्हें बड़ाही आश्चर्य्य हुआ कि यह बात क्या है ॥ इस कारण पूछा "प्यारी इस तस्वीर में क्या भेद है सो तुम हमें समझाव" ॥

यह सुन कुमारी ने उस का पेंच उन्हें बताया । एक ही कांच के ऊपर दो मूर्त्तियां बनी थीं, यानी एक तरफ़ कुमारी और दूसरी तरफ़ कुमार की, और उस की चोटी पर कमानीदार सोने का एक पटिया लगा था । नीचे से दबाने पर वह पल्ला ऊपर को जाता था और वहां से कमानी उसे बड़े ज़ोर से दूसरी तरफ़ को फेंक देती थी वहां जा कर वह चौखटे में बैठ जाता था और जिस से

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वप्न में भी गुमान नहीं होता था कि इस के नीचे कोई तस्वीर है। इसी भांति उधर की मूर्त्ति को भी ढांक देता था ॥

निदान इस तस्वीर की कारीगरी को देख कर कुमार बहुत प्रसन्न हुये और बोले "तुम्हारी सभी बातें कौतूहल मय हैं" ॥

इस पर कुमारी ने हंस कर कहा "तो सुनिये कि इस ढङ्ग से आप का प्रेम तो मैं ने जान लिया, परन्तु मेरे भाई इस से अनभिज्ञ थे इस कारण देवता बन कर अपना और आप का प्रेम प्रगट कर उनका अभिप्राय भी मैं ने समझ लिया और तब मुझ को इतनी खुशी हुई कि मैं फूली नहीं समाती थी" ॥

कुमार--पर हां तुम यह तो बताओ कि जब तुम देवता बनी हम लोगों से बात चीत कर रही थीं तब तुम्हारी खाट पर वहां कौन लेटा हुआ था ?

कुमारी--प्यारे ! ज्योंही मैं ने वह बात कही मैं ने सोचा कि बलवीर सिंह वहां ज़रूर जायंगे। अस्तु, मैं नीचे २ जाकर अपने पलङ्ग पर लेट खुर्राटे लेने लगी। इस के बाद वह मेरी कोठरी में पहुंचे, और मुझे सोता देख लौट कर आप के पास आये। उन के चले जाने के पश्चात्

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मैं पुनः कोठरी से आकर अपनी जगह पर खड़ी हो गई और आप लोगों से बात करने लगी ॥

कुमार—वाह, यह तुमने खूब चालाकी की थी, अस्तु अब हम जान गये कि वह देवता भी तुम्हीं थीं। परन्तु यह तो बताओ, बलबीर सिंह के यहां से जो सेवक पत्र लेकर आया था उस का नाम तुमने कैसे जाना ?

कुमारी—जब बलबीर सिंह मेरे पास भाई का वृत्तान्त सुनाने गये थे तब उन्हों ने मुझे उस का नाम बताया था ॥

कुमार—किन्तु उसका नाम बताने से हम सब ने निश्चय जान लिया था कि यह अवश्य कोई सर्वव्यापी देवता हैं ॥

कुमारी—(हंस कर) हां प्रीतम ! फिर इस के आगे जो हुआ सो सुनिये कि सवेरे कुंअर बलबीर सिंह के तथा आप के पिता आये। उन के सन्मुख जाना अनुचित समझ वह पत्र मैं ने अपनी खाट पर डाल दिया, जिस में सब मुझे गया हुआ समझें ॥

कुमार—हां, हमने तो जब तक तुम्हारा दूसरा पत्र नहीं पा लिया था तुम्हें गया हुआ ही जाना था, परन्तु पिता जी तुम से मिलने को बहुत उत्सुक थे ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमारी—इस का कारण तो मैं ने आप को ऊपर बताया न; परन्तु जैसा कि मैं ने अपने दूसरे पत्र में लिखा था मैं गई नहीं थी, और छिप कर सब कार्य्यवाही देख रही थी। दर्बार की बात चीत व माधव सिंह का जाना, यह सब मुझे रत्ती २ मालूम हैं। फिर इस के पश्चात् जब मैं ने सुना कि मेरे भाई घर जाते हैं, तो मैं ने उन से प्रथम ही घर पहुंच जाना उत्तम समझा, अस्तु मैं वह दूसरा पत्र आप के पलङ्ग पर छोड़ कर चुप के यहां से निकल गई और अपने घर पहुंच कर चाचा से कह दिया कि बलबीर सिंह के छोटे भाई सावंत सिंह मुझे यहां तक भेज गये हैं, जल्दी के मारे वह आप से नहीं मिल सके॥

कुमार—परंतु, प्रिये! जब मेरे प्रेम को तुम ने जान लिया था, तो फिर भी तुम ने उस पत्र का आशय वैसा क्यों रक्खा था?

कुमारी—केवल यह जानने को कि आप का मुझ पर कितना प्रेम है, और आप उस से विचलित तो नहीं होते हैं॥

कुमार—तो हां, जब तुम घर पहुंचीं, चौधरी बिहारी-सिंह ने क्या कहा?॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमार—इस लड़ाई का हाल सुन कर वह इतना डर गये थे कि मुझ से उन्हों ने कुछ भी नहीं पूछा। और माधव सिंह के विरक्त हो जाने से वह रुपया भी उन्हें पच गया था, जिस के लिये वह स्वांग रचा गया था। इस कारण बड़े प्रेम से उन्हों ने मुझे रक्खा। फिर इसके उपरांत जिस भांत मुझ अनाथिनी को आप व्याह कर यहां ले आये वह तो सब आप को मालूम ही है॥

कुमार—प्यारी! तुम धन्य हो॥ तुम ने बड़े साहस का काम किया। और केवल तुम्हारे ही प्रयत्न से हमने उस लड़ाई को जीता, जो वास्तव में तुम्हारा ही जीतना कहा जा सकता है॥

कुमारी—नहीं प्यारे! मुझ में इतनी सामर्थ कहां!! यह तो सब आप ही के पुण्य प्रताप का फल तथा आप ही के बांयें हाथ का कर्त्तब है॥

कुमार—(हंस कर) परन्तु सब तरह की निश्चिंतता होने के उपरान्त आज फिर तुमने चन्द्रभानु का रूप बन कर क्यों यह नाटक खेला?

कुमारी—केवल यह जानने के लिये कि चन्द्रभानु का आना देख आप कितना क्रोध दिखाते हैं और उस दशा में आप धैर्य्य और विवेक को तो नहीं गवां देते॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमार-प्यारी ! तुम बड़ी विचित्र हो !! तुम्हारे चातुर्य्य की प्रशंसा हम किसी भांत नहीं कर सक्ते। किन्तु सुनो तो बहु रूपिनी जी। हम क्या, कोई भी पुरुष अपनी स्त्री के पास दूसरे मनुष्य को देख कर अपने होश हवास ठिकाने नहीं रख सक्ता, क्लीव भी कुपित हो जाता है ॥

कुमारी—यह तो मैं जानती हूं ॥

कुमार—(कुछ सोच कर) और तो प्यारी ! जो तुमने किया सो अच्छा ही किया, जिसे सुनकर हम बहुत प्रसन्न हुये, परन्तु तुमने चन्द्रभानु के भेष में अपनी दासी चम्पा को क्यों मार डाला ? अथवा उस में भी कोई भेद है क्या ?

इस पर कुमारी हंस पड़ीं और बोलीं "चलिये, मैं चम्पा की लाश आप को दिखाऊं" ॥

इस के अनन्तर दोनों बाहर आये और कुमार ने पास से उस लाश को देखा, तो मालूम हुआ कि वह मोम की बनी हुई है, परन्तु कपड़े लत्ते सब चम्पा के हैं। यह देख कर कुमार बहुत हंसे और प्रेम से गद्गद होकर उन्होंने कहा "वाह तुमने आज हमें पूरा धोखा दिया। और तो और हम यह भी न जान सके कि यह कैसी लाश है, अस्तु, अब तो बताव, असली चम्पा कहां है ?"

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमारी भला, यह मैं क्या जानूं ? वह कहीं चली गई होगी ॥

कुमार-प्यारी ! हमें यह तो मालूम हो गया कि प्रथम तुम्हीं चन्द्रभानु और तुम्हीं देवता बन कर हमारे पास आया करती थीं, परन्तु अब इस समय यह कौन देवता के रूप में बोल रहा है ? क्योंकि अब तुम तो हमारे सामने ही मौजूद हो ॥

"भला यह बात मैं कैसे बता सकती हूं यह तो देवता ही जाने" ऐसा कह कर कुमारी ने ज़ोर से कहा "देवता जी ! आप प्रगट होकर महाराज को दर्शन दीजि ." ॥

यह बात पूरी भी न होने पाई थी कि एक खटाके की आवाज़ आई, और कमरे में से एक व्यक्ति निकल कर कुमार के पैरों पर गिर पड़ा, तब उसे चीन्ह कर उन्होंने कहा "अरे, यह तो चम्पा है !!!"

इस पर तीनों हँसते २ लोट गये और जब कुछ सावधान हुये तब कुमार ने कहा "क्यों चम्पा ! तुम्हें हमारे साथ आज यह छल करने का कैसे साहस हुआ ?"

चम्पा-महाराज ! मेरी क्या सामर्थ है कि मैं आप के साथ कुछ छल कर सकूं; यह सब कुमारी जी की आज्ञा-

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नुसार किया गया है। यदि इस में मुझ से कुछ अपराध हो गया हो तो क्षमा किया जावे" ॥

इसके उपरांत सब फिर कमरे में गये और वहां बैठने के अनन्तर कुमारी पर खड्ग उठाते समय कुमार को सावधान करने के उपलक्ष में, कुमार ने सोने की एक हीरा जड़ी अंगूठी, और कुमारी ने एक जड़ाऊ चम्पाकली पारतोषिक स्वरूप चम्पा को दीं। जब कुमारी कृष्णगढ़ आईं चम्पा उनके साथ सेवा को नियत की गई थी। चम्पा बड़ी चपल और चतुर स्त्री थी, यह देख कर कुमारी ने सब हाल उसे बताया, और यह आखिरी दिल्लगी भी उसी के द्वारा कराई।

निदान कुमारी उठीं, और दीवार में जो एक शेर का मुंह बना हुआ था उस की जुबान पकड़ कर बाहर खींच दी। जुबान खिंचते ही एक बड़े पटाखे की आवाज़ हुई, और द्वार प्रगट हो गया। प्रथम स्वप्न में भी अनुमान नहीं होसक्ता था कि वहां द्वार होगा। अतएव एक जलती मोमबत्ती लेकर चम्पा उसमें घुसी और उसके पीछे कुमार तथा कुमारी भी पधारे। भीतर जाने पर कुमारी ने वहां भी एक शेर का मुंह बताया, जिस की बांईं आंख को अंगुली से दबाते ही द्वार बन्द हो गया ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निदान इसी भांत घूम फिर कर कुमारी ने समस्त सुरङ्ग कुमार को दिखायी और वहां कलों व पेंचों के खोलने तथा बन्द करने की सब तरकीब उन्हें समझा दी। कुमार ने देखा कि नीचे तमाम किला पोला है और वहां सैकड़ों कोठा और कोठरियां बहुत ही सुन्दर बनी हुई हैं और क़िले के ऊपर ऐसा कोई कमरा नहीं है जहां की जाने के लिये नीचे से रास्ता न हो। यह सब दिखाते हुये कुमारी ने वह जगह भी उन्हें बताई, जहां से वह गजेन्द्र सिंह व वृजकिशोर को कुड़ा कर गायब हो गई थीं तथा बारहदरी में देवता बन कर आई थीं, और कुमार के पलङ्ग पर पत्र डाल गई थीं। किले के नीचे की बनावट और कुमारी का सब हाल जान कर और उस रमणीक स्थान में पहुंच कर उस समय कुमार इतने मुग्ध हुये कि चम्पा का उन्हें कुछ भी ध्यान नहीं रहा, और वह बार २ कुमारी का अधरामृत पान करने में तन्मय हुये॥

इस पर कुमारी ने कटाक्ष वाण मार कर कहा "ऊंह! यह आप क्या करते हैं? कहीं चम्पा देखलेगी तो क्या कहेगी? फिर, फिर आप नहीं मानते हैं, देखिये मैं भी कुछ करने लगूंगी"॥

यह सुन कर वे इतने आतुर हुये कि उन को हृदय से

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लगा बोलें "कहो तो प्यारी! तुम क्या करने लगोगी ?"

यह सुन कुमारी ने आनन्द में मगन हो बड़े प्रेम से अपना बदला चुका लिया ॥

यह देख कुमार अपने मन को संभाल न सके और कस कर उन्हें हृदय से लगा लिया, परन्तु चंचला कुमारी झटक कर उन से दूर हो गई और बोलीं "प्यारे! आप की यह बात मुझे अच्छी नहीं लगती" ॥

कुमार—अच्छा तो आज से हम अब वही काम करेंगे जो तुम्हें अच्छा लगेगा ॥

निदान वहां की सब जगह कुमार देखही चुके थे इस कारण सब जन वहां से ऊपर आये और कमरे में पहुंच कर चम्पा तो द्वार के बाहर पहरे पर बैठ गई, और कुमार तथा कुमारी पलङ्ग पर जा कर निद्रा के वशीभूत हुये। रात उस समय लगभग दो घड़ी के शेष थी ॥

सवेरे उठ कर कुमार ने बलबीर सिंह को यह सब कथा सुनाई जिसे सुन कर वह बड़े अचम्भित हुये। गजेन्द्र सिंह भी चन्द्र नगर से बुलाये गये और जब उन्हों ने आकर कुमारी के साहस-कार्य्य का हाल सुना, तो पहिले तो उन्हों ने विश्वास भी नहीं किया, परन्तु जब कई बार उस

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से कहा गया, तब कहीं बड़ी मुश्किल से उन्हों ने उसे माना। और यह जान कर उन के हर्ष की सीमा न रही कि "मुझे बन्धनों से छुड़ाने वाली एक मात्र मेरी बहिन ही है, देवता कोई नहीं"। अतएव ऐसी बहिन होने से अपने को उन्हों ने कृत कृत्य माना॥

एक दिन बलबीर सिंह तथा गजेन्द्र सिंह को लेकर कुमार किले के नीचे गये, और वहां का वृत्तांत कहते हुये समस्त गुप्तपुरी उन्हें दिखाई, जिसे पुस्तक का आकार बढ़ जाने के भय से तथा इस कारण से कि हमारे जो पाठक उसे देखना चाहेंगे, वे कृष्ण गढ़ जा कर स्वयँ देख आयेंगे, यहां हम लिखना उचित नहीं समझते॥

बलबीर सिंह ने एक दिन अपने पिता तथा राजा जगत सिंह से भी यह वृत्तान्त कहा, जिसे सुन उन्हों ने भी वहां की सैर करने की इच्छा प्रगट की, और देखा, तथा इन्दुमती के साहस, धैर्य, पराक्रम, कर्त्तव्य और प्रेम की इतनी प्रशंसा की कि जिसे लिखने में हम नितान्त असमर्थ हैं॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारी इच्छा कदापि नहीं थी कि अब आगे यह उपन्यास लिखा जावे, परन्तु थोड़ा सा वृत्तान्त रह जाने से विवश हो यह उपसंहार स्वरूप पुछल्ला लगा कर हम आप को बताते हैं कि चौधरी बिहारी सिंह की जो दो बेटियां थीं उन में से कमला का व्याह बलबीर सिंह के साथ तथा चञ्चला का वृजकिशोर के साथ हुआ। इस के उपरांत गजेन्द्र सिंह का व्याह भी एक उच्चवंशीय क्षत्रिय कुमारी से हुआ जो अत्यन्त रूपवती थी॥

यह तीनों नव विवाहिता कुमारियां अत्यन्त सुन्दरी थीं, परंतु इन सब से इन्दुमती की छटा निराली थी॥

व्याह हो चुकने पर राजा रुद्र प्रताप सिंह पुत्र वधू समेत अपने राज्य वीरपुर को सिधारे, और गजेन्द्र सिंह भी अपनी पत्नी सहित अपनी ज़मींदारी को बिदा हुये। इस अवसर में चौधरी बिहारी सिंह ने गजेन्द्र सिंह की

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्य्यपटुता देख, तथा अपने यहां कोई पुत्र न रहने से, अपने हिस्से सहित समस्त ज़मीन्दारी का भार उन्हीं सौंप दिया ॥

इन सब के बिदा होने के अनन्तर राजा जगत सिंह ने भी सेना सहित शंकरगढ़ की ओर कूंच किया, परन्तु कुमार कृष्णगढ़ में ही रहे, क्योंकि एक तो वहां के राज्य-प्रबन्ध को कोई था नहीं दूसरे वहां के किले की बनावट इन्हें बहुत ही भाई थी अतएव उन्हों ने वहीं रहना पसन्द किया और वृजकिशोर तथा राधेलाल आदि मित्रों को भी वहीं रक्खा। सेनापति रिपुदमन सिंह को कृष्णगढ़ के मंत्री का काम सौंपा गया ॥

बलबीर सिंह व गजेन्द सिंह सुख से अपने २ घर कालयापन करते हुये आनन्द मनाते थे, और उन का यह नियम था कि महीने भर में एक बार अवश्य कृष्णगढ़ दुर्ग में सब इकट्ठा होकर नाना भांत के आमोद प्रमोद करते थे इस से इनकी प्रीति नित प्रत दृढ़ होती गई ॥

विधाता की यह महिमा देखिये, कि सूर्य्यप्रताप सिंह, बलबीर सिंह गजेन्द्र सिंह व वृजकिशोर, चारों के एक

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिन एक ही सायत में एक २ पुत्र हुआ जिस से उन सब को बड़ा हर्ष हुआ। नवीन राजा के सुप्रबन्ध ने कृष्णगढ़ की त्रसित प्रजा का दुःख समूल नष्ट कर दिया और घर घर में आनन्द फैल गया॥

॥ इति ॥

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और लीजिये

अत्यन्त मनोरंजक उपन्यास

१. गुप्त जीवन अथवा हरित प्राण ... ॥)
२. बन देवी ... ... ॥)

छप रहे हैं, बहुत जल्द तय्यार होंगे। जल्द आर्डर आने से डाक महसूल न देना पड़ेगा॥

स्वामी लबाकटानन्द कृत मन बहलाने वाली, हंसी दिल्लगी की और देश हितैषी पुस्तकें :—

१. कलियुग वृत्तान्तमाला ... ... -)
२. विवेक दर्पण लावनी ... ... -)
३. मद्य मांस दर्पण ... ... -)
४. बल्लभ कुल चरित्र दर्पण ... ... १)

और भी हर किस्म की पुस्तकें हमारे यहां मिलती हैं॥

मिलने का पता—

कुंवर परबत सिंह,
मुट्ठी गंज,
इलाहाबाद

Bharat Dharma Maha Mandal, Varanasi